

लेखक परिचयः

नाम : रबीन्द्र नारायण मिश्र

पिताक नाम : स्वर्गीय सूर्य नारायण मिश्र

माताक नाम : स्वर्गीया दयाकाशी देवी

बएस : ७० वर्ष

पैतृक ग्राम : अढ़ेर डीह

मातृक : सिन्धिआ ड्योढ़ी

वृति : भारत सरकारक उप सचिव (सेवानिवृत्त)/
स्पेशल मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट, दिल्ली(सेवानिवृत्त)

शिक्षा : चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालयसँ बी.एस-सी. भौतिक विज्ञानमे प्रतिष्ठा :
दिल्ली विश्वविद्यालयसँ विधि स्नातक

प्रकाशित कृति :

मैथिलीमे:-

१. 'भोरसँ साँझ धरि' (आत्म कथा) २. 'प्रसंगवश' (निबंध) ३. 'स्वर्ग एतहि अछि' (यात्रा प्रसंग) ४. 'फसाद' (कथा संग्रह) ५. 'नमस्तस्यै' (उपन्यास) ६. विविध प्रसंग (निबंध) ७.महराज(उपन्यास) ८.लजकोटर(उपन्यास) ९.सीमाक ओहि पार(उपन्यास)१०.समाधान(निबंध संग्रह) ११.मातृभूमि(उपन्यास) १२.स्वप्नलोक(उपन्यास) १३.शंखनाद(उपन्यास) १४.इएह थिक जीवन(संस्मरण) १५.ढहैत देबाल(उपन्यास) १६.पाथेय(संस्मरण) १७.हम आबि रहल छी(उपन्यास) १८.प्रलयक परात(उपन्यास) १९.बीति गेल समय(उपन्यास) २०.प्रतिबिम्ब(उपन्यास) २१. बदलि रहल अछि सभकिछु(उपन्यास)२२.राष्ट्र मंदिर(उपन्यास) २३.संयोग(कथा संग्रह) २४.नाचि रहल छलि वसुधा(उपन्यास)२५.दीप जरैत रहए(उपन्यास)

In English: -

1.The Lost House (Collection of short stories)

2.Life is an art

हिन्दी में

१.न्याय की गुहार(उपन्यास)

इमेल : mishrarn@gmail.com ब्लोग : mishrarn.blogspot.com

Mobile -9968502767

एमजोनक लेखक पृष्ठ : amazon.com/author/rnmishra

9 789353 213994

महराज/उपन्यास

रबीन्द्र नारायण मिश्र

महराज

उपन्यास



रबीन्द्र नारायण मिश्र

महराज

ई उपन्यास कोनो व्यक्ति विशेषक जीवनपर आधारित नहि अछि। एहिमे लेल गेल नाम, ठाम ओ कथानक सभ काल्पनिक थिक। तथापि जौँ ककरो नाम मिलि रहल अछि तँ एकरा एकटा मात्र संयोग बूझल जाए।

महराज

उपन्यास

रबीन्द्र नारायण मिश्र

ISBN: 978-93-5321-395-4

दाम : 400 रूपया

पहिल संस्करण : 2018

लेखक एवम् प्रकाशक : रबीन्द्र नारायण मिश्र
House No : C 42, NSG SAS Ltd, Black Cat Enclave
Pocket No : 6 Builders Area Greater Noida
District: Gautam Buddha Nagar
UP : 201315
Phone: 01202343563 M-9968502767

महराज
A Maithili Novel by Shri. Rabindra Narayan Mishra.

समर्पण

समस्त अड़ेर डीह (मधुबनी) ग्रामवासीकेँ सप्रेम समर्पित

दू आखर

हम अपन पत्नी श्रीमती आशा मिश्रक आभारी छी, जे एहि उपन्यासक पाण्डुलीपिकेँ रचना होइत काल अनेको रचनात्मक सुझाव देलीह जाहिसँ उपन्यासमे गुणात्मक सुधार भेल। एहि हेतु ओ प्रशंसाक पात्र छथि। हमर विद्वान मित्र डाक्टर विनय कुमार चौधरी(पिंडारुछ)क अमूल्य सुझाव समय-समय पर भेटैत रहल अछि। हमर अनन्य मित्र श्री ओम प्रकाश सपरा,श्री मदन मोहन सिन्हा, एवम् श्री संजीव सिन्हा हमरा लिखबाक हेतु निरंतर उत्साहित करैत रहलाह। हिनकासभकेँ हार्दिक धन्यवाद।

आशा अछि जे पाठक लोकनिकेँ ई पुस्तक पसिंद पड़तनि।

रबीन्द्र नारायण मिश्र

ग्रेटर नोएडा

11 सितम्बर 2018

महराज

१

छोट सन गाम पुबारिटोलमे कमला आओर लखनाक सुखी संपन्न परिवार छल। लखना दस बिघा मड़ौसी जमीन जोतैत छलाह। लखनाक एक पैर सदरिकाल खेते-खरिहानमे रहैत छल। हुनकर संपन्नता गामेक किछुगोटेकेँ नीक नहि लगैत छलनि। ओ सभ कैक बेर झूठ-मूठकेँ मोकदमामे लखनाक नाम दए दैत छलाह मुदा ओ जेना-तेना बचैत गेलाह। आस्तिक लोक छलाह। सभमास सत्यनारायण भगवानक पूजा करैत छलाह आ संकटसँ उबारक हेतु हुनकर कृतज्ञ रहैत छलाह।

समय सभ दिन एकरंग नहि रहैत अछि। ओसभ केना-ने-केना लचरि गेलाह। किछु ऋृण सेहो भए गेलनि। ओहने दिकदारीक समयमे महराजक लगान नहि दए सकलाह। हुनकर पाछू पड़ल दिआदवादकेँ ई मौका हाथ लगलैक। महराजक ओहिठाम नालिस भेल। लगान नहि देबाक कारण हुनकर सभटा जमीन-जायदाद औनेपौने दाममे नीलाम भए गेल। महराजक सिपहसलारसभ ढ़ोल बजा-बजा कए सभटा जमीन बेचि देलक। लखना एहि आघातकेँ बरदास नहि कए सकलाह आ किछुए दिनमे एहि संसारसँ चलैत बनलाह। हुनकर पत्नी कमला तँ पहिनेसँ अथबल छलीह। चलि-फिरि नहि होनि। पक्षाघातसँ वामअंग बेकार छलनि। लखनाक आकस्मिक देहावसानकेँ ओ नहि सहि सकलीह आ किछुए दिनमे हुनको प्राणांत भए गेलनि।

देखिते-देखिते एकटा जुड़ल-अटल घर उजड़ि गेल। भोजनो

दुर्लभ भए गेल। एहन खिस्सा लखनेक नहि छल। गाम-गाम एहिना कतेको लोक महराजी जुलुमक सिकार भेलथि आ जीविते नरकक भोग भोगि रहल छलाह। महराजकेँ कोनो मतलब नहि। पता नहि हुनका किछु बुझलो रहनि कि नहि? की पता हुनकर सिपहसलारसभ मनमानी करैत रहल हो? ककर हिम्मति छल जे महराज लग सिकाइत करत। जे कनीको किछु करत ओहिसँ पहिने ऊपर पहुँचा देल जाइत छल।

लखना ओ कमला मरिओ कए अपन लोक-वेदसँ फराक नहि भए सकलाह। रहि-रहि कए ओ सभ गामेक लगीचमे घुमैत रहैत छलाह। अपन जजातिपर नजरि लगओने रहैत छलाह। हाकरोस करैत रहैत छलाह जे हुनकर संतानसभक अधिकारकेँ अन्यायपूर्वक बेदखल कए देल गेल। मोनमे कतहुँ उमीद रहनि जे कहिओ हुनकर कोनो संतान एहि अन्यायक प्रतिकार करत आ तखने हुनकर आत्माकेँ मुक्ति हेतनि।

यद्यपि ओकरासभकेँ मरला कतेको वर्ष भए गेल मुदा गामक, अपन लोकक मोह ओकरा गाम झिकने आनि लैत छल। गाम आबएकाल ओ देखैत छल जे महराजक महल चारूकात पसरिते जा रहल छल। बड़का-बड़का देबालसभ ठाढ़ भए गेल छल। की-की ने भए गेल छल, मुदा देबालक ओहिकात लोक बेबस छल,जीवितो जीवनक संपूर्ण सुखसँ वंचित छल। कतेको लोककेँ हार-पाँजर एक भेल छल। से सभ देखि कए ओ आओर दुखी भए जाइत छल,कैक बेर ठोहि पारि कए कानए लगैत छल। तथापि ओ गामक मोह छोड़ि नहि पाबि सकल छल।

एहिना एकराति ओसभ अपन गाम दिस जेबाक इच्छुक

छलाह। कमला बजलीह- "चलू ने अपन गाम?"

"पता ने आब के-के हेताह? कोन रुपमे गाम होएत? ककरो चिन्हबो करबैक कि नहि? आ फेर जौं किछु उल्टा-पुल्टा समाचार भेटि गेल तँ अनेरे दुखमे पड़ि जाएब।" -लखना बाजल।

"एतेक केओ सोचए? हमरा लोकनि छी प्रेतात्मा। बौआएब तँ अपन सभक कपारेमे लिखल अछि?"

"ऐं! की कहलिऐक?"

"ध्यान कतए अछि?"

"ऐ! इएह अपनसभक घर लगैत अछि। लगीचमे चभच्चा देखि रहल छी। मुदा हरिक घर नहि देखा रहल अछि?"

"हमरातँ बहुत चीज नहि देखा रहल अछि? फुलबाड़ी जकरा हम दिन-राति पानि दैत रहैत छलहुँ कहाँ अछि? ओलार जतए महिस बन्हाइत छल ओहो निपत्ता अछि। कतेको नव-नव घर देखि रहल छी। कहीं दोसर गाम तँ नहि आबि गेलहुँ?"

"धुत् तोरीके। सुनैत नहि छिऐक के खोखसि रहल छैक?"

"के छैक?"

"किछु देखा नहि रहल छैक? मुदा खोखसबाक अबाज तँ आबि रहल अछि।"

"से तँ सत्ते।"

"मुदा छै की।"

"रातुक अर्धपहर छैक। किछु भए सकैत छैक? की पता कोनो आओर प्रेतात्मा घुमि रहल होइक? जिन होइक,ब्रह्म पिशाच

होइक,तेँ सावधाने रहब।"

"बात तँ सही कहि रहल छी, किछु संभव अछि।"

अबाज बढ़िते गेल। ठन..ठन...झम..झम... ।"

“हमरा डर लगैत अछि...।"

“प्रेतो भए कए डर लागि रहल अछि?"

“इएह तँ एहि जोनिक विशेषता अछि जे एतए सभ किछु अपने-आप होइत रहैत अछि। अहाँ तँ आब पुरान भेलहुँ। ई सभ बूझल हेबाक चाही।"

“दाइ गे दाइ... । ई के अछि... । नमगर-नमगर हाथ बढ़ओने जा रहल अछि।"

“थम्हु, टार्च बारि रहल छी।"

“टार्च कतएसँ आएल?"

“बड्ड अपाटक छी। श्राद्धमे दान भेल रहैक से बिसरा गेल?"

ढन-ढनकेँ अबाज बढ़िते गेल। कनी कालमे बड़ी जोड़केँ अन्हड़ आएल आ सभ किछु उड़ा कए लेने चलि गेल।

“भागू-भागू, केओ पछोड़ कए रहल अछि... ।"

आओर दुनू गोटे बिला गेल।

राति भरि कमला ओ लखना गामक लगीचमे घुमैत रहि गेल मुदा नीचाँ नहि उतरि सकल। लगैक जेना कोनो प्रचंड शक्ति ओकरासभकेँ रोकि रहल अछि। किछु देखा नहि रहल छलैक। दुनू गोटेक मोन औनाए लगलैक। एहन तँ कहिओ नहि भेल छल। देखल-सुनल गामक रस्तामे ई की सभ भए रहल छैक? दुनू गोटेक

चिंता एकहि बातक रहैक, जे आखिर ओकर वंशजसभ कैं कोनो संकट तँ नहि आबि गेल? एहिबातसँ ओसभ व्यग्र छल।

“कैक बेर कहलहुँ जे आब गाम-घरकैं बिसरि जाउ। ओहिठाम आब की राखल छैक? तीन पुस्त गुजरि गेल। अपनासभकैं के चीन्हत? मुदा अहाँक मोन मानिते नहि अछि।" -लखना कहलकै।

"बुझै तँ छीऐक मुदा मोन नहि मानैए" -कमला बाजलि।

“प्रेत जोनिमे हम अहाँ छी। एतए लोक अपन मोनक किछु नहि कए सकैत अछि। भूख- प्यास सभ लगैत अछि मुदा समाधान कथुक अपना हाथमे नहि अछि।"

“से तँ छैक मुदा बौअनकैं बिसरि नहि पाबि रहल छी।"

"अहाँकैं ई की सभ फुराइत रहैत अछि? के थिक बौअन?"

"सएह कहू, बौअन बिसरा गेल?"

"हमरा किछु मोन नहि पड़ रहल अछि?"

“बहुत आश्चर्यक गप्प थिक जे लोक अपनो संतानकैं बिसरि जाइत अछि।”

“बिसरि नहि जाइत अछि, बिसरा जाइत छैक। ई मृत्युलोक नहि छैक, प्रेतलोक छै।”

ओकरासभकैं गप्प-सप्प होइते रहैक कि लगलैक जेना ठनका खसि रहल छैक। अन्हड़ उठि रहल छैक। चारूकात भयाओन ध्वनि सन्न-सन्न कए पसरि रहल अछि।

"भागू, भागू।"

"की भेलैक?"

"सुनि नहि रहल छिऐक?"

"की छैक...?

ओ एतबा बाजले छलि कि मखना सामने प्रकट भेल- “गोर लगैत छी।"

“के छह?' -लखना पुछलकैक।

"हम छी कालू भगताक भाए, मखना।"

से कहि आगू बढ़ि गेल। ओ मृत्युलोकसँ ककरो प्राण घिचने जा रहल छल। यमपाश भजैत हरहराइत आगाँ बढ़ल जा रहल छल कि कमला ओ लखना हाकरोस करैत देखाएल रहैक।❑

२

कमला ओ लखना पुबारिटोलक प्रसिद्ध भूतहा गाछीक पीपरक गाछपर रहि-रहि कए कानैत रहैत छलि आ ओहिठामसँ आबैत-जाइत लोकसभ कतेको बेर ओकरा हाकरोस करैत सुनैत छल। कमला आ मखनाकेँ एना हाकरोस करैत देखि मखनाक हृदयमे बहुत कष्ट भेलैक। ओ ओकरसभक इतिहास जनैत छल। एहन हाकरोस करैत ओ एसगर नहि छल। कतेको लोक महराज आ हुनकोसँ बेसी हुनकर सिपहसलारसभक अन्यायसँ त्रस्त छल। मखना स्वयं परेसान छल। मुदा कएल की जाए? किछु तँ प्रतिकार करक छलैक। तकर ब्योंतमे ओ लागि गेल। यमराजक ओहिठाम जाल पसारए लागल। यमराजकेँ ओकर गतिविधिपर शुरुएसँ शङ्का रहनि मुदा ओहो बेबस छलाह। सभठाम लोक जीति सकैत अछि

मुदा घरनीसँ जितब बहुत मोसकिल काज थिक। मखना कोना-ने-कोना यमराजक घरनीकेँ पटा लेने छल। एहि कारणसँ ओकरा विरुद्ध ककरो नहि चलैत छल।

एकदिन दुपहरिआक समय रहैक। पुबारिटोलक लोटन महिस चरबए गेल रहए। गाछी लग पहुँचितहि कानबाक अबाज सुनि महिस परसँ धरफराक खसल। महिस चिकरए-भोकरए लगलैक। ओ महिसकेँ छोड़ि भूत-भूत..! बजैत इएह-ले ओएह-ले भागल। भागवाक क्रमे धोती खुजि कतए खसलैक से होस नहि रहलैक। कहुनाक नंग-धरंग अपन दलानपर पहुँचल। ओतए पहुँचितहि धराम दए खसि पड़ल आ बेहोस भए गेल।

गाममे गर्द पड़ि गेल। “लोटनकेँ भूत गछारि देलक। भूत ओकरामे सन्हिआ गेल अछि। दूपहरिआमे भूतहा गाछी जेबेक नहि छलैक,” तरह-तरहक बातसभ गामक लोक कए रहल छल। ओहिठाम क्रमशः लोकक करमान लागि गेल। लोटनक ऊपर पानिक छिड़काव कएल गेल। पंखासँ हबा कएल गेल। मुदा ओ टस-सँ-मस नहि भेल। कैकगोटे कहए लागल जे एकरापर देवीक प्रकोप छैक,केओ कहैक जिन सबार भए गेलैक,केओ किछु,केओ किछु। ताबतेमे गामक प्रसिद्ध भगता कालू ओहिठामसँ गुजरि रहल छल। लोकक भीड़ देखि साइकिलसँ उतरि पुछलकैक-

"की बात?"

"कलममे महिंष चरबए गेल छलैक। ओतहि कोनो भूत गछारि लेलकै" -लोकसभ बाजल। से सुनितहि कालू भगता ताल-पतरा करए लागल। मंत्र पढ़ए लागल। कनीकालमे लोटना फुरपुरा कए उठि गेल। गमछासँ देह झाड़लक आ बिदा भेल जेना किछु

भेले नहि रहैक। लोकसभ अबाक छल। कालू मोंछ पिजबैत बाजलः

"गामक सीमानमे भूत पैसि गेल अछि। बँचि कए रहैत जाउ।"

संयोगसँ हम ओही समय इसकूलसँ लौटि रहल छलहुँ। ताबे लोकक भीड़ छटि गेल छल।

लोटनकेँ पुछलिऐकः"की भेलैक?

“की जाने गेलिऐक?” -लोटन बाजल।

"एतेक लोक कथी लेल जमा भेल छल?"

लोटन किछु नहि बाजल। ताबे हमर माए ओतए आबि गेलि आ हमरा धिचने चलि गेलि।

ओहि दिनक बाद जखन कखनो केओ भूतहा गाछी दिस जाइत ओकरा ककरो कानबाक अबाज सुनाइत। एहि बातसँ गौआँसभ ततेक डरा गेल छल जे दिनोमे ओमहरसँ लोक आबा-जाही कम कए देलक। बहुत आवश्यक होइतैक तँ हनुमान चालीसा पढ़ैत कहुना कए ओहो दू-तीन गोटे संगे जाइत। ओ गाछी इलाकामे चर्चित भए गेल छल। आमक मासमे सोड़हि-के- सोड़हि आम पड़ल रहैत छल,केओ उठओनिहार नहि। सड़ि-सड़ि कए आम फेकाइत छल। नढ़िआ-कुकुरसभ आम खा-खा कए एकहि संगे भूकए लगैत छल जे आओर भयाओन लगैत छल।

मुदा हमरा रहल नहि होअए। हमर बाबा,दाइ,बाबू सभक सारा ओही गाछीमे छल। ओ हमर पुस्तैनी गाछी छल। नेनेसँ हम

बाबूक संगे ओहिठाम आमक रखबारी करए जाइत छलहुँ। कैक दिन असगरो आमक रखबारी करैत छलहुँ। कहाँ कहिओ किछु विद्दति भेल? आबि ई गप्प-सप्प सुनैत रहैत छी। की पता एहूमे किछु बात होइक?

माएकेँ हम ई बात कतेको बेर कहलिऐक मुदा ओ अंठा दैक। बेसी कहितिऐक तँ कहैत- “तूँ एहिसभ बात पर एतेक नहि सोचै। पढ़ाइमे मोन लगा जाहिसँ भविष्य बनतौ। की करितहुँ? चुप भए जाइ। मुदा सौंसे गामकेँ कोना चुप कए दितिऐक? सभ एकस्वरसँ ओकरा भूतहा गाछी कहैक। एक हिसाबे गामक लोकसभ ओहि गाछीकेँ बारि देने छल।❑

३

माएकेँ बरोबरि बाबू लेल पुछैत रहैत छलिऐक। हमर बाबू कतए छथि? किएक नहि अबैत छथि? जाबे अबोध रही ताबे माए किछु-किछु कहि कए पोल्हा दैत छलि। आब तँ हम इसकूल जाइत छी। पाँचमाक विद्यार्थी छी। दसम वर्ष भेल। किछु-किछु बातसभ बूझि रहल छी। माएकेँ हमर जिज्ञासा शांत करब उचित बुझेलैक। ओहि दिन इसकूलसँ आबि झोड़ा पटकि भोजन करबाक हेतु बैसले रही की अपने बाजए लगलि-

"तोहर पिता तोहर जन्मक किछु दिनक बादे मरि गेल रहौक।"

"की भेलैक? बाबू किएक मरि गेलखिन?"

"गाममे हैजा फैलि गेल रहैक। कतेकोगोटे दुखित पड़ल। किछुगोटे बाँचिओ गेल। मुदा तोहर पिता के जे हैजा धेलक से रुकबाक नामे नहि लेलक, चौबीस घंटा रद्द-दस्त होइते रहल।"

"कोनो इलाज नहि भेलैक?"

"की इलाज होइतैक? गाममे ने डाकटर रहैक ने बैद?"

"तखन?"

"गामक पुबारिमे ब्रह्मबाबा बसैत छथिन, तकरे गोहरबैत रहलिऐक। कतेक उचती-बिनती केलिऐक। तोहर दाइ भगवती लग भरि राति छाती पिटैत रहलखिन। रहि-रहि कए बेहोस भए जाथिन। भगवती! हे भगवती ! एहन अन्याय नहि करू हे भगवती! हमर प्राण लए लिअ, हमर बच्चाकेँ बकसि दिअ हे भगवती!- से सभ कहैत छाती पिटैत रहि गेलि।

"फेर?"

"फेर की होइतैक? तोहर पिताक हालति खराबे होइत चलि गेलनि। भोर होइत-होइत नारी घिचा गेलनि। साँस बन्द भए गेलनि आ ओ एकहि बेरमे आँखि उन्टा देलखिन। हम तँ कनैत-कनैत बेहाल रही। एहि घटनासँ सौंसे गाम सन्न रहि गेल। तोहर दाइ हाकरोस करैत रहलीह। हमरा तँ कतेको दिन-धरि भूख-पिआस सभ खतम भए गेल। लगैक जे हमरो जान नहि बाँचत। मुदा हम तँ छी कठजीब। एहनो विपत्तिकेँ झेलि गेलहुँ।"

हम माए संगे ई सभ गप्प करिते रही कि कालू भगता कतहुँसँ घुमैत-फिरैत आबि गेल।

महराज लोकक समस्त संपदाकेँ हरण कए अपनहिमे मस्त छलाह। गाम-घरमे शिक्षाक घोर अभाव छल। डाक्टर,बैद डिबिआ लए कए तकनो नहि भेटि सकैत छल। तेहन परिस्थितिमे लोकक मजबूरीक फएदा धूर्त, उचक्कासभ नाना प्रकारक छल,प्रपंच कए उठाबैत छल। ओझा-गुनी, डाइन-भगता संकटमोचक छल।

एहने संकटमोचक छल-कालू भगता। जेहने देखएमे कारी छल तेहने ओकर मोनो मलिन छलैक। जतहिँ स्त्रीगण रहैत ओतहि चुक्की मारि कए बैसि जाइत आ शुरु भए जाइत। गोल मुँह, चपटल नाक, इएह-इएह मोटक बाँहि, भुट्ट आ चतरल देह ओ देखबामे भूत-प्रेतसँ कम भयाओन नहि लगैत छल। जिला-जबारमे भगतैमे ओकर नाम छल। सोम आ शुक्रक अपने ओहिठाम भगतै करैत छल जाहिमे परोपट्टाक कारनीसभ ओकरा गोहरबैत रहैत छल। सभकारनी चाउर, दालि, अल्लु अनैत छल। एहि तरहेँ बोरा भरि-भरि अन्न-पानि भगता लए जाइत छल। ओहीमे सँ ओहि दिनक ओकरा ओतए भण्डारा होइत छल। कारनी आ ओकरा संगे आएल ओकर लोकसभक भोजनक ओरिआन रहैत छल।

ककरो किछु समस्या तँ ककरो किछु, मुदा परेसाने लोकसभक ओतए आएब-जाएब होइत छल। सोम-शुक्रक अलाबा ओ आन दिन गाम-गाम बजाहटि भेलापर जाइत छल। ककरो भूत झाड़लक तँ कतहुँ जिनक प्रकोपक समाधान केलक।

हमरासभकेँ गप्प-सप्प करैत देखि ओ अपने बकए लागल-

"तोरासभकेँ बड़का संकट घेरने छौ, बँचि कए रहिअह।"

“की कहलिऐक?" हमर माए बाजलि।

"समय पर अपने बुझा जेतह।"

से कहि भगता ओहिठामसँ ससरि गेल। माएक मोन उदास भए गेलैक। भगता की कहि गेल, किएक कहलक, सोचैत रहि गेल।

कालू भगता कनिके दूर गेल होएत कि एकटा अजोध गहुमन साँप छत्र काढ़ि कए ओतए ठाढ़ भए गेल। हम जाबे चिचिआइ, माएकेँ सतर्क करितहुँ,ताबे तँ अनर्थ भए गेल। साँप माएकेँ हबक्का मारलक। दहिना जांघसँ खून टप-टप खसए लागल। माए ओहिठाम बेहोस भए खसि पड़लि।

देखिते-देखिते ई समाचार सौंसे गाम बिजलौका जकाँ पसरि गेल। जे जतहि छल, सभ हमर दरबाजापर जमा भए गेल। एकदिस हमर माए बेहोस पड़ल छलि,दोसर दिस करमान लागल लोक। मुदा ककरो किछु नहि फुराइक जे कएल की जाए? केओ किछु, केओ किछु बजैत रहल। ताबतेमे लोटना चटिबाहकेँ पकड़ने आएल। धराधर चाटी चलए लागल। मंत्र पढ़ि-पढ़ि चटिबाह घुरमि-घुरमि कए झाड़-फूक करैत रहल, मुदा किछु नहि भेल। कनिके कालमे हमर माएक देह निष्प्राण भए गेल।

एतेक कम बएसमे माता-पिता दुनू खतम भए गेल छल। पिताक तँ किछु नहि देखने रहिऐक मुदा माएकेँ सामनेमे मरैत देखि लागल जेना ठनका खसि पड़ल। लोक-वेदसभ जमा होमए लागल। माएक अन्तिम संस्कार करबाक तैयारी शुरु भेल।

गाम-धरक लोकक एहन समयमे बहुत सहयोग भेटल। सभटा ओरिआन गौंवेसभ केलक। आगाँ-आगाँ हम आ पाछू-पाछू

माएक लहासकेँ चारि गोटे उठओने "राम नाम सत्य है " कहैत आगू बढ़ल जा रहल छल।

संयोगसँ कालू भगता ओहिठामसँ जाइत देखाएल। कालू केँ देखितहि लोकसभ ओकरा गरिआबए लागल। सभक कहब छलैक जे ओकरे जादू-टोनाक कारण हमर माएक जान गेल, कारण ओ देवी-देवा पोसैत छल। भगतै करैत छल आ डाइनो छल, कहाँ दनि अष्टमीक रातिमे गाछ हकैत छल। केओ किछु,केओ किछु कहिते रहि गेल।

देखिते-देखिते माए जरि कए खाक भए गेलीह। हम निरंतर कनैत रहि गेलहुँ। लोकसभ अपना भरि बोल-भरोस दैत रहल। मुदा गुंड़क मारि धोकरे जनैत अछि। हमर सर्वश्व माए छलीह, से देखिते-देखिते चलि गेलीह।

अंतिम संस्कारक विधि-विधान समाप्त भेल। माएकेँ सारा केँ जड़ैत, धधकैत छोड़ि हम गौंवा सभहक संगे बिदा भेलहुँ। माए सभदिनक हेतु छुटि गेलीह। हम एकदम एसगर रहि गेलहुँ। एगारह दिन धरि झर-झर नोर खसैत माएक श्राद्ध करैत रहि गेलहुँ।

श्राद्ध संपन्न भए गेल। पाहुनसभ बोल भरोस दए अपन-अपन गाम चलि गेलाह। रहि गेलाह मात्र हमर मामा। ओहो कतेक दिन रहितथि। नौकरी करैत छलाह। अपना गामक मिडिल इसकूलमे मास्टर छलाह। शिक्षाप्रेमी छलाह। हमर हालति देखि बहुत दया भए गेलनि आ हमरा अपने संगे अपन गाम लेने चलि गेलाह।

मामा संगे जेबा काल हमर दिआदसभ बहुत प्रसन्न रहथि। भेलनि जे आब एकर बस्तु-जातसभ लेबामे कोनो कष्ट नहि होएत।

भेबो केलैक सएह। से बात फराके कहब..।

गामसँ निकलैत काल माएक साराक लगीच दए जेबाक रहैक। ओतए पहुँचितहि पैरमे जेना कैंच लागि गेल। आगू ससरले नहि होअए। मामा ई बात चट दए बूझलखिन आ हमर गलामे हाथ धए कहए लगलाह-

"श्रीकांत हम छी ने। तूँ कथुक चिंता नहि कर।"

हमरा भेल जेना मामाक मुँहसँ माएक आत्मा बाजि रहल होइक। हम मामा दिस बकर-बकर तकैत रहलहुँ। आँखिसँ नोर ढ़बर-ढ़बर खसैत रहल। फेर मामा हिम्मति देलनि। कहलनि –

"माता-पिता ककरो सभ दिन नहि रहैत छैक। परंतु नीक काज कए तूँ अपन माए-बापक आत्माकेँ शांत कए सकैत छह। हुनकर आशीर्वाद लए सकैत छह।"

मामाक बात हमरा मोनमे गड़ि गेल। करवद्ध भए माएकेँ प्रणाम केलहुँ आ मामा संगे ओतएसँ आगू बढ़ि गेलहुँ।❑

४

आइ ओहि घटनाक पाँच साल भए गेल। माएक पाँचम बरखी भए रहल छल। हमर मामा विधि-विधानसँ बरखीक व्यवस्था केने रहथि। सौंसे गामक ब्राह्मण भोजनक हेतु आमंत्रित रहथि। खूब नीक जकाँ काज भेल। थैह-थैह भए गेल। मुदा हमर मोन भोरेसँ उदास छल। काज करैत-करैत आँखि लागि गेल। सपना देखए लगलहुँ। लागल जेना माए आबि कए ठाढ़ छथि, कहि

रहल छथि- “श्रीकांत कथुक चिंता नहि करह। हम सदरिकाल तोरे लग छी।

एतेक बाजि ओ हमर हाथ धए लेलीह। लाल टुह-टुह भगवती सन हुनकर आकृति देखैत बनैत छल। हम हुनका साष्टांग प्रणाम करए उठलहुँ कि मामाकेँ माथसँ हमर हाथ टकरा गेल। ओ हमरे लग सुतल छलाह। मामा अकचकाक उठलाह- “की भेल?”

"माए...!" -एतबा बाजि हम बेसुध भए गेल रही। बैद बजाओल गेलाह। ओझा गुनी सेहो भेल। हम क्रमशः सामान्य होइत गेलहुँ। मुदा रहि-रहि कए माएक कहब मोन पड़ैत रहैत छल।

ओहि दिन इसकूलसँ आएल रही। दसमाक परिणाम आएल छल। हम प्रथम श्रेणीमे उतीर्ण केने रही। सौंसे मामागाममे हल्ला भए गेल छल। मामाक सभ प्रशंसा कए रहल छल। हम असारापर बैसल अखबार देखैत रही। ताबे माएक अबाज सुनाइ पड़ल, जेना कहि रहल छथि- “श्रीकांत! हरि कतए अछि?"ताबते जोरकेँ हल्ला भेलैक। गाममे मारि भए गेल छलैक। कनीके कालमे मामा लहु-लुहान भेल पड़ल छलाह। हरि कोनो काजसँ बजार गेल छलाह। काज कए लौटि रहल छलाह। गामक लगीच आबि गेल छलाह कि चओरमे चारि-पाँचटा लठैतसभ घेरि लेलकनि आ दे दनादन,दे दनादन,लाठीक वर्षा कए देलक। ओ तँ रच्छ भेल जे कनीके कालक बाद इसकूलमे छुट्टी भेल आ चटिआसभकेँ अबैत देखि ओ सभ हरिकेँ ओही हालतिमे छोड़ि कए भागि गेल। मास्टर साहेबकेँ रक्तरंजित देखि चटिआसभ चिकरए-भोकरए लागल। लग-पास बहुत लोकक करमान लागि गेल। इसकूलसँ मास्टरसभ दौड़ल अएलाह। सभ छगुन्तामे छल। हरि सन निर्विवाद लोकपर एहन घातक प्रहार ! एना किएक भेल? के केलक?

हरिक बहुतरास जथा-पात महराजक सिपहसलारसभ नीलाम कए बेचि देने छल। रहि-रहि कए ओकरा ई बात ध्यान अबैत रहैत छल। एहि प्रकारसँ दरिद्र भेनिहार कोनो ओ एसगरे नहि छल। गाम-गाम एहन लोकसभ भरल छल जकर एहने इतिहास छल। गाहे-बगाहे ओ अपन आक्रोश व्यक्त करैत रहैत छलाह। एहिबातसँ कुपित भए जमींदारक लठैतसभ हुनकापर आक्रमण कए देलक।

हरिकेँ मारि कए तिनू बदमास लंक लागि कए भागि रहल छल। बीचमे धार छलैक। भादव मास छल। धारमे पानि भरल छल। धारमे कुदि गेल। ऊपरसँ मेघ बरसए लगलैक। तथापि ओसभ हेलि गेल आ पता नहि कतए जाए ऊपर भेल। पुलिस बहुत प्रयास केलकैक मुदा केओ नहि पकड़ाएल। पुलिससभ सभ घुड़ल आ हरिकेँ ओही जीप पर लादि कए अस्पताल लेने चलि गेल।

हरिकेँ ऊपर कएल गेल एहि घातक प्रहारक समाचार केना-ने-केना पुलिस मोहकमामे ऊपर धरि पहुँचि गेल। कहाँदनि जासूसी खबरि भेटलैक जे एहि घटनामे जन विद्रोहक संभावना अछि। एसपी, कलक्टर सभ दन-दन कए घटनास्थल पर पहुँचल। लोकसभकेँ पूछ-ताछ होमए लागल। केओ कोनो निजगुति बात नहि कहैक। एसपी तमसा गेल आ जएह सामने अबैक तकरे पकड़ि कए थाना लेने चलि गेल।

एहिबातसँ लोकमे आक्रोश आओर बढ़ि गेल जे पुलिसक उच्च अधिकारी निर्दोष लोकसभकेँ पकड़ि कए थानामे बंद कए देने अछि। गाम-गामसँ लोकसभ जुटए लागल। सभ मिलि कए थानाकेँ घेरि लेलक। ओहि भीड़मे कैकटा अगिमुत्तूसभ छल।

ओसभ गोली-बारुदसँ लएस छल। दना-दन फटक्का फुटबाक अबाज भेलैक आ पुलिससभ लंक लागि कए भागल। थाना धू-धू कए जरए लागल। एसपी, कलक्टर सभ फेल भए गेलाह। किछु काल लेल एहन लगलैक जेना गुंडासभक राज भए गेल। पुलिस लगमे कमे लोक छलैक। केओ ई नहि सोचि सकल जे एकटा मामुली घटना एहन रुखि लए लेत। मुदा जे हेबाक से भए गेल रहैक।

एहि हंगामाक खबरि महराजक ओहिठाम धरि गेल। एहि घटनाक्रमसभसँ ओ बहुत विचलित छलाह। की पता काल्हि जा कए ई सभ राज-काजमे संकट ने ठाढ़ करए" -महराज सोचथि। अस्तु, ओ अपन सिपहसलारसभकेँ सरकारक उच्च अधिकारीसभ लग पठओलथि जाहिसँ एकरा नीकसँ दबा देल जाए। महराजक प्रयास कारगर भेल। महराज आओर हुनकर सिपहसलारक सह पाबि सरकारी महकमाक रुखि बहुत आक्रामक भए गेल। दूपहर राति धरि पुलिसक उच्च अधिकारीसभक बैसार होइत रहल। निर्णय भेल जे गौआँसभकेँ सबक सिखाओल जाए। रते-राती पुलिसबलकेँ गामपर छापामारीक हेतु पठाओल गेल। दूपहर रातिमे पुलिस सभ दन-दन करैत गाममे प्रवेश केलक। लुच्चा,लफंगासभ तँ पहिने घर धए लेने छल। मुदा पुलिसकेँ तँ लोकसभकेँ सबक सिखेबाक रहैक से जतए जे भेटलैक तकरा पकड़ने चलि गेल। दूटा पुलिसक जीपमे एगारह गोटेकेँ पकड़ि कए सोझे एसपी लग लेने चलि गेल। एसपी साहेब प्रसन्न भेलाह। सभकेँ रातिभरि राजपुरामे पुलिस हाजतमे राखल गेल। ओकरासभ पर दुनियाँ भरिक धारा लगा देल गेल। देशद्रोहसँ लए हत्याक प्रयासक धारा लगाओल गेल। पुलिसक

क्रोधक क्रूड़तम प्रतिफल सामने छल।

हालति तेहन छल जे केओ- ककरो सुधि लेनहार नहि रहलैक। गाममे जे केओ बाँचल छल सभ भागल। मात्र स्त्रीगण, बच्चा ओ वयोबृद्ध लोकसभ गाममे रहि गेलाह। कालू भगता सेहो अन्दर छल। गाममे लोक सभ फुसफुसेबो करैक जे कहाँ गेलैक ओकर भगतै?तेहन छल तँ रोकि लैत पुलिसकेँ। बँचा लैत अपनोकेँ तखन ने?

मुदा कालू तँ जहलोमे अपन रस्ता पकड़ि लेलक। जहलक अधिकारीसभकेँ कोना-ने-कोना जाइते देरी मिला लेलक। साँझक नित्य ओकर भगतै होमए लागल। ओहूठाम कारनीसभक पाँति लागि गेल। की जहल, की गाम, कालू भगत अपन भगतैसँ सभकेँ गुम केने छल।

ई बात एसपी साहेबकेँ कान धरि पहुँचल। पहुँचैक रहैक। एसपी जेलरकेँ बजओलक। ओहि समयमे आओर केओ नहि छल।

"जहलमे की सभ भए रहल अछि?" -एसपी पुछलकैक।

"सरकार! झूठ नहि कहब। जहिआसँ ई भगता जहलमे आएल रोज रातिकँ हमर डेरामे भूत-प्रेत चक्कर लगा रहल अछि। काल्हि तँ हद्दे भए गेलैक?” -जेलर बाजल।

"की भेलैक? तोरा एहिना सभठाम भूते देखाइत रहैत छह? जहन नौकरी जेतह तखनसभ भूत झड़ि जेतह। अपन भाभटि जल्दी समटह।" -एतबा कहि एसपी साहेब जेलरकेँ ओतएसँ भगा देलकैक।

एसपी साहेबसँ डाँट खा कए जेलर अपन डेरा पहुँचले छल

कि ओकर घरबाली सरकारी डेराक बाहरे ठाढ़ छलि।

"बाहर किएक ठाढ़ छी?" -जेलर बाजल।

"घर रहए जोकर नहि अछि"।

"की भेल?"

"अपने जा कए देखि लिअ।"

अन्दर जाइत जेलरकेँ माथा घुमए लगलैक। सौँसे घरमे अक्कर-बक्कर भड़ल छलैक। ओछाएन पर की- की ने फेकल छलैक। ततबे नहि भानस धरि नहि छोड़ने छलैक। मुँहथरे पर मरल कौआ खसल छलैक। ई सभ देखि कए जेलरक माथा सुन्न भए गेलैक।

जेलर बाबूकेँ किछु नहि फुराइक। ओमहर एसपी साहेबक ठेङा तँ एमहर भूत-प्रेतक आतंक। ओकरा तँ लगैक जे चिंतासँ हृदयाघात भए जेतैक। डेरामे घरबाली असगरे रहैत छलैक। जेलर बाबू अपने जेलक समस्यासभमे व्यस्त रहैत छलाह। जहिआसँ कालू भगता जहल आएल नित्य नव-नव फसाद होमए लागल। पुलिसक उच्च अधिकारी सेहो किंकर्तव्यविमूढ़ भए गेल रहथि। हुनकोसभकेँ मोनमे ई बात घुमए लागल- “किछु बात तँ छैक अन्यथा जेलर बाबू एतेक परेसान किएक रहितैक?" मुदा सामना-सामनी जखन जेलर होथि तँ ओसभ ओकरे डाँटि देथि, कोनो आओर रस्तो नहि छलनि। सरकारी काज तँ चलेबाक छलनि। मुदा कालू भगत एसगरे सभपर भारी पड़ि रहल छल। सभसँ खराब हालति तँ जेलरबाबूक रहैक। जेलमे कालू भगताक डर,घरमे घरनी परेसान आ बाहर अधिकारीसभ कस्तन केने। कखनोक तँ मोन

ततेक उचटि जाइक जे होइक जे फाँसी झूलि जाए। फेर सम्हरए। डर होइक जे कहीं भूत-प्रेतक असरि तँ नहि भए रहल अछि।

जेलरक कमजोरी कालू भगता बूझि गेल। ओ तँ लोकक मोन तारि लेबामे माहिर छल। रहि-रहि कए ओ जेलर बाबूकेँ डराबए लागल। हद तँ तखन भए गेल जखन जेलरक सामनेमे कालू भगता महिला वार्डक कैदीसभकेँ झाड़-फूक शुरु कए देलक आ ओ मूकदर्शक बनल रहल। कालू भगता नीकसँ ओकरा अपन चांगुरमे लए लेलकैक। कालक्रमे कालूक प्रभावमे पूरा जहलक कैदी सभ आबि गेल। महिला कैदीसभ तँ आगूए-आगूए रहैत छल। ककरो साहस नहि होइक जे कालू भगतकेँ टोक देत। के अनेरे अनिष्ट बेसाहति? जेलरबाबू रोज कालीमाताकेँ प्रार्थना करथि जे ई कैदीसभ छुटि जाए। ओकीलोसभकेँ यथासाध्य उत्साहित करथि, मुदा तेहन-तेहन धारासभ लागल छल जे ककरो जमानति नहि होइक। जेलर माथ ठोकि लिअए?

घरबालीकेँ साहस दैक। हनुमान चालीसाक कैटा किताबसभ आनि कए सिरमामे राखि देलकैक। मुदा जेलरक घरबाली कोंढ़केँ कमजोर रहैक। ताहीबातक जेलरकेँ चिंता रहैक। कहीं एहन ने होइक जे ओ ड्युटी करैत रहए आ घरबालीक संगे किछु अनिष्ट भए जाइक। तेँ ओ सोचलक जे कालू भगताकेँ मिला कए राखल जाए। ओकर घरबाली केँ किछु भए गेलैक तँ के काज देत? ❑

५

हमर मामा ककरा की बिगारने छलथिन जे हुनकर ई हाल कएलक?दिन-राति ओ अपन काजमे लागल रहैत छलाह। ककरोसँ कोनो मतलब नहि। एसगर छलाह। बिआह नहि केने रहथि। हमरे अपन संतान बूझि पालन-पोषण कए रहल छलाह। एहन निर्दोष आदमीकेँ के मारलक आ किएक? ई प्रश्न सभक माथामे घुमि रहल छल। पुलिस तँ दोसरे झंझटिमे फँसि गेल। लुच्चा-लफंगासभ थाना जरा देलक। ओकरसभक पुलिससँ कोनो कुन्नह रहल हेतैक मुदा फल भोगलक सौंसे गौँआ? तेहन-तेहन धारा लगा देने रहैक जे जमानति हेबाक बाटे नहि रहैक। अनेरे लोकसभ जहलमे बंद छल। कतेकोकेँ घर उजरए पर छलैक, कतेककेँ उजरि गेलैक कारण कमासुतसभ जहलमे सड़ि रहल छलैक। के-ककरा देखितैक? गरीबक टोल छल। नेतासभ अबैक,बोल भरोस दैक आ घसकि जाइक। केओ कोनो ठोस काज नहि कए सकल। एहन हालतिमे सौंसेगाम परेसानीमे पड़ि गेल छल। जे गाममे बाँचल छल से सभ अबाक छल, माथ-कपार नोचि रहल छल। समाधान किछु नहि फुराइत छल। एतेक गोटे जहलमे छल मुदा असली अपराधी के कोनो पता नहि छल। मास्टर साहेबकेँ के मारलक आ कथी लेल से अखन धरि पता नहि चलि सकल। प्रायः पुलिसोकेँ एहिसँ कोनो खास मतलब नहि रहैक। ओकरा तँ लोकसभसँ ओलि चुकेबाक रहैक आ तकर व्योंत सेहो भइए गेल छल। थाना जराएब बहुत महग पड़ल। एक-एक परिवारसँ कतेको गोटे बंद भए गेल छल। एकगोटेक तँ तीनपुस्त संगे जहलमे खिच्चरि खा रहल छल।

समाधान ने पुलिसकेँ किछु फुराइक ने जहलमे बंद निर्दोष कैदीसभकेँ। कारण जखन एक बेर पुलिस लोकसभक विरुद्ध झुठो केस कए देलक तँ ओकरा वापस कोन आधार पर लैत? अपने आफत भए जइतैक। नौकरी बचेबाक फिराकमे कतेको निर्दोष प्राणी सालभरिसँ जहलमे सड़ि रहल छल।

कालू भगते किछु करत। सभक आश ओएह रहि गेल छल। जहलमे बंद सभ गौंवासभ ओकरा गोहरबैत रहैत छलैक। मुदा ओ तँ अपनेमे मस्त छल। जेलरकेँ डरा कए काबू कए लेने छल। दिन-राति रंग- रभस करैत बीति रहल छल। एहन आनंद तँ ओकरा गामोमे नहि छलैक। भगतै चलि रहल छलैक। कारनीसभकेँ फूँकि रहल छल आ सभसँ बड़का बात जे जेलरकेँ काबू कए लेने छल। जहाँ जेलर एमहर-ओमहर केलक कि ओकर घरबालीकेँ केना-ने-केना तेहन कए डरबैत छल जे जेलर उल्टे पैरे कालू लग दोड़ैत छल। खुसामद करए लगैत छल। बाह रे जेलर बाबू!

ऊपरका अधिकारी सभकेँ किछु- किछु पता लगैक मुदा ओसभ काजमे ततेक व्यस्त रहैत छल जे एकटा जेलक समस्या लए बैसि तँ नहि सकैत छल। मासिक बैसारमे जेलर केँ फज्झति कए दैक। जेलर सभ सुनि लिअए आ बात फेर ओतहि रहि जाए।

मुदा ई हालति कतेक दिन धरि चलितैक? विचाराधीन कैदीसभकेँ ऊपर न्यायालयमे सुनबाइ साल भरिसँ टलि रहल छल। मामिलामे कोनो प्रगति नहि होइक। अंतमे तंग भए जजसाहेब एसपीकेँ नोटिस कए देलथि। अगिला तारिखपर ओकरा न्यायालयमे अएबाक आदेश भेल। आब तँ जेलर बाबूक हालति बहुत खराब भए गेल ।। घर पहुँचि कए चौकीपर धराम दए

खसलाह।

रघु आ निशा कलकत्तामे एकहि कालेजमे पढ़ैत छल। निशाक रूप-रंग देखि कए रघु प्रभावित होइत गेल। निशाकेँ सेहो रघु पसिंद रहैक। दुनूगोटे बिआह करए चाहए मुदा परिवारक लोक नहि मानै। ताबते रघुकेँ राजपुरामे जेलरक नौकरी लागि गेलैक। ओ निशाकेँ लेने ओतए चलि आएल आ कालीमंदिरमे बिआह कए लेलक। निशाक पढ़ाइ-लिखाइक संगे संगीतमे बहुत महारत रहैक। कहिओ-कहिओ राजपुरामे आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रममे ओ गबैत छलीह। हुनकर गायनक प्रशंसक महराजो छलाह। कैक बेर महराजक संगीत सभामे सेहो ओ आमंत्रित भेलीह। महराज तहिएसँ हुनकर प्रशंसक रहथि। ओ चाहथि जे कहुना निशाकेँ राजेक हातामे राखि ली मुदा ताहि हेतु रघु तैयार नहि होथि। अपना भरि जेलर बाबू निशापर बहुत ध्यान दैक मुदा जहिआसँ ई कांड भेलैक ओकर सुधि-बुधि हराएल रहैक।

ओमहर कैदीसभ अपने तंग छल। मुदा असली मजा तँ कालू भगता लए रहल छल। मजेदार गप्प तँ तखन भेल जखन साँझमे कारनीक पाँतिमे जेलर स्वयं आबि कए ठाढ़ भए गेल। जेलरकेँ एना एकटंग्गा देने ठाढ़ देखि जहलक पुलिससभ गुम छल। मुदा बाजति की? अपन अधिकारीक हाल पर गुम छल।

साँझमे भगतै होइत रहैक। जेलर बाबूकेँ एकटंगा देने देखि सभसँ पहिने ओकरे गोहार लगओलक। पुछलकैक- “की भेलौक?

"हमर जान खतरामे अछि। किछु करिऔक, नहि तँ हमर घरबाली बिलटि जाएत।"

"भेलौ की? -भगता बाजल।

“अहाँसँ की छिपल अछि? हमरा बचा लिअ।"

कालू भगता छाउर छिटलकैक आ कहलकै जे तोहर समस्या बहुत गंभीर छौक। असगरमे झड़बए पड़तौक। बहुत खतरनाक जोगिन पाछू पड़ि गेल छौक।

जेलर सष्टांग दंडबत भए गेल। सौंसे जेलमे हरकंप मचि गेल। जहलक पुलिससभ जेलरकेँ मोने- मोन गरिआबैत छल। कैदीसभक सेहो चकबिदरो लागल छल। सभ मोने मोन कहैत छल- “एहन तमासा नहि देखलिऐक। धन कहीं कालू भगताकेँ जे जेलरोकेँ हबा निकालि देलक।"

जेलरक हेतु अलगसँ भगतै करबाक ओरिआन ओकरे घरमे दूपहर रातिक भेलैक। जहलसँ जेलरक कारसँ कालू भगता जेलरक सरकारी डेरा पहुँचल। ओतए जेलरक घरबालीकेँ देखितहि छगुन्तामे पड़ि गेल। एहन सुन्दरि..!

जेलरक घरबाली छलहो हजारमे एक। गोर-नार ,६ फुट नाम, हरिअर-हरिअर आँखि,चाकर माथ, सभ मिलि लगैक जेना स्वर्गक परी होइक। कालू एकटक ओकरे देखैत रहि गेल। जेलर भगतैक समानसभक जोगारमे लागल छल आ कालू भगता दोसरे दुनिआमे मगन छल। जेलर पूजाकसभ वस्तु लए आएल। ओकरा देखिते कालू भगल शुरु केलक।

"मोसकिल छौक एकरा बचेनाइ। पिशाच लागि गेल छैक।"

"जे करबै से अहीं करबैक। हम तँ अहाँक शरणमे छी।"

"पहिने की करैत रहलह? आब तँ मामिला हाथसँ निकलि गेल अछि।"

"की भेलैक?"

"हम की कहबौक, इएह ले, अपने बकतौक।"

आओर ओ बकए लगलीह-

"हमरा केओ आओर नहि बचा सकैत अछि। भगते हमर जान बचाओत... ।"

ई बाजि कए ओ बेहोस भए गेलि। भगता की केलकै, कोन मंत्र पढ़लकैक जे ओकर बाद निशा ओकरे बात बूझैक। जेलर बहुत चिकरल- “निशा! निशा! "

कोनो उत्तर नहि आएल। निशा निःशब्द ओहीठाम भूलंठित भए गेलि। जेलर बाबूक परेसानीक अंते नहि छल। एमहर घरबाली बेहोस छलैक ओमहर केओ एसपी साहेबकेँ सिकाइत कए देलकैक जे जेलसँ कालू भगत बिला गेल। जेलमे छापा पड़ि गेल। “आब की होएत?”-से सोचि-सोचि कए जेलर परेसान छल, ताबे एसपी साहेबक फोन आबि गेलैक। जेलर इएह-ले ओएह-ले ओतएसँ जेल बिदा भए गेल। आ भगता...?

जेलरकेँ देखिते एसपी साहेब चिचिआ उठलैक- “रघु। ई की भए रहल अछि?तूँ जेलक माहौलकेँ चौपट कए देलह अछि। आब तोहर नौकरी भगवानो नहि बचा सकैत अछि।"

"माफ कएल जाए सरकार!"

"तोहर गलती अक्षम्य छह। तोरा जेलर राखि कए हम अपन नौकरी अपने खा जाउ। ई नहि भए सकैत अछि। तोरा वारंबार चेतौनी दैत रहलिअह, मुदा तूँ सुधरबाक बजाए उल्टे रस्ता धेने छह। तखन जे हेबाक से हेबे करत। भए सकैत अछि तोरा जहलो

जाए पड़ए।"

जेलरक हालति देखए जोकर छल। ओकरा मुँहसँ बकार नहि निकलि रहल छल। तथापि प्रयास कए ओ बाजल- “सरकार देखि नहि रहल छिऐक?"

" कथी देखबैक? एहिठाम की छैक जे देखबैक।"एसपी साहेब एतबा बाजल छलाह कि जेलर बेहोस भए ठामहि खसल। ऐसपीक सामने कालू भगता सद्यः ठाढ़ छल।

"तूँ कतए चलि गेल रही? -एसपी साहेब बजलाह।

"हम तँ सदरिकाल एतहि छी सरकार।"

"झूठ, झूठ।" -एसपी साहेब चिचिआ उठलाह।

"अहाँकेँ जकरेपर विश्वास होअए तकरे सँ पुछारी कए सकैत छी, मुदा एहि हेतु जेलर बाबूकेँ प्रताड़ित नहि कएल जाए। ओ एकदम निर्दोष छथि। जाने भगवान।" -कालू भगता एसपी साहेबकेँ गोहरबैत बाजल। एसपी साहेब सौंसे जेल घुमि अएलाह, एकटा कैदी कालूक विरुद्ध नहि बाजल। एसपीकेँ ठकबिदरो लागि गेलनि। सोचए लगलाह- “आखिर सिकाइत के केलक? जौं सिकाइत झूठ छल तैओ किछु तँ कारण रहल हेतैक।“मुदा किछु प्रमाण नहि भेटि रहल छलैक। हारि मानि कए एसपी साहेब ओतएसँ अपन डेरापर आबि गेलाह।

जेलरकेँ कालू भगताकेँ जेलमे देखि छगुन्ता लागि गेलैक। सोचए लागल- “ई कोना एतए आबि गेल?" कालू ओकर मोनक बातकेँ तारि गेल आ जोरसँ ठहाका पाड़लक। जेलरक मुँह देखए वला छल।

ओ जहलसँ डेरा पहुँचल तँ कालू भगताकेँ बाहर निकलैत देखलक। ओकर माथामे किछु नहि सन्हिआ रहल छलैक। सत्य की अछि?जे ओ जहलमे देखलक से आ कि जे ओ अखन देखि रहल अछि? दुनू घटना प्रत्यक्ष देखलक। अचानक ओकरा चिचिआ गेलैक- “निशा!निशा!"

"की बात?”- निशा हँसि रहल छलि।

“कालू कतए छल?"

"जतए अहाँ छोड़ि गेल रहिऐक।"

निशाक मुँहे ई सुनि जेना ओकरा बकोर लागि गेलैक। मुदा आब की? जेलर बाबू निशा दिस टुकुर-टुकुर देखैत रहि गेलाह। जेलर केँ ओहि राति निन्न नहि भेलैक। भरि राति टुकुर-टुकुर तकैत रहि गेल। एहि करोटसँ ओहि करोट करैत रहल। मुदा निशा फोंफ काटि रहल छलि। एतेक गहीर निन्नमे ओ कैक दिनक बाद देखाइत छलीह। ताहि बातसँ रघुकेँ खने चिंता होइक,खने मोनमे चैनो लगैक। ओ सोचए लागल- “किछु बात तँ छैक एहि भगतामे जकर असरि सद्यः देखा रहल अछि। आइ कतेको दिनपर निशा चैन छथि, अन्यथा रातिभरि कछमछ करैत बीति जाइत छलनि। अपने तँ परेसान रहिते छलीह, हमरो बेचैन केने रहथि।“

भोर भेलैक। अखबार वला अखबार फेकलकैक। दूध वला दूध दए गेल, काजबाली काज करए आबि गेलि, मुदा निशाक निन्न नहि टुटलनि। बेचारे जेलर बाबूकेँ ड्युटी जेबाक रहनि। ऊपरसँ राति भरिक जगरना छलनि। अपने चाह बनेलाह। निशाकेँ पड़ले देखि नहि रहल भेलनि। बाजि उठलाह-

“ऐ सुनैत छी। हम आफिस जा रहल छी। घर बन्द कए

लिअ।"

निशा करोट बदललीह, मुदा उठि नहि सकलीह। जेलरबाबू फेर किछु बजलाह। केबारकेँ अपनेसँ सटा देलखिन आ आगू बढ़ि गेलाह।

जहल जाइत काल जेलर बाबू केँ जेलसँ फोन आएल। कैदीसभकेँ आइ न्यायालयमे पेशी छलैक। अखन धरि पुलिसक गाड़ी नहि आएल छलैक। पछिलो तारिखपर देरीसँ न्यायालय पहुँचबाक कारण जेलरकेँ जज बहुत फज्झति केने रहैक। मुदा ओ की करैत?बिना पुलिस सुरक्षाकेँ कैदीसभकेँ जेलसँ बाहर तँ नहि लए जा सकैत छल। खैर!कनी कालमे पुलिस सदल-बल पहुँचि गेलैक।

थाना जरेबाक कांडक बिचाराधीन कैदीसभक जमानति अर्जीपर सुनबाइ भेलैक। सरकारी ओकील जमानतिक बिरोध करैत रहलक मुदा जज ककरो नहि सुनलकैक। एगारहो विचाराधीन कैदीकेँ जमानति दए देलक। कैदीसभक प्रसन्नताक ठेकान नहि छल। सालभरिसँ एहि दिनक प्रतीक्षा कए रहल छल। अनेरे जेलमे सड़ि रहल छल। कहबी छैक जे खसी मारि घरबैया खाए आ हत्या लेने वाभन जाए। सएह भए रहल छल। पुलिस प्रशासनपर उच्च अधिकारीसभक दवाव पड़ल रहैक आ ओसभ अपना-आपकेँ बचेबाक हेतु जे जतए जाहि हालतिमे भेटलैक तकरा पकड़ने चलि गेल। सभ चकित रहि गेल। ककरो कोनो सुनबाइ नहि भेलैक। थानाकेँ जराएब भारी परलैक। केलक केओ,भरलक केओ।

सालभरिक बाद सभगोटे गाम पहुँचल तँ सौंसेगाममे प्रसन्नताक वातावरण पसरि गेल। सभ नाच-गान करए लागल।

सत्य नारायण भगवानक पूजा राखल गेल। ढ़ोल, हरमुनिआ, झालि, मृदंग समेत तमाम लोकसभ भगवानक भजन गाबैत पूजा-पाठ संपन्न केलाह। एतेक दिनक बाद लोटन साँझमे जखन पोखरि दिस गेल तँ संयोगसँ हमरे गाछीमे पहुँचि गेल। पुरनाबात सभ बिसरा गेल रहैक। पोखरि दिस बैसले छल कि गाछक फुनगीपरसँ ओहिना ककरो कानबाक अबाज सुनएमे अएलैक। लोटन इएह-ले ओएह-ले भागल। ढ़ेको बान्हबाक होस नहि रहलैक। लोटा कतए खसलैक सेहो नहि बूझि सकल।

लोटन बेसुध पड़ल छल। ओसारापर ओकरा लोकसभ घेरने छल। जकरा जे उपाय फुराइक से करैत छल। मुदा ओ टस सँ मस नहि होइत छल। देह बोखारसँ जरि रहल छल। मुँहसँ लार खसि रहल छल। ककरो किछु नहि बुझा रहल छलैक जे आखिर ओकरा भेलैक की? एहन परिस्थितिमे गाममे एकमात्र समाधान छल-कालू भगता। मुदा ओ गाममे नहि छल। ओहि दिन जमानति भेलाक बाद सभगोटे वापस आबि गेल। कालू कहलकैक जे ओ सिमरिआ जा रहल अछि। गंगास्नान केलाक बादे गाममे टपत। तकरो आइ तीन दिन भए गेल मुदा ओ गाम नहि पहुँचल।

लोटनक हालति खराब भेल जा रहल छल। आङनमे लोक करमान लागल छल कि कतहुँसँ ढेपक वर्षा होमए लागल। की-कहाँ सभ खसए लागल। लोकसभ इएह-ले ओएह-ले भागल। सभक मुँहमे एकेटा गप्प रहैक- “भूतक प्रकोप छैक।" कनीकालमे जखन भीड़ कम भेल आ आङनमे हबा सिहकल तँ लोटन आँखि खोललक।

घरक ऊपरसँ मखना जा रहल छल। लोटनकेँ देखि कए

हँसल आ मोने-मोने बड़बड़ाइत आगू बढ़ि गेल- "बँचि गेलह।"

ओहि दिन मखना यमलोक खाली हाथ लौटि गेल। यमराजक ओतए पेसी भेलैक। मखना थर-थर कपैत ठाढ़ छल कि यम महराज बमकलाह-

" लोटन लग जेबाक की औचित्य छल?"

"गलती भए गेलैक सरकार!"

“की सरकार, सरकार कए रहल छैं? एहि तरहेँ तोहर काज नहि चलि सकैत छौक। सावधान भए जो।" यमराजक एहन सख्त रुखि देखि मखना काँपि गेल।

यमराज खतिआओन मंगओलाह तँ स्पष्ट भेल जे एखन तँ निशाक प्राण खिचबाक रहैक। एहन भारी गलती आखिर भेल कोना? ई सभ विचार-विमर्श चलिए रहल छल कि मखना भागल-भागल यमराजक दोसर पत्नी रेखा लग चलि गेल। ओकरा एना अफसिआँत देखि ओ पुछलखिन- “बात की अछि? एना किएक हाँफि रहल छह?"

मखना हाथ जोरि यमराज दिस इसारा केलक। ताबते यमराजजी ओतहि आबि गेल छलाह।❑

६

ओहि राति निशा भरि राति कुहरैत रहलि। रहि-रहि कए विचित्र अबाज निकालए लगैक। जेलर परेसान भए गेल। ओकरा

कालू भगता ध्यानमे अएलैक। कालूक भगतै असरदार भेल रहैक। निशामे चमत्कारिक परिवर्तन ओ आनएमे सफल भेल रहए। मुदा आब तँ ओ चलि गेल छल। किछु पता-ठेकाना सेहो नहि देने छलैक। की केना करए से जेलर बाबूकेँ फुरेबे नहि करैक। पड़ोसमे एकटा बंगाली डाक्टर रहैक। ओकरासँ पूर्व परिचय रहैक। दौड़ल-दौड़ल ओ बंगाली डाक्टरकेँ बजा अनलक। बेरि-बेरि आला लगा कए ओ देखैक मुदा सभ चीज ठीके बुझाइक। रक्तचाप सामान्य छलैक, हृदयक धड़कन सेहो ठीक रहैक, होसोमे रहैक तखन समस्या की रहैक? ओहो भुतिआ गेल। किछु नहि बूझि सकल। कहलक-

"ई तँ बड़ ओझराएल मामिला लगैत अछि। एकर तँ सभ किछु सामान्य लगैत छैक, तखन एकर व्यवहार एहन किएक भए जाइत छैक?"

जेलर बाबू की कहितैक? बात-बातमे कालू भगताक चर्च भए गेलैक। बंगाली डाक्टरक माथा ठनकल। ओकरा भूत-प्रेतमे विश्वास नहि छलैक मुदा जे सद्यः देखि रहल छल तकर की समाधान दैत? ओकर सभटा ज्ञान हरा गेल छलैक। कहलकैक- "हम हारि गेलहुँ जेलर बाबू। एहन मरीज आइ धरि नहि देखने छलिऐक। एकरा कोनो बड़का डाक्टर लग लए जाउ। मामिला बहुत ओझराएल बुझा रहल अछि। "अपन ध्यान राखब ।" -से कहि ओ बिदा भए गेल।

जेलर बाबू माथ पकड़ि कए बैसि गेल। बंगाली डाक्टरकेँ जाइते निशाक चिकरब-भोकरब फेर जोर पकड़लकैक। जोर-जोरसँ मूड़ी हिलाबए लागलि। जेलरकेँ देखिते केकिआए लागैत

छलि। जेलर चिंतासँ ततेक परेसान भए गेल जे लगैक जेना माथा फाटि जाएत। भोर होमए पर छल। कौआ डाक देलक। फरीच भए गेल रहैक। जेलर बाबूकें चाहक तलब धेलकैक। चाह के बना कए दितैक? घरनी बेसुध पड़ल रहैक। डाक्टरो किछु नहि कए सकल। आओर ओझरा कए चलि गेल। चाहक अमल ओ नहि रोकि सकल। अपनेसँ चुल्हा पजारलक। केदलीमे पानि,दुध,चाहक पत्ती,चिन्नी सभ एकहि बेर धए देलक आ आँचकें तेज कए देलक। दूइए मिनटमे चाह उफनाए लगलैक। जाबे साकंछ होइत-होइत ताबे आधा चाह उफनि कए खसि पड़लैक। कहुना कए बाँचल चाहकें कपमे धेलक आ पीबाक हेतु तत्पर भेल कि बाहर ककरो अबाज सुनेलैक।

"जय भवानी!जय भवानी!”

जेलर बाबू चाह लेने घरक फटक खोलि कए बाहर भेलाह।

"ई तँ कालू लागि रहल अछि? मुदा चिन्हा नहि रहल अछि। एकर चालि-ढ़ालि एकहि दिनमे एतेक कोना बदलि गेलैक?"

फेर सोचलक जे भए सकैत अछि जे धोखा भए रहल हो। राति भरिक जगरनाक कारण माथामे दुबिधा भए गेल हो। तेँ पुछलकैक-

"अहाँ के छी? ककरासँ भेंट करबाक अछि?"

एतबा सुनतहि ओ चिकरए लागल-

"बूड़ि कहाँकें? एकहि दिनमे बिसरि गेलह। तेँ तँ तोहर ई हाल छौक।"

एतबा बाजि ओ अपन तृशूल झमकओलक आ कमंडलसँ

जल निकालि जेलर बाबूक ऊपर फेकए लागल आ कहलक-

“अरवने तोरा बुझेतह जे हम के छी।"

जेलर बाबू चाह पिनाइ छोड़ि दंडवत भए गेल।

“गलती भए गेल। हम अहाँकेँ नहि चिन्हि सकलहुँ। मुदा एकहि दिनमे अहाँक रूप एतेक बदलि गेल?"

“खबरदार! जे हमर रूप-रंग पर टोका-टाकी केलह। तोहर घरबालीक जान जा रहल छौक आ तूँ झौहर खेला रहल छैं?"

"झौहर? राति भरि जागल छी। डाक्टरकेँ सेहो बजओने रहिऐक। मुदा किछु फएदा नहि भेलैक उल्टे आओर मोन खराब भए गेलैक। डाक्टरो थाकि कए चलि गेल।"

"मोसकिलसँ ई बचलौक अछि। मरवना यमपाश लए घुमि रहल छौक। सम्हरि जो।"

"की कहलिऐक? यमपाश..। बाप रे बाप...। आब की होएत? ई मुष्टंग के अछि?"

"सभटा तोही बूझि जेबही तँ भगता की करतैक?"

"कहुना कए एकर जान बचा दिऔक। जे कहब से करब।"

"बहुत देरी भए गेलौक। मोसकिल काज लागि रहल अछि।"

ई सभ दुनू गोटेमे गप्प भइए रहल छल कि जेलर बाबूक चारपर किछु बिचित्र सन अबाज भेलैक। ओ घर दिस दौड़ल। निशा बेहोस छलैक। छाती दिस तकलक। ऊपर-नीचाँ भए रहल छलैक। साँस चलि रहल छलैक। आब तँ ओ ठोहि पारि कए कानए लागल।

जेलर बाबूक कानब सुनि कए कालू भगता अन्दर आबि गेल आ ओकरा चार दिस इसारा केलकैक। मुदा जेलर बाबूकेँ किछु नहि देखा रहल छल। मुदा कालू साफे देखि रहल छल। मखना यमपाश फेकए हेतु तैयार छल मुदा ओकरा कोडवर्डे बिसरा गेल छलैक। यमपाश खुजिए नहि रहल छल। घामे-पसिने ओ परेसान छल। ओकर ई हाल देखि कालू भगताकेँ नहि रहल गेलैक। ओ चिचिआ उठल- "तोरा केओ आओर नहि भेटि रहल छह जे वारंबार एहीठामक चक्कर लगा रहल छह?"

"तूँ हमरा लोकनिक कारबारमे हस्तक्षेप केनिहार के?"

एतबामे मखनाकेँ फोनपर घंटी बाजए लागल। देखैत अछि जे फोनमे लिखल अछि- "यमराज"

ओकर सीटीपीटी गुम रहैक। कोडवर्ड बिसरा जेबाक कारण यमपाश चलि नहि सकलैक आ निशाक प्राण खिचबाक समय बीति गेल। आब की होएत? मखना घामे-पसीने भीजि गेल छल। ताबे ओकर मोबाइलक घंटी कैक बेरि बाजलैक। ओकरा ऊपर बजाहटि भए गेलैक। ओ लंक लागि कए भागल। ई सभ कालू भगता देखि रहल छल। आ भभा कए हँसए लागल।

"फेर ई बँचि गेल... ।"

भेलैक ई जे कोडवर्ड बिसरि गेलाक बाद मखना गलत-सलत कोड लगाबए लागल जाहिसँ यमलोकक नेटवर्क जाम भए गेलैक। यमलोकमे आपत्तिकालीन घंटी घन-घनाए लागल। यमराज तँ पहिनेसँ ओकरासँ तमसाएल छलाहे। एहि बेरक घटनाक बाद तँ ओ किछु करएपर अड़ल रहथि। मुदा जहन घैलक पेनी फुटल

होइक तँ पानि अटकत कोना? इएह हाल छलनि यमराजक। मखना छल फेरल लोक। ओ यमराजक पत्नीकेँ तेहनक पोटने छल जे यमराज फिस्स भए जाइत छलाह। एहू बेर इएह भेल। ओ सोझे यमपत्नी रेखा लग पहुँचल आ सिसकी भरए लागल।

की भेल?की भेल?" यमपत्नी रेखा पुछलखिन।

“की कहू? यमराजकेँ अहाँपर सक रहैत छनि। ताहि चलते हमरो जान लेबए पर लागल छथि। कोनो मौका बाम नहि जाए दैत छथि।"

"भेलैक की, से तँ बाजू?"

मखना सभटा बात नून-तेल लगाए कहि देलक आ इसारा पबतहि ओतएसँ घसकि गेल। यमराज पनपिआइ करए घर अएलाह तँ देखैत छथि जे यमपत्नी जमीनपर अखरेमे सुतल छथि। मुँह झपने छथि आ कानि रहल छथि। यमराजजी मोसकिलमे पड़ि गेलाह “आब की भेल?”

"रेखा! रेखा!" कैक बेर अबाज देलखिन मुदा कोनो उत्तर नहि भेटलनि। मामिला गड़बड़ाइत देखि ओ रेखाक सिरमामे बैसि हुनका मनबएमे लागि गेलाह। मखना घरक खिड़की लग नुका कए सभटा दृश्य देखि रहल छल आ मोने मोने प्रसन्न भए रहल छल।

"चललाह हमरे ठीक करए। आब सम्हारथु ..." बड़बड़ाइत छल कि यमराजक नजरि ओकरापर पड़ल। ओ चिकरि उठलाह-

"दुष्ट...सावधान... ।"

ई सुनितहि मखना इएह-ले ओएह-ले भागल।❑

७

मास्टर साहेबक संग भेल मारि-पीटक कए साल बीति गेल मुदा पुलिस ककरो पकड़ि नहि सकल। असलमे थानाकांडमे सभ तेना ने ओझरा गेल जे ककरो एहि मामिलाक सुधि नहि रहलैक। फेर मास्टर छलाह मामूली आदमी। आगू नाथ ने पाछू पगहा। ककरा की कहितथि? जान बाँचि गेलनि सएह बहुत। फेर अपन काजमे लागि गेलाह। इसकूल जाथि आ विद्यार्थीसभकेँ खूब मेहनतिसँ पढ़ाबथि। हुनका ताहिबातसँ इलाकामे यश रहनि। गाम-गामक विद्यार्थीसभ पढ़बाक हेतु हुनकर डेरा पर आएल करथि। ककरोसँ पाइ नहि लैत छलखिन।

हम मैट्रिकक परीक्षा प्रथम श्रेणीमे पास भए गेल रही। मुदा आगू की कएल जाए से फुरेबे नहि करए। भितर इच्छा रहए जे आगू पढ़ी मुदा तकर कोनो जोगारे नहि छल। घरक हालति तेहने छल तहन तँ रहि गेलाह मामा। ओहो सालभरि इलाजक चक्करमे परेसान छलाह। आब किछु स्थिर भेलाह। गामक लोक सभ से जमानति पर छुटि कए आबि गेल छल।

एकदिन अहिना बैसल रही की मामा कहलाह- “श्रीकांत हमरा मोन होइत अछि जे तूँ आगू पढ़ाइ करह। सालभरि समय तँ तोहर बर्वादे भए गेलह। मुदा आब हालति ठीक अछि। हमरा जे पार लागत से मदति करबे करबाह। संगे गामोसँ किछु मदतिक जोगार करबाक प्रयास करब।"

"हम तँ स्वयं पढ़बाक इच्छुक छी मुदा अहाँक हालति देखि कए साहस नहि भेल।" -हम कहलिअनि।

"कोनो बात नहि। जे बीति गेलैक से बीति गेलैक। आगूक

सोचल जाए। काल्हि हम दुनू गोटे पुबारिगाम चलब। देखैत छी, ओतए की हाल अछि।"

"ठीक छै।"❑

८

मामा संगे हम अपन गाम पुबारि टोल पहुँचलहुँ। हमर मामागाम पछबारि टोल हमर गामसँ सटले छल। पैरे दस मिनटक रस्ता छलैक तथापि ओतए कतेको सालक बाद जा रहल छलहुँ। माता-पिता नहि रहलासँ गामक कोनो आकर्षण नहि रहि गेल छल। हमर जथा-पात दिआदसभ हथिआ चुकल रहथि। ओसभ निश्चिन्त रहथि जे भने ई चलि गेल। गाम पहुँचि कए अपन फूसक घरकेँ ताकए लगलहुँ। नामो निसान खतम छल।

घराड़ीकेँ चारूकातसँ घेरि कए तरकारी रोपि देल गेल छल। मामा संगे हमरा देखि हमर काका मुँह घुमा लेलाह। जेना कोनो मतलब नहि होनि। हमर घरक लगीचमे नव-नव घर बनि गेल छल। कहि नहि के सभ ओतए आबि कए बसि गेल छलाह आ कि पुरने घरकेँ फेरसँ बनाओल गेल छल? तरह-तरहकेँ बातसभ मोनमे अबैत रहल। जखन काका नहिए टोकलाह तँ हमही आगू बढ़लहुँ- "काका गोर लगैत छी"

"के छी?"

"अहाँक भातीज, श्रीकान्त।"

"एतेक दिन पर कतएसँ ऊपर भेलह?"

से कहि तेना ने मुँह घुमओलथि जेना हमरासँ कोनो बहुत पैघ

अपराध भए गेल हो। मामा सभटा बात देखि-सुनि रहल छलाह। हुनका तँ काका टोकबो नहि केलखिन। एहन हालतिमे की उमीद राखल जा सकैत छल? तथापि हमर मामा कहलखिन- "हमरा नहि चिन्हलहुँ? हम छी हरि, श्रीकान्तक मामा।"

"चिन्हव किएक नहि, मुदा अहाँ तँ आएब-जाएब बंद कए देलहुँ, कतेक साल पर आइ कोना मोन पड़लहुँ?"

हमर काका महराजक जेठरैयत रहथि। महराजक सिपहसलारसभसँ जान-पहिचान रहनि। पुलिसमे सेहो जान-पहिचान छलनि। ताहिबातक बहुत घमंड रहनि। जकरे -तकरे पुलिस, थानाक धमकी दैत रहितथि। हुनकर नाम छलनि देवीकान्त मुदा गौंवासभ देबू कहनि। ओना ओ गाममे चर्चित छलाह तकर प्रमुख कारण रहैत जे ओ किछु झार-फूक सेहो करथि आ कालू भगतासँ बहुत गहींर दोस्ती रहनि। हमर पिता तँ कमे बएसमे मरि गेलाह। हम नेने रही। जे किछु चास-बास छल सभ हमर काका दखल कए लेलाह आ तेहनक निश्चिन्त भए गेलाह जेना हम जीविते नहि होइ।

कनी काल हम आ मामा अहिना ठाढ़े रही की कालूभगता कतहुँ सँ आएल।

"मामा गोर लगैत छी।"

"नीके रहह। कतएसँ आबि रहल छह?"

"अहाँकेँ तँ सभ बात बूझले होएत।"

"की बात?"

"साल भरिसँ जहलमे बंद छलहुँ। मोसकिलसँ छुटलहुँ अछि।"

"बहुत दिनपर भेंट भेल अछि।"

“आउ ने, चैन सँ बतिआएब।” -से कहि कालू भगता अपन घर दिस बढ़ि गेल। हम आ मामा ठाढ़े रही। काका बैसबो लेल नहि कहलाह। उल्टे मोनमे तामस रहनि जे हमसभ किएक अएलहुँ? जतए छलहुँ ततए छलहुँ,एहिठाम आबए के कोन काज?

जखन काका अपने किछु नहिए पुछलाह तँ हमहि कहलिअनि-

“मैट्रिक पास कए गेलहुँ। सालभरिसँ बैसल छी। सोचि रहल छी जे आगू पढ़ाइ हेतु नाम लिखाबी। मुदा टाकाक जोगार नहि भए रहल अछि।"

एतेक बात सुनितहि ओ पाछू घुमलाह आ लोटा उठओने कलम दिस बिदा भए गेलाह। कोनो उत्तर नहि देलाह। किछु आश्वासन नहि। हमर मामाकेँ नहि रहल गेलनि। ओ तमसा कए बजलाह-

"अहाँक भातिज किछु कहि रहल छथि।"

"से की?"

"ओकर हिस्साक खेत छैक तकरा बेचि कए ओकरा मदति कए दिऔक।"

"कोन खेतक गप्प कए रहल छी?"

"पैत्रिक खेत-पथारमे आधाक ओहो हकदार अछि। एखन ओकरा जरुरत छैक, पढ़ाइ करक छैक। अहाँकेँ स्वयं सोचबाक चाही। "

एतेक बात ओ बजने छलाह कि हमर काका हाथसँ लोटा हुनकापर फेकलाह। रच्छ भेल जे ओ माथ छिप लेलाह नहि तँ पता

नहि की होइत? मामाकेँ नहि रहल गेलनि। चिकरए-भोकरए लगलाह। ताबते हमर पितिऔत लोटन सेहो आबि गेल आ मामाकेँ गट्टा धए दरबाजा परसँ बाहर जेबाक हेतु संकेत केलक। ओहिठाम कतेको गोटे जमा भए गेल छलाह, मुदा केओ किछु नहि बाजल। हालति काबूसँ बाहर होइत देखि हमहीं मामाकेँ शांत केलहुँ आ वापस मामागाम बिदा भए गेलहुँ।

गामसँ बहराइत अपन गाछी बाटे जाइत रही की माएक सारा देखाएल। पैर थकमका गेल। आँखिसँ नोर झर-झर खसए लागल। मामा बूझि गेलाह। हमर हाथ पकड़ि लेलथि आ कहए लगलाह-

"चिंता नहि करह। तोरा भगवान मदति करथुन। "

एतबा बात ओ कहने छलाह कि सिनुरिआ गाछ हिलए लागल आ धप्प दए हमर दहिना पैर लग किछु खसल। मामा रुकए कहलाह-ताबे तँ हम ओकरा उठा चुकल छलहुँ। पोटरी कसि कए बान्हल छल। ऊपरसँ अबाज भेल-

"एहि पोटरीकेँ मामागाम पहुँचि कए खोलिअह।"❑

९

हम दुनू गोटे पोटरीकेँ कान्हतर दबने डेगारि कए अपन टोल दिस जाइत छलहुँ कि फटकिएसँ कालू भगता अबाज देलकनि-

"मामा! मामा! बिना भेंट केनहि चलि अएलहुँ।"

मुदा मामा अन्ठा देलखिन आ आगू बढ़ैत रहलाह। कनीके कालमे अपन दरबाजापर पहुँचलाह। ओहि पोटरीकेँ अन्दर लए

गेलाह। दुनू गोटे मिलि कए ओकरा खोलए लगलहुँ। पोटरि खोलितहि चम-चम करैत कैटा सोनाक सिक्कासभ देखाएल। मामा तँ डरा गेलाह जे ई सभ आएल कतए सँ मुदा हमही हुनका बुझा-सुझा कए ओहि सिक्कासभकेँ सम्हारि कए रखलहुँ। बीसटा सोनाक सिक्का-सोचिए कए मोनमे आश्चर्य होइत छल। हम कहलिअनि-

"ई माएक आशीर्वाद थिक।"

“आब किछु सोचबाक काज नहि। तुरंत अपन नाम कालेजमे लिखा लएह।"

मामाक बात हमरो पसिन्द भेल। ई गप्प-सप्प करिते छलहुँ कि कालू भगता मामाक ओहिठाम पहुँचि गेल। मामा मोने-मोन सोचए लगलाह- "ई किएक पछोड़ केने अछि?"

दरबाजापर कालू जोर-जोरसँ अबाज लगा रहल छल-

"बिना भेंट केनहि चलि अएलहुँ। एतेक दिनपर भेंट भेल छल। बहुत रास गप्प-सप्प करबाक छल।"

"की कहैत छी? देबु ततेक हल्ला करए लगलाह जे ओहिठामसँ जल्दीए चलि अएलहुँ।"

"बात की छैक?"

“बात की रहतैक? कहलिअनि जे श्रीकांत पढ़ए चाहैत छथि। ताहि हेतु किछु टाकाक जोगार करक छैक से हुनकर हिस्साक जमीन बेचए चाहैत छी। एतबा सुनितहि ओ हमरा ऊपर लोटा फेकि देलाह। संयोगसँ बँचि गेलहुँ नहि तँ कपार दू टूक भए जाइत।

"एहि मामिलामे अहाँ एसगर नहि छी। हमसभ अहाँक संग छी।"

कालू भगताकेँ बैसबाक आग्रह केलहुँ। ताबे चाह बनि गेल छल। चाह पीबैत-पीबैत ओ अपन खिस्सासभ कहए लागल।

कालू गप्प-सप्प शुरुए केने छल कि ओकर मोबाइल बाजए लगलैक।

"के छी?'

"जेलर बाबू।"

" सभ ठीक अछि ने?"

"ठीक कहाँ अछि? निशाकेँ रहि-रहि कए चक्कर आबि जाइत छैक। कोनो इलाज असरि नहि कए रहल छैक।"

"हम तँ गाम आबि गेल छी।"

"किछु करिऔक, नहि तँ ओकर जान नहि बाँचत।"

"मुदा हमर अखन गाम छोड़ब संभव नहि अछि कारण दशमीक समय आबि रहल छैक। भगवतीकेँ जगेबाक छैक।"

"कोनो उपाय करिऔक।"

जेलर बाबूक हालति बहुत पातर भए गेल छल। कोनो रस्ता नहि देखि कालू कहलकैक- "एकहिटा उपाय बुझा रहल अछि।"

"की?"

"हुनका संगे अहाँ हमरा ओतए चलि आउ।"

"ठीक छैक। हम आइए साँझ धरि पहुँचि रहल छी।"

यद्यपि कालूक छिज्जा जेलर बाबूकेँ नीकसँ बूझल रहैक तथापि ओ पत्नीक संगे कालू भगताक ओतए बिदा भए गेलाह। रस्तामे बिलाड़ि रस्ता काटि देलकनि। आब की हएत?

निशाक हालति खराबे भेल जाइत रहनि। वर्षाक समय छल। लोकसभ अपन-अपन घर धेने छल। जकरा तेहने अनिवार्य रहैक सएह बाटपर चलबाक साहस काए रहल छल। पानिक झट्टक बंद हेबाक नामे नहि लए रहल छल। ओहन हालतिमे ओ बससँ पुबारिगामक हेतु बिदा भेलाह। सौंसे बसमे मात्र पाँच गोटे छल। दू गोटे ईसभ एकटा आओर यात्री आ बस चालकक संग खलासी। कनीके काल बस चलल होएत की ओकर इंजन घुर्र-घुर्रक अबाज करए लागल। बाहन चालक कतबो प्रयास केलक मुदा ओ टस-सँ-मस नहि भेल।

सड़कपर भरि-भरि डाँर पानि बहि रहल छल। एहन हालतिमे की होइत? जे हेबाक से भेल। बसक इंजन जाम भए गेल। बस चालक पों-पों कए सीटी बजबैत रहल मुदा केओ कतहुँ मदति हेतु आगू नहि आएल। आब की होएत?

जेलर बाबू भगवान !भगवान! करैत रहलाह।रच्छ एतबे भेलैक जे निशाकेँ ठंड हबा लगलैक। ओ कने-मने सुधरल। जेलर बाबू कालू भगताकेँ फोन लगेलाह। कतबो प्रयास करथि, वारंबार एतबे संवाद आबए-

"नेटवर्क जाम अछि,एखन गप्प नहि भए सकैत अछि।"

रातिक साढ़े न बाजि रहल छल। लोकसभ अपन-अपन घरमे सुतए चलि गेल। वर्षा रुकबाक नामे नहि लए रहल छल। बाहन चालक हाथ बारि देलक जे आब गाड़ी कतहुँ नहि जा सकैत अछि। यात्री चाहथि तँ उतरि जाथि। जेलर बाबू माथ ठोकि लेलाह।

एतबेमे बड़ी जोरसँ ठनका खसल। ततेक इजोत भेल जे

लगैक जेना दिन भए गेल हो। ओही प्रकाशमे बससँ सटले एकटा फूसक घर देखेलनि। ओ निशा संगे उतरि कए ओहि खोपड़ी दिस बढ़लाह। मुदा कतबो प्रयास करथि केओ घरक फट्टक नहि खोलए। बससँ नीचाँ भए गेल रहथि। पानिसँ दुनू गोटे भिज गेल रहथि। घुरि कए बस दिस तकैत छथि तँ बस एकदम खाली। ने बाहन चालक छल,ने खलासी ने ओ तेसर यात्री। असलमे ओसभ महराजक आदमी छल जे महराजक इसारापर निशाक पछोड़ केने रहैत छल। ऐन मौकापर बस खराब कए ठाढ़ कए देलक आ चंपत भए गेल। आब तँ जेलर बाबू डरे थर-थर काँपए लगलाह। हुनका एना डराइत देखि निशा सेहो परेसान भए गेलीह। हारि कए ओ घरक दिस बढ़लाह। घरक अन्दर किछु-किछु अबाज सुनेलनि।

"कनी घर खोलब।"

"के छी?

'हमसभ यात्री छी वर्षामे भीजि रहल छी। कनी केबार खोलू, जाहिसँ हमसभ आश्वस्त होइ।"

मुदा अन्दरसँ किछु उत्तर नहि अएलैक। वर्षा रुकबाक नामे नहि लए रहल छल। दुनूगोटे नीकसँ भीजि गेल रहथि। निशाक मोन खराब भए रहल छलनि। जाड़सँ थर-थर कपैत छलीह। ई सभ देखि कए जेलर बाबूकेँ नहि रहल गेलैक। ओ जोरसँ केबारमे धक्का मारलक। केबार खुजितहि ओ दुनू व्यक्ति की देखलाह की नहि जे बेहोस भए ठामहि खसि गेलाह।❑

१०

प्रात भेने जखन जेलरबाबूकेँ होस भेलनि तँ कोनो अज्ञात स्थानमे पड़ल छलाह। निशाकेँ कतहुँ पता नहि छल। लग-पास केओ छलहो नहि जकरासँ किछु मदति भेटितनि। रातिओमे किछु नहि खेने रहथि। पानिओ नहि पीवि सकल रहथि। भूख-पिआससँ छट-पट करैत छलाह। जखन बुझा गेलनि जे ओहुना मरिए जाएब तँ ओहिठामसँ आगू ससरलाह। कनीके आगू बढ़ल होएताह कि एकटा जुआएल गहुमन साँप छत्र काढ़ने बीच रस्तापर ठाढ़ छल। आब तँ जेलरबाबूक हालति सम्हारसँ बाहर भए गेल। जेलरबाबू छगुन्तामे छलाह। कोनो उपाय नहि सुझा रहल छलनि। ओ ओहिठामसँ वापस भेलाह। कनीके आगू गेल हेताह कि ऐकटा बड़ीटा महराजी सुरंग देखेलैक। एहि कात साँप, ओहि कात सुरंग। जाथि तँ केमहर? हारि कए सुरंगमे पैसि गेलाह।

महराजीसुरंगमे जौँ-जौँ आगू बढ़थि तँ- तँ रस्ता फरीछ होइत गेल। साहस कए ओ आगू बढ़लाह, कोनो आओर उपायो नहि रहैक। ओ आधा घंटा धरि चलैत रहलाह तकर बाद आओर चलबाक साहस नहि भेलनि। देह थाकि कए चूर-चूर भए गेल छलनि। भूख-पिआससँ छटपटा रहल छलाह। ओ ठामहि बैसि गेलाह। ओहिठाम चारूकात मनोरम दृश्य छल। नाना प्रकारक फूल-फलहरीसँ वातावरण मह-मह करैत छल। हरिअर कंचन घास, ठाम-ठाम गुलाब जलसँ सिक्त पानिक फुहारा पड़ि रहल छल। काते-काते सुन्दर-सुन्दर महल बनल छल। दहिना दिस एकटा रमणीय उद्यान देखेलनि। ओ ओमहरे बढ़ल छलाह कि चौकीदार

रोकि देलकनि।

“आब की कएल जाए?"

जेलरबाबूकेँ छगुन्तामे देखि ओ बाजल-

"घबड़ाउ नहि,"

"हम बूझि नहि पाबी रहल छी।"

"अगुताउ नहि। सभटा अपने बूझि जेबैक।"

जेलर बाबू अत्यंत विस्मय सँ ओकर बात सभ सुनैत रहलाह।

“ई के अछि? हम कतए आबि गेल छी?"

ई बात सभ हुनकर मोनमे वारंबार अबैत रहलनि। कनिक दूर आओर गेलापर एकटा बेस टनगर लोक देखाएल। पातर-छितर,गोर दप-दप आ बेस फुर्तिगर। जेलर बाबूकेँ देखिते ओ प्रसन्न भए गेल। हाथसँ बैसबाक इसारा केलकैक। लगैत छलैक जेना कोनो महराजक हबेली होइक। फेर ओ अपने बजलथि- "हमरा चिन्हलहुँ?"

जेलर बाबूकेँ गुम देखि फेर अपने कहलाह-

"हम छी महराजी भगता "।

ओ जेलरबाबूक जलखैक ओरिआन केलक। बहुत भूखल रहथि, धराधर सभटा चट कए गेलाह। थाकल छलाहे,भोजन करितहि हाफी आबए लगलनि आ कनीके कालमे निन्न पड़ि गेलाह।❑

११

महराजक नजरि निशापर बहुत दिनसँ गरल छलनि। जहन जेलरबाबू महराजी हातामे रहब स्वीकार नहि केलाह तँ महराज ई भार महराजी भगताकेँ देलखिन जे ओ कोनो चालि चलए। महराजी भगता मंत्र-तंत्रक प्रयोग कए हुनका ओझरओलक। समाजमे पसरल अशिक्षा ओ अंधविश्वास आगिमे घीक काज करैत छल। गाम-गाम महराजी भगताक आदमीसभ पसरल छल। एक हिसाबे ओसभ महराजक कारपरदाज छल जे हुनक शोषणमे सहायक रहए। कालू भगतो सएह छल। गड़बड़ एतबे भेलैक जे निशा संगे ओ अपने ओझरा गेल।

फरीच भए गेल छल। वर्षा सेहो थम्हि गेल छल। गाममे लोकसभ अपन-अपन रोजी-रोटीमे लागि गेल छलाह। चिरै-चुनमुन अपन खोंता छोड़ि कए स्वछन्द भए आकाशमे उड़ि रहल छलाह। मुदा कालू भगताक मंत्र-तंत्र चलिए रहल छल। ओकर कोरामे निशा अखनो बेहोस पड़ल छलीह। कनीकालमे कालीकेँ गोहरबैत निशाकेँ भरि पाँज पकड़ने उठल। ताबतमे निशाक आँखि खुजलैक। अपनाकेँ एहि परिस्थितिमे देखि कए ओ आश्चर्यचकित छलि। हम एहिठाम कोना आबि गेलहुँ?"

"कालू भगत हँसए लागल। पुछलकैक- "मोन केहन अछि?"

"किएक, हमरा की भेलए? "

"छोड़ू ई गप्प-सप्प। चाह पिबैक?"

"किएक नहि।"

"ठीक छैक, तँ हम करिआ चाह बना रहल छी कारण अखन धरि दुध नहि आएल अछि आ भए सकैत अछि जे आइ अएबो नहि करए।"

"कोनो बात नहि।"

मंद-मंद बहैत हबाक झोंकासँ निशाक चेतना क्रमश: सक्रिय भए रहल छल। ओ अखिआसि रहल छलि जे कतए छथि?मुदा ओ ओहि स्थानकेँ चिन्हि नहि सकलीह। किछु-किछु मोन पड़ि रहल छलैक। ताबतमे कालू भगता भफाइत चाह लेने आएल। चाहक चुस्की संग जेना ओकर माथाक तेजी सेहो बढ़ैत गेलैक। ओकरा ध्यानमे अएलैक जे जेलर बाबू तँ ओकर संगे छलैक,फेर ओ कतए गेल?रातुक प्रलयंकारी दृश्य आ भिजल जेलरबाबू ओकरा मोन पड़ए लगलखिन।

"रघु कतए छथि?"

“अहाँ एहि चक्करमे किएक पड़ल छी? हम छी ने?"

निशाकेँ कालूक नेतपर सक होमए लगलैक। सोचए लागलि-

"कहीं इएह किछु गड़बड़ तँ नहि केलक?"

मुदा किछु बाजलि नहि। ताबत चाह खतम भए गेल छल। कालू मुस्की देलकैक आ निशाकेँ हाथ पकड़ि भितरक कोठरीमे लेने चलि गेल।

कालू अपना भरि बहुत प्रयास केलक जे निशाक मोनसँ जेलर बाबू हटि जाइक। जखन निशाक चिंता बढ़िते गेल तँ कालू जोर-जोरसँ किछु-किछु बड़बड़ाए लागल। ओकर आँखि लाल-लाल ओ

भयाओन भए गेलैक। निशा चेतनासून्य भए चौकीपर खसि पड़लि।❑

१२

मामा हमरा संग कए सोनाक सिक्का वला पोटरीकेँ राजपुरा लेने चलि गेलाह आ नामी सोनार सभकेँ देखए देलखिन। ओसभ पोटरीमे राखल सोनाक सिक्का देखि कए दंग छल।

"मुदा तोरा ई सोनाक सिक्कासभ भेटलह कतए? ई तँ किछु दिन पहिने महराजक घरसँ हरा गेल छल। महराज एकरा तकने फिरि रहल छथि। सौंसे शहरमे डिगडिगिआ पिटाओल गेल अछि जे हराएल सोनाक सिक्काक भांज देनिहारकेँ महराज स्वयं पुरस्कार देथिन।"

"हम से सभ नहि जनैत छी। ई हमरा भगवान देलाह अछि।"

"मिथ्या खिस्सा गढ़ि रहल छह। एखने महराजक पुलिस पकड़ि लेतह तखन बूझिअहक।"

“तूँ हमर बात पर विश्वास करह। हम ककरो सोनाक सिक्का नहि जनैत छी। ई हमर अछि, एहिमे कोनो सक नहि हेबाक चाही।

"तँ थम्हह, हम महराजक सिपाहीकेँ खबरि कए दैत छिऐक। तोरा संगे फाँसीपर के चढ़त?”

सोनार महराजक कारपरदाजकेँ फोन कए देलक। औ बाबू! देखिते-देखिते सोड़हि महराजी पुलिस एकट्ठा भए गेल आ ओकरा संग प्रश्नोत्तर करए लागल।

"तोहर की नाम छह?"

"हरि"

"घर कतए छह"

"पछबारिगाम। “

बहुत घोंघाउज होइत देखि हम दोकान दिस बढ़लहुँ। देखैत छी जे सिपाहीसभ मामाकेँ टंगने जा रहल अछि। सोनाक सिक्का वला पोटरी सेहो हुनकासँ छिन लेलक अछि। हम बहुत चिकरलहुँ, मुदा ओसभ ठेङा देखा कए हमरा चुप करा देलक आ मामाकेँ लदने-फदने महराज लग लेने चलि गेल। पाछू-पाछू हमहुँ ओतए पहुँचलहुँ।

प्रात भेने मामाकेँ हथकड़ी लगाए महराजक दरबारमे आनल गेल। दसटा महराजी पुलिस आगू-पाछू घुमि रहल छल। लगैक जेना कतेक भारी अपराधीकेँ पकड़ल गेल अछि। महराजक दरबार लागल। बीचमे सिंघासनपर महराज सुशोभित भए रहल छलाह। दुनूकात नाना प्रकारक लोकसभ उत्सुकतासँ महराजक श्रीमुखसँ न्यायक प्रतीक्षा कए रहल छल। महराजाधिराजक स्वागत हेतुसभ केओ ठाढ़ भए गेलाह। दूटा भाँट मनोयोगपूर्वक महराजक जयगान करए लगलाह-

"जय हो ! जय हो !सरकार के जय हो...

दुश्मन के क्षय हो, सभ कियो निर्भय हो

सभकिछु मधुमय हो, सभगोटै सुखमय हो

अगबे जय-जय हो..!

बल बढ़ै, आयु बढ़ै,बुद्धि बढ़ै, विद्या बढ़ै

चौगुन्ना संपत्ति बढ़ै,विपक्षी के विपत्ति बढ़ै

खेतमे अन्न बढ़ै, तिजोरीमे धन बढ़ै

थपड़ी वला जन बढ़ै,बात वला मन बढ़ै

गौरव छन-छन बढ़ै, यात्रा हबाइ बढ़ै

यश के पतक्खा नभमे उड़ै...

जय हो! जय हो!

सरकार के जय हो!

अगबे जय जय हो..!

तकर बाद महराजसँ न्यायसभाक कार्यक्रम प्रारंभ भेल। एकटा दरबान जोरसँ अबाज देलक-

"महराजाधिराजक जय हो! सरकारक आज्ञा हो तँ न्यायसभाक कारवाइ प्रारंभ हो।"

"आज्ञा अछि।"

तकरा बाद सभसँ पहिने हमर मामाकेँ महराजक सामने उपस्थित कएल गेल। महराज ताबे पान खा रहल छलाह। पान थूकबाक हेतु पिकदानी लए एकटा कारपरदाज दौरल। ततेकटा पान छल जे महराजक मुँहसँ अबाजे नहि निकलि रहल छल। पानकेँ थुकरि ओ पुछलाह-

"ई के थिक आ एकर की अपराध अछि?"

ई सुनितहि पेसकार बाजए लागल- “श्री मान! ई महान चोर अछि। अहाँक रनिबाससँ सोनाक सिक्काक पोटरी चोरा लेलक।

आइ कतेको दिनसँ ओहि पोटरीक खोज भए रहल छल आओर ई बदमास ओकरा सोनारक हाथे बेचबाक फिराकमे छल कि पकड़ल गेल। ओ तँ सोनार इमान्दारी केलक जे ई बदमास पकड़ल गेल आ सोनाक सिक्का सेहो वापस भए गेल नहि तँ सत्यानाश भए गेल रहैत। एकर अपराध अक्षम्य थिक ताहि हेतु एकरा मृत्युदंड देल जाए।"

महराज हमर मामा दिस तकलाह। फेर पुछैत छथि-

"की बात छैक से सच, सच बाजह।"

"सरकार अपनेसँ किएक किछु झूठ कहब। अपने देवता थिकहुँ। हम कोनो चोरी नहि केलहुँ। हमरा तँ ई पोटरी भूतहा गाछी लग भेटल। हम अपन भागिन संगे अबैत रही कि ई पोटरी पाकल आम जकाँ भट दए खसल। हम ओहि पोटरीकेँ उठा लेलहुँ। खोलैत छी तँ बीसटा सोनाक सिक्का भेटल। हम बहुत प्रसन्न भेलहुँ। भेल जे भगवान हमर भागिनक पढ़ाइ-लिखाइक खर्चाक व्योत कए देलाह अछि। हम अपन भागिन संगे एहि पोटरी लए राजपुराक सोनार ओतए गेल रही कि ओ सोनार महराजी पुलिसकेँ बजा अनलक आ तकर बाद जे भेल से तँ अपनेकेँ बुझले अछि।"

महराज ई बात सुनितहि हमरा बजओलथि। हम नवालिग ठहरलहुँ। मामाक परेसानीसँ मोनमे बहुत दुख छल। महराजक सामने जाइते ठोहि पारि कए कानए लगलहुँ। महराजकेँ दया आबि गेलनि। ओ बजलाह-

"तूँ के छह बालक? एना किएक कानि रहल छह?"

हम महराजकेँ सभटा बात सच-सच कहि देलिअनि।

प्रमाणस्वरुप अपन मैट्रिकक प्राप्तांको देखवए देलिअनि। ई सभ देखि सुनि महराजकेँ मोन डोललनि। ओ न्याय पुरुष भए ठाढ़ भए गेलाह। हुकुम देलथि- "ई व्यक्ति एकदम निर्दोष अछि। एकरा तुरंत रिहा कएल जाए संगहि ई पोटरी सभटा सोनाक सिक्काक संगे एकरा वापस दए देल जाए। एहि बालककेँ राजकोषसँ पढ़ाइ-लिखाइक व्यवस्था कएल जाए। संगहि हिनका दुनू गोटेकेँ रहबाक हेतु घर सेहो राजक हातामे देल जाए।"

"महराजक आदेश सुनि सभ बाजि उठलाह-महराजक जय हो! अपने साक्षात अवतारी पुरुष छी!"

महराजक आज्ञा सुनि कए मामा अबाक भए गेलाह। ओ दंडवत भए गेलाह आ बजलाह- "श्री मानक जय हो! हे देवपुरुष! हमरा ई सोनाक सिक्का नहि चाही। हमरा नहि बुझल छल जे ई सिक्का रनिबासक अछि। हमरा एहि सिक्कासभकेँ वापस करबाक आज्ञा देल जाए। अपने हमर भागिनक शिक्षाक व्योंत कइए देलहुँ अछि। एकर अतिरिक्त हमरा किछु नहि चाही।"

ओहिठाम उपस्थित समस्त सभासद लोकनि हमर मामा दिस छगुन्तामे ताकए लगलाह। हमरा तँ बकोर लागि गेल। हमर मामाक बात सुनि महराज दंग रहि गेलाह आ बजलाह- "हम ई सोनाक सिक्का एकहि सर्तपर लेब जे अहाँ एहि राजक राजमंत्रीक पद स्वीकार करी।"

चारूकात महराजक जय-जय होमए लागल। मामा सहर्ष महराजक राजमंत्री बनए हेतु स्वीकृति दए देलथि। कहबी छैक - "जाको राखे साइयां मार सके न कोय।" सएह भेल। कहाँ सिपहसलारसभ फाँसीक हेतु सोचि रहल छलाह, कहाँ ओ राजमंत्री

भए गेलाह। इएह थिक नियति।

सभा विसर्जित भए गेल। चारूकात एहि घटनाक चर्चा होमए लागल। हमर मामाकेँ राजमंत्री बनओलासँ किछु सभासद बहुत परेसान रहथि। न्यायसभाक विसर्जनक बाद ओसभ बाहर निकलैत काल आपसमे चर्च करथि जे महराजपर भांगक निशा चढ़ि गेल छलनि नहि तँ एहन घाघ चोरकेँ कतहुँ राजमंत्री नहि बनबितथि। मुदा सामने के बाजत?

महारानी अपन हेराएल सोनाक सिक्कासभ पाबि गद-गद भए गेलीह आ महराजाकेँ बहुत मानलखिन। महराज दहो-बहो रहथि। आनन्दसँ गद-गद रहथि जे रानी एतेक प्रसन्न भेलीह। महराज सोचथि- "बाह रे हम।"

रानी कहलखिन- "हम ओहि आदमीसँ भेंट करए चाहब।"

"किएक ने। हे लिअ, ओ अहाँक द्वारपर ठाढ़ छथि।"

"से केना भेलैक?"

"हमरा अपने मोनमे रहए जे अहाँकेँ एहि आदमीसँ भेंट कराएब तेँ ओकरा पहिने समाद दए देने रहिऐक।"

महराज घंटी बजओलथि आ हमर मामा ओतए हाजिर भए गेलाह। मामाक देखिते जेना रानीकेँ करेंट लागि गेलनि। सोचए लगलीह- "ई आदमी कतेक सुन्दर अछि। कोनो नीक खानदानक व्यक्ति लागि रहल अछि।"

रानी हमर मामाकेँ बहुत धन्यवाद देलखिन आ राजाज्ञाक अनुसार राजमंत्रीपद शीघ्र ग्रहण करबाक आग्रह केलखिन। हमर मामाक प्रसन्नताक वर्णन करब मोसकिल। इलाकामे गर्द भए गेल

जे हरि राजमंत्री भए गेलाह अछि।

महराजक आज्ञाक अनुसार हमरा लोकनिक रहबाक हेतु महराजक हातामे विशाल भवनक व्यवस्था भेल। सेवादारसभ सेहो नित्य अपन काजमे लगा देल गेलाह। देखिते-देखिते हमर मामाक प्रभाव राजमहलमे ततेक पसरि गेलनि जे पुरान-पुरान चापलूससभकेँ अपन भविष्यपर ग्रहण लगैत बुझाए लगलनि। मुदा कइए की सकैत छलाह?बहुत मोन हेतनि तँ दू कओर बेसी खा लेताह। बाह रे समय! की सँ की भए गेल। काल्हि धरि जे आदमी घोर संकटमे छल से आइ राजमहलक सहभागी भए गेल।

रानीकेँ जखन कोनो खास काज होइतनि तँ हमर मामाकेँ बजबितथि। देखए सुनएमे तँ ओ सुन्नर छलाहे। राज महलमे रहि नित्य नीक-निकुत खाइत-पीबैत आओर चमचम करए लगलाह। रानीकेँ हुनकासँ गप्प-सप्प करबामे नीक लागए लगलनि। कोनो-ने-कोनो बहन्ना ताकि हमर मामाकेँ बजा लितथि आ घंटो गप्पमे लसकल रहितथि। महराजक जासूससभ ई बात महराजकेँ पहुँचबैत रहैत छलनि मुदा हुनका कहाँ फुरसति रहनि जे एहिबात सभ पर ध्यान दितथि। फेर ओ तँ अपने तरह-तरहकेँ लफासोटीमे लागल रहैत छलाह। भने रानी कतहुँ व्यस्त छथि।"-ओ सोचथि आ जासूससभकेँ उल्टे डाँटि देथि। ओ बेचारासभ चुपचाप सहटि जाइत। मुदा मोनमे तामस तँ हेबे करैक।❑

१३

मखनाक गतिविधिपर यमराजकेँ सक भए गेलनि। ओ अपन जासूससभकेँ ओकरापर विशेष ध्यान रखबाक हेतु कहलखिन संगहि ईहो कहलखिन जे कोनो बात होइक तँ हुनका तुरंत खबरि कएल जाए। सएह होमए लागल। जासूससभ ओकर आगू-पाछू करए लागल। ओ जतहि जाइत किछु गोटे आगू तँ किछु गोटे पाछू चलैत रहैत छलैक। एहि बातसँ मखनाकेँ सेहो सक भए गेलैक। सोचए लागल जे आखिर ई सभ के अछि आ हमरा किएक पछोड़ करैत रहैत अछि?

मखनाक संचिकाकेँ यमराज स्वयं पढ़लथि। ओ ओकर पारिवारिक पृष्ठभूमिक जानकारी चाहैत छलाह। पढ़ैत-पढ़ैत हुनका पता लागल जे ओ तँ राजपुराक रहए वला अछि। मृत्युक बाद ओ यमलोक आनल जा रहल छल की रस्तेमे हेराफेरी कए अपनसभटा संचिका बदलि देलक।

ई सभ बूझलाक बाद यमराजकेँ बहुत चिंता भेलनि। मोने-मोन सोचथि- "ई आदमी शुरुएसँ गड़बड़ लगैत छल। सभसँ दुखद बात अछि जे हमर श्रीमतीजी एकरापर बहुत भरोस करैत छथि। पहिने तँ हुनका बुझाबी। फेर देखल जएतैक। एकरा रस्ता लगाएब कोन भारी बात छैक?"

यमराजक कारक टायर पंचर भए गेल रहनि। हुनका फेर मखनेपर सक भेलनि जे कहीं ई एकरे काज ने होइक। सोझासँ एकटा एक्का जा रहल छल। ओ एक्का वलाकेँ रुकबाक इसारा केलाह। आहि रे बा !ओ तँ यमराजक इसारा देखितहि फटकी

भागए लागल। प्राणक डर ककरा नहि हेतैक?सएह भेलैक।

यमराज तमसा कए एक्का वलाक पाछू दौड़ रहल छलाह कि मखना देखलकनि।

"सरकार अपने किएक दौर रहल छी?"

"पकड़ एकरा" -एक्का वला दिस इसारा केलखिन। मुदा ओहो तँ फेरल छल। एक्का वलाकेँ इसारा केलक जे भागि जो। एक्का वला आओर जोर-सोरसँ एक्काकेँ दोड़बए लागल। यमराज आओर तमसाइत ओकरा खिहारि रहल छलाह। यमलोकमे बेस मनोरंजक दृश्य भए गेल छल। एहि दौर-बरहामे यमराजक हाथसँ मखनाक संचिका खसि पड़ल। यमराजकेँ से अखिआस तखन भेलनि जखन सामनेमे रेखा आबि कए दौरबाक कारण पुछए लगलखिन-

"की बात छैक? एना किएक दौरि रहल छी?"

"की कहु?-से कहि हाथक संचिकाकेँ ताकए लगलाह।

"संचिका कतए गेल।"

"कोन संचिका?"

ताबते एकटा यमसिपाही एकटा संचिका लेने दौरल आएल। यमराजकेँ जानमे जान आएल। ओ एहि संचिकाकेँ पढ़बाक हेतु रेखाकेँ देलखिन।

"एकरा पढ़ू। सभबात अपने बूझि जेबैक।" -से कहि संचिका रेखाक हाथमे धए देलनि।

रेखा बहुत ध्यानसँ ओहि संचिकाकेँ पढ़ए लगलीह। ओहिमे सौंसे मखनाक प्रशंसा भरल छल। हुनकर मोन आनंदसँ गद-गद

छल। फेर बजलीह-

"हम तँ ई बात बुझिते रही। मखना बहुत नीक खानदानक लोक अछि आ बहुत योग्यो अछि, मुदा अहाँकेँ के बुझाएत?"

"की बात कहि रहल छी? अहाँ एहि संचिकाकेँ नीकसँ नहि पढ़लिऐक की?"

"हम नीकसँ पढ़ि लेलहुँ। अहाँक चश्मा लगैत अछि खराब भए गेल अछि। फेरसँ पढ़ि लिअ। आ हे! चश्मा ठीक करा लेब।"

पत्नीक एहन व्यंगात्मक गप्प सुनि यमराजक मोन जरि गेलनि। भेलनि जे अखने एहि दुनूगोटेक प्राण घीचि ली। से तँ ओ कइए सकैत छलाह मुदा ब्रह्माजीक डर भेलनि। फेर ओ संचिका रेखाक हाथसँ लए पढ़ए लगलाह।"आहि रे बा! एकर तँ पाँति- पाँति बदलि देल गेल अछि। मखना मामूली धोखेबाज नहि थिक।" -यमराज बजलाह।

"अहाँकेँ तँ एहिना रहैत अछि। हमरा लगीचमे केओ रहए से अहाँकेँ पसिंद किएक होएत? असली बात तँ से अछि।"

दुनू बेकतीमे एहि बातपर बेस घोंघाउज होमए लागल। से देखि मखना बहुत प्रसन्न भेल। मोने-मोन सोचलक-

"हमर पाछू पड़ल छलाह। आब लेथु।"

यमराजकेँ व्यग्र देखि मखना कहए लागल-

"सरकार अपने किएक परेसान छी? घरबालीक बातपर चिरौरी नहि करू। आइ-काल्हि बहुत खराब कानून आबि गेल छैक। सिकाइत भए जाएत तँ जमानतो नहि होएत।

"चुप रह। ई राजपुरा नहि थिकैक। यमलोक छै। तोरा तँ हम

जल्दीए ठेकाना लगेबौक। देखै छी तूँ कतेक दिन बचैत छैं। तोहर खेल जल्दीए खतम हेतौक।"

से कहि यमराज मोछ पिजाबए लगलाह। मुदा मखनाक लेल धनिसन। मखनाकेँ तँ मोन होइक जे यमराजकेँ ठामहि उठा कए पटकि दिअए।

यमराज अपन मंत्रीमंडलक आपत्तिकालीन बैसक बजओलथि। ओकर मुख्य विषय छल-मखनाक कदाचारकेँ ध्यानमे रखैत ओकरापर दंडात्मक कारवाइ। ओ ई कहिओ ने सोचने हेताह जे छोट सन एहि मामिलामे हुनके मंत्रीमंडलक सदस्यगण हुनकर विरुद्ध चलि जेताह। मुदा भेल सएह। बैसकमे हड़बिड़रो मचि गेल गेल। "काबीनामंत्री धरिमे मखनाक एहन गहींर पहुँचि केना भेल?-ई सोचि-सोचि यमराजक चकरी गुम छल।"जरूर कोनो खास आदमी षड़यंत्र कए रहल अछि।" -यमराज मोनेमोन सोचए लगलाह। बैसारक क्रममे मंत्रीगण सबूतक मांग कए देलाह। कहए लगलाह जे अहाँक मखना संग मतभेद व्यक्तिगत कारणसँ अछि,एहिमे यमलोककेँ ओझराएबाक कोन औचित्य?" यमराज गुम पड़ि गेलाह आ आग्रह केलाह जे मूल संचिका तकबाक हेतु हुनका किछु समय देल जाए।

"एवमस्तु!" -मंत्रीगण बजलाह। बैसार खतम भेल। मंत्रीसभ अपनामे चुप-चाप गप्प करथि- "यमराजो सठिआ गेल अछि। एकरा एहि बएसमे अपन पत्नी छोड़ि रेखाक चक्करमे पड़बेक नहि छल। एकर आब एहिसभ काजक बएस छैक? व्यर्थकेँ चस्का लगेने अछि। मखनाक कोन दोष। ओ नहि तँ केओ आओर? की ने?"

"सत्य वचन" एकरा वशाक किछु छैक नहि तखन किएक

लफड़ामे पड़ल रहैत अछि।" -से बजैत सभ ठठा कए हँसि देलक।❑

१४

मरखना अपन मौलिक संचिकाकेँ यमलोकसँ लदने-लदने राजपुराक लगीचमे पहुँचल। ओ कालू भगताकेँ ताकि रहल छल। कालू ओकर सहोदर भाए छल। मरखनाक देहसँ प्राण निकलि रहल छलैक कि यमदूत सभकेँ पैर पकड़ि गोहराबए लागल। ओकरा कनैत-कलपैत देखि यमदूतसभकेँ दया आबि गेलैक। पुछलकैक- "किएक कानि रहल छह?"

"हमर प्राण वापस कए दएह।"

"एकहिटा उपाय छैक?" यमदूत बाजल।

"कहह ने, जे कहबह सएह करब, मुदा हमरा बचा लएह।"

तकर बाद पता नहि दुनू गोटे की-की बतिओलक? किछु लेब-देब भेलैक आ मामिला पटि गेलैक। यमलोक जइतहिँ यमदूतसभमे मिझरा गेल। ओकर संचिका बदलि देल गेल। एहि तरहेँ ओ यमराजक दरबारमे पैस बनओलक। कोना-ने-कोना यमपाश सेहो भेटि गेलैक। आओर तँ जे भेलैक से भेलैक, यमराजक घर धरि घुसिआ गेल। ततबेपर नहि रुकल, रेखाक संगे रमि गेल। किछु तँ ओकरामे छलैक जे एतेक आगू बढ़ि गेल।

मरखना अपन गामक ऊपर कैक बेर चक्कर लगओलक मुदा कालू कतहुँ नहि देखेलैक?हारि कए ओ वापस होइत रहए। फरीच भए गेल छल। ताबे ओ राजपुरा लग पहुँचि गेल छल कि एकटा

नान्हिटा घरक फट्टक खुजल।

"ई तँ कालू लागि रहल अछि। मुदा एकरा संगे एहन सुन्दरि के छथि?" -ओ मोने-मोन सोचैत छल।

कालू कुर्सी निकालि कए बाहर बैसल आ निशा भपाइत चाहक कप लए हाथमे देलखिन। दुनू गोटे चाह पीबए लगलाह संगे गप्प-सप्प सेहो चलि रहल छल। दुनूक संतुष्टिभाव केओ पढ़ि सकैत छल। ताबतेमे मखना कनीक आओर लगीच आबि गेल। किछु छल तँ कालू भगता छल, मंत्र-तंत्र किछु ज्ञान छलैक। ओकरा यमदूतक आगमनक आभास भेलैक। नहूँ, नहूँ बाजल- "शिव! शिव! निशाक ध्यान कालूपर पड़लैक।

“कथि लेल चिंतित छी?"

कालू ऊपर दिस इसारा केलक मुदा किछु बाजल नहि। मखना लाख बुझेबाक चेष्टा कएलक मुदा कालू आओर डराइत रहल। ओकरा बहुत परेसान देखि मखना ओकरा दुनूकेँ ठामहि उठा लेलक आ उड़ि गेल।

"एहनो जबरदस्ती भेलैक अछि?" -कालू बाजल।

मखना भभा कए हँसल। मखना राजपुरा पहुँचि महराजी पोखरिपर उतरि गेल। कालू भगता आ निशाक जान-मे-जान आएल। ओ भरि रस्ता हनुमान चलीसा पढ़ैत रहल आ मखना हँसैत रहल।

“तूँ के छह?” -कालू बाजल।

“तोहर छोट भाए।”

मखना बाजल।

"से केना भए सकैत छैक? ओ तँ साल भरि पहिने मरि गेल।"

"से बात ठीक छै मुदा जे हम कहि रहल छी सेहो ठीक अछि।"

"से कोना भेल?"

"तूँ शांत रहह। हम सभटा बात कहबह।"

"ठीक छैक, कहह।"

कालू कनीक आश्वस्त भेले छल कि मखना निशा दिस इसारा केलक।

"ई तोरा संग कोना भए गेलह?"

"पहिने तूँ अपन खिस्सा कहह? बातकेँ एमहर- ओमहर घुमाबह नहि।"

"ठीक छैक, तँ सुनि लएह।"

मखना कहलकैक जे हमर बात पर ध्यान दएह। फेर अपन खिस्सा शुरु केलक-

"हमर प्राण खिचने यमदूत लए जाइत रहए। रस्तेमे एकटा मैथिल यमदूत भेटल। ओ अपन बात कहए लागल जे केना ओ यमराजकेँ चकमा दए नरकक यातनासँ बँचि गेल, ततबे नहि यमदूतो बनि गेल। ओकर बताओल पद्धति हमहु दोहरओलहुँ। हम तँ आश्चर्यमे पड़ि गेलहुँ जे लोक खामखाह अपना ओहिठामकेँ बदनाम केने छैक। यमपुरीक हालति तँ ओहूसँ चौपट छैक। हमर सभटा संचिका बदलि देलकैक। परिणाम भेल जे यमराज लग जाइते हमर जोरदार स्वागत भेल आ बिना कोनो देरी केने यमदूतमे

बहाल कए लेल गेल। यमपाश भेटि गेल आ विशेष कोडवर्ड सेहो भेटिगेल।"

"कोडवर्ड की भेलैक से नहि बूझलिऐक?"

"तोरा ई सभ बुझबाक कोन काज छह? सारांशमे बुझहक जे दोषी जज भए गेल" -से कहि ओ ठहाका पारि कए हँसए लागल।

"मुदा तोहर सकल-सूरति केना बदलि गेलह?" -कालू पुछलकैक।

"नहि बुझलहक, जेहने काज करबैक तेहने बगए चाही ने। यमपुरीमे जबरदस्त ड्रेसकोड छैक।

तीनूगोटेमे गप्प-सप्प भइए रहल छल कि हरि अपन चेला-चाटीसभक संगे महराजी पोखरिक निरीक्षण करए पहुँचलाह। जहिआसँ ओ राजमंत्री भेलाह,हुनकर रोबदाब देखए वला छल। महराज ओ महरानीक खासम-खास भए गेल छलाह। बहुत गोटे भितरे-भितर जरैत छल मुदा ताहिसँ की?

महराजी पोखरिक घाटपर कालूकेँ देखिते ओ चिचिआ उठलाह-

"कालू, कोना छह? "

"गोर लगै छी? “

“नीके रहह। ई के छथि?”

एहिसँ आगू ओकरा किछु नहि फुरेलैक। दुनूगोटेमे गप्प होइते रहैक कि मखना निपत्ता भए गेल। धरफरीमे ओकर संचिका कालू लग खसि पड़लैक। हरिक ध्यान ओहिपर पड़लनि। हुनकर सिपाही ओहि संचिकाकेँ उठा कए हुनकर हाथमे थम्हा देलक। मुदा

ओ ओहि संचिकाक एको आखर पढ़ि नहि सकलाह। “पता नहि की अण्ट-सण्ट लिखल छैक?”-ओ मोनहि-मोन सोचैत रहथि। ओ ओहि संचिकाकेँ मुंसीकेँ धरा देलखिन आ कालू संगे गप्प करए लगलाह। कालू तँ हिनकर ठाट-बाट देखि कए छगुन्तामे रहए। किछु फुरेबे नहि करैक। हरि ई बात तारि गेलाह आ कहए लगलखिन-

"नहि बुझलहक, ई सभ हनुमानजीक चमत्कार अछि, नहि तँ हम तँ खतम छलहुँ"।

से की?" चलह ने हमरे ओहिठाम। दुनूगोटे चैनसँ बतिआएब। कालूक संगे निशा सेहो छलखिन, तेँ चिन्तित भए गेल जे पता नहि कतए लेने जा रहल अछि। हरिक माथा तुरंत काज केलक। कोनो बातक चिंता नहि करह। हम संगे छिअह ने। हिनको लेने चलह।"

आ तीनू गोटे बिदा भेल। हरिक पाछू-पाछू ओकर सिपहसलारसभ चलि रहल छल। कालू ओ निशाक संगे हरि अपन महलमे पहुँचलाह। घर देखिते कालू छगुन्तामे पड़ि गेल। हरि पुछलखिन्-

"चिंतित बुझा रहल छह?"

"किछु नहि।"

"किछु तँ तोरा मोनमे छह। अपने सभटा बूझि जेबहक। ई सभ हनुमानजीक कृपा छनि।" ई बाजि हरि बैसले छलाह कि महराजी भगता प्रातःभ्रमणसँ वापस आबि रहल छलाह। हरिक घर लग अबितहि हुनका पुछलखिन्-

"अहाँक घरमे के अछि?"

"ई छथि कालू भगत। हमर गामे लग पुबारिगाममे रहैत छथि।"

"आओर के अछि?"

"हिनके संगी छथिन-निशा।"

महराजी भगताकेँ लगीच अबैत देखि कालू सकपका गेल। मुदा ओ तँ आओर लगमे सहटल आबि रहल छलखिन। निशा सेहो परेसान छलीह। ई सभ देखि हरि बाजि उठलाह-

"अहाँसभ एतेक परेसान किएक छी?ई केओ आन नहि छथि। "

मुदा कालू जे चुप भेलाह से बकारे नहि खुजनि। हरि महराजी भगताकेँ ओ संचिका दैत कहलखिन- "कनी एकरा देखबैक। पता नहि की,की लिखल अछि।" महराजी भगता संचिका लए आगू बढ़ि गेलाह।❑

१५

मखना कतहु गेल नहि छल। लगेपास नुकाएल छल। जाइत कतए? यमराज ओकर यमपुरीक कोडवर्ड जप्त कए लेने रहथि जाहिसँ ओकर यमपाश काज केनाइ बंद कए देलक। ओकर संचिकाक हेराफेरी पकडा़ गेल छल। पक्का सबूत प्राप्त करबाक हेतु मखनाक गतिविधि पर दिन-राति नजरि राखल जा रहल छल। हेरा-फेरी तँ ओ केने रहैक, आब पकड़ेबाक समय आबि रहल छलैक।

तैं ओ अपन भाए कालू लग पहुँचल छल जे कोनो रस्ता निकलत मुदा ओ तँ अपने चक्करमे मस्त छल। यमराजक चेलासभ ओकरा देखि रहल छल। जखन ओ संचिका कालू लग खसओलक तखने यमराज ओकर फोटो खीचि लेलाह। यमराज मोने मोन सोचैत छलाह-

"आब कतए जाएत?पक्का सबूत हमरा हाथ लागि चुकल अछि।"

मखना बहुत फेरल आदमी छल। तैं ने मरलाक बादो अपन संचिकामे हेराफेरी कए यमदूत बनि गेल। मुदा सभक खेल कखनो-ने-कखनो खतम होइत अछि। सएह मखना संगे भेलैक, कनी जल्दीए भए गेलैक। यमलोकोमे यमराजक दोसर पत्नीक चक्करमे पड़ि गेल। मामिला तेजीसँ चर्चाक विषय भए गेल। यमराजकेँ ओकरापर सक ओहीदिन भए गेलनि जखन गलत व्यक्तिक प्राण खिचबाक हेतु यमपाश लए पहुँचि गेल। जे हेबाक रहैक से भेलैक। यमराज ओकरासँ खिन्न भए गेलाह। ओकर सभटा शक्ति छिनि लेलथि। ओकर यमपाश निष्कृय भए गेल। तखनसँ ओ भागि रहल अछि,नुका रहल अछि मुदा कखन धरि?

यमराज फेर अपन काबीनाक बैसक बजओलथि। ओहिमे मात्र एकटा विषय छल- "मखनाक धोखाधड़ीक आ ओकरा विरुद्ध प्रभावशाली कारवाइ। यमलोकक काबीनाक बैसार प्रारंभ भेल। यमराज बजलाह- "वंधुवर! अहाँसभकेँ कुसमयमे आबय पड़ल ताहि हेतु हम क्षमाप्रार्थी छी। असलमे ई धूर्तराज मखना मोसकिल कए देलक अछि। पछिला बेरक बैसकमे किछु मंत्रीलोकनि ओकरा

विरुद्ध सबूतक प्रयोजन कहलथि। से लिअ, सबूत हाजिर अछि।"

तकर बाद बड़काटा परदापर मखनाक गतिविधिक सद्यःप्रसारण प्रारंभ भेल। मंत्री लोकनि यमराज द्वारा आधुनिकतम तकनीकीक प्रयोग कए मखनाकेँ पकड़ि लेबामे सफल भेलासँ छगुन्तामे रहथि। ओसभ मखनाक एक-एक डेगकेँ सद्यः देखि-सुनि रहल छलाह। मखना अपन भाए कालू भगताकेँ कहि रहल छल-

“भाइ! नहि बूझलिऐक जे यमराजक आदमीसभ एतेक पक्का अछि। हमरा तँ यमपत्नी रेखासँ दोस्ती भए गेल आ से ततेक गहींर भेल चलि जा रहल छल जे ओ यमराजोकें ठेंगा देखा देलथि। तकर बाद यमराज हाथ धो कए हमर पाछू पड़ि गेलाह।"

मखना बजने जा रहल छल आ एक-एकटा गप्प यमलोकक काबीनाक बैसारमे मंत्री लोकनि सद्यः सुनि रहल छलाह। मृत्युलोकसँ दूभाषिआ मरि कए यमलोक पहुँचल छल। ओएह मखनाक गप्प-सप्पकेँ मैथिलीसँ यमभाषामे अनुवाद कए रहल छलाह। काबीनाक सदस्य लोकनि यमराजक प्रस्तावसँ सहमत भए ओकरा ताजीवन जहलक स्वीकृति देलथि। तकर बाद काबीनाक बैसार विसर्जित भए गेल। यमराजक काबीनाक फैसलाक क्रियान्वयन हेतु यमराजक पुलिस वारंट लए मृत्युलोक बिदा भेलाह।❑

१६

राजमंत्री कालू भगतकेँ रहबाक हेतु एकटा पैघ कोठरी दए देलखिन। तकरबात हुनकर जलखै,चाह-पानक व्यवस्था हेतु भनसिआकेँ कहि देलखिन। कालूक बेस आव-भगत होमाए लागल। दिन-राति कोना बीति जाइक से ककरो पता नहि चलैक। ओमहर महराजी भगता सेहो कालूसँ संपर्कमे रहथि। मरखनाक संचिका पढ़ब आ बूझब हुनकर बसमे नहि रहनि कारण ओकर भाषा बहुत विचित्र छलैक।

महराजी भगता कालू भगताकेँ अपन गुटमे सामिल करबाक प्रस्ताव हरिकेँ देलखिन जे ओ सहर्ष मानि लेलाह। कालूक महराजी भगताक दलमे सामिल हेबाक अधिसूचना निकलि गेल। एहिबातसँ अतिप्रसन्न भए कालू भांग खाए सुति गेलाह। भोरे जखन निन्न टूटल तँ देखैत छथि जे निशाक कतहुँ अता-पता नहि अछि।

यमपुलिससभ मरखनाकेँ पकड़बाक हेतु चारूकात पसरि गेल छल। ओकरासभक हाथमे यमपाश छलैक। मुँह-कान भयाओन लगैत छलैक। ओ सभ विचित्र प्रकारक वस्त्र पहिरने छल जाहिसँ ओ ककरो देखाइत नहि छल मुदा ओ सभ देख रहल छल। मरखना जान बचाबए हेतु चारूकात भागि रहल छल। आब ओकरा मनुक्खक देह तँ रहैक नहि जे मृत्युलोकमे कतहुँ रहि जाइत। ओ तँ यमलोकक रस्तेमे हेरा-फेरी कए यमदूत बनि गेल छल। आब ओकर पोल खूजि गेल अछि, ओ की करए?कोनो रस्ता नहि देखा रहल छलैक। कालू भगता सेहो फेल छल। बहुत मोसकिलसँ ओ बूझि सकल जे मरखना ओकर मृत भाए थिक। मुदा किछु मदति नहि कए

पाबि रहल छल। मखनाक मौलिक संचिका से महराजी भगताक कबजामे चलि गेल रहैक। सच कही तँ मखना आब चारूकातसँ घेरा गेल छल। पता नहि यमराज ओकर की गति करतैक?

कालू एहि विषयमे महराजी भगतासँ विचार-विमर्ष केलथि मुदा ओ हँसि कए टारि देथि। समाधान किछु नहि कहथि। प्रायः हुनको किछु नहि फुराइत रहनि जे एहि बबालसँ कोना पार पाओल जाए?

एमहर निशाकेँ निपत्ता भए गेलासँ कालू बेचैन छल। "आखिर ओ गेलीह कतए?"-वारंबार इएह प्रश्न ओकरा मोनमे घुमैत छलैक। अछता-पछता कए ओ महराजी भगता ओतए पहुँचल। रातिक समय छलैक। महराजी भगता पीने बुत्त रहथि। माथ अपना काबूमे नहि रहनि। कालूकेँ देखिते बाजि उठलाह-

"किएक बेचैन छह। निशा महराजक रंगमहलमे अछि आ आब ओतहि रहत। जानक काज होअ तँ कात भए जाह।"

-से कहि ओ दहिना दिसक महलक दिस इसारा केलक। कालूक तामस तँ असमान छुबि रहल छल। ओकरा मोन होइक जे दौरि कए महराज लग पहुँचए आ हुनकर गला घोंटि देअए। ओकर मनोभावकेँ महराजी भगता नीकसँ पढ़ि लेलाह। आखिर कतेको सालसँ ओहि हातामे रहि रहल छलाह। मोने-मोन हुनका बड़ हँसी लगैत छल। असलमे ई लफड़ा ओकरे लगाओल छल।❑

१७

महराजक कृपासँ हमर पढ़ाइ नीकसँ चलए लागल। कालेजमे नाम लिखा गेल। कतेको बेर कालेजसँ घुरैत काल माएक ध्यान अबैत छल। मुदा सोची जे किछु एहन काज करी जाहिसँ माता-पिताक नाम अमर भए जाए। ई काज तँ विद्येसँ भए सकैत छल। विद्याबले लोक बड़का अधिकारी भए सकैत अछि। कलक्टर,जज भए सकैत अछि। किछु संभव अछि। तेँ हम सभ बातकेँ बिसरि पढ़ाइ-लिखाइमे लागल रहैत छलहुँ। दिन-राति परिश्रमपूर्वक पढ़ाइमे लागल रहलासँ परीक्षाफल बहुत उत्तम होइत चलि गेल। सभदिन प्रथमश्रणीमे सफल होइत गेलहुँ।

हमर मामाकेँ एहिबातसँ बहुत प्रसन्नता रहैत छलनि जे हम एतेक मनोयोगपूर्वक अपन काजमे लागल रहैत छी। महराज सेहो हमरा बारेमे उत्सुकता रखैत छलाह। जखन कखनो हमरा नीक परीक्षाफल होइत महराज अपना ओहिठाम बजबितथि आ नानाप्रकारक पुरस्कार दितथि। एहिसँ हमर आत्मसम्मान वढ़ैत गेल। हम निश्चय कए लेलहुँ जे निरन्तर प्रयाससँ पराकाष्ठा धरि पहुँचि कए रहब।

एतेक अभाव ओ कष्टमे हम जीबाक अभ्यस्त रही जे सभ किछु हमरा अपन औकातसँ फाजिले भेटि रहल छल। कालेजमे हमर व्यवहार ओ काजसँ शिक्षक लोकनि बहुत प्रभावित रहथि। सहपाठी लोकनिमे हमरा बहुत यश छल। बेर-कुबेर कतेको विद्यार्थीकेँ अपन खर्चौटामेसँ मदति कए दिऐक। जेकरा जे संभव छल से मदति कए दिऐक।

एहने एकटा विद्यार्थी छलि चंपा। जेहने देखए-सुनएमे पवित्र तेहने पढ़ाइमे चौकस। पारिवारिक स्थिति नीक नहि छलनि। तेँ कतेको बेर कालेज नहि आवथि। पुछितिऐक तँ चुप रहि जैतथि। एहिना एक बेर मास दिन कालेज अएनाइ बंद कए देलथि। ककरोसँ कोनो समाचार नहि भेटए जे आखिर बात की अछि? ओ किएक नहि आबि रहल छथि। ककरोसँ खोलि कए गप्पो करबामे संकोच होइत छल।

एकदिन साँझमे भगवतीक दर्शन हेतु गेल रही। दर्शन कए बाहर निकलि कए प्रसाद सड़िअबैत रही की दूटा बेस जुआएल बानर हमरा दिस दौड़ल। जाबे किछु बुझबै ताबत हाथमेसँ प्रसादक पोटरी छिनि कए ओ भागि गेल। एकटा बानर पोटरी लेने भागि रहल छल आ दोसर ओकर पाछू-पाछू दौड़ रहल छल। हम अबाक ओकरा दिस देखि रहल छलहुँ कि केओ चिकरल-

"श्रीकांत..!

पाछू उनटि कए देखैत छी तँ चंपाकेँ हँसैत देखलहुँ। मास दिनक बाद ओकरा देखलाक बाद मोनमे बहुत प्रसन्नता भेल। पुछलिऐक-

"कालेज किएक नहि आबि रहल छिही? की बात छैक?"

मुदा ओ किछु नहि बाजलि। हमही पुछलिऐक- “घरमे सभ ठीक-ठाक छौक ने?"

एहि प्रश्नसँ ओ किछु परेसान भए गेलि। फेर नहूँ-नहूँ आगू बढ़ैत कहए लागलि-

"तूँ बूझिए कए की करबह?"

"से की? जहन किछु कहबे नहि करबिही तखन बूझबै कोना?

एतबे गप्प भेल छल की ओ बानर कतहुँसँ फेर आबि गेल आ चंपा पर झपटल। जाबे ओ सम्हरितए, जाबे केओ किछु बुझितैक ताबे ओ चंपाकेँ कैक हबक्का मारि चुकल छल।

चंपाक दहिना टांगसँ खून बल-बला रहल छल। ओ जोर-जोरसँ कानए लागलि। बानर बहुत गहींर काटि लेने रहैक। ओकरा चिकरैत-भोकरैत देखि चारू कात कैकगोटे जमा भए गेल, मुदा ककरो किछु नहि फुराइक। हम ओकरा उठौने-पुठौने मंदिरक हातासँ बाहर ठाढ़ रक्सापर रखलहुँ आ कहुना कए ओकरा अस्पताल पहुँचेलहुँ।❑

१८

कुकुर कटबाक चौदह दिन धरि चौदहटा नमगर-नमगर सुइआ चंपाकेँ लागल। ओ परेसान भए गेलि। सौंसे पेटमे गेंठीसभ उगि गेलैक। सीसीमे गरम पानि भरि-भरि ओकर माए दिनभरि ओहि गेठीसभकेँ सेकैत रहैत छलैक। कहुना कए सुइआसभ लागल आ ओकरा कुकुर कटबाक कारण भेल घाव सेहो ठीक भेल। हमरा उमीद रहए जे आब चंपा कालेज आएत मुदा से नहि भेल। पन्द्रह दिन आओर बितल। जखन ओ तइओ कालेज नहि आएलि तँ हमरा नहि रहल गेल। ओहि दिन कालेजसँ लौटति काल हम सोझे ओकर घर चलि गेलहुँ।

गुमती लग ओकर घर छल। घर की छल फूसक घरमे कहुनाक फटक लागल छल। कहुना कए ओ सभ ओहिमे रहैत छल आ जीबिओ रहल छल। एक तरफ महराजक बड़का-बड़का देबाल, बड़का-बड़का पोखरि,चारूकात पसरल नाना प्रकारक महलसभ आ एकदिस एकरसभक घर, जे सभसाल कैक बेर कए खसि पड़ैत छल। वर्षा भेलापर तँ एहि घरक हालति देखए वला रहैत छल। जतेक पानि बाहर खसैत छल ताहिसँ बेसी ओहि घरमे खसैत छल।

ओहि खोपड़ीमे ओकर माए आओर ओ अपने रहैत छलि। पिताक बारेमे चंपाकेँ किछु जानकारी नहि रहैक। की भेलैक, केना भेलैक से चम्पा के किछु नहि बूझल छैक। कैक बेर ओ अपन माएसँ एहि विषयपर चर्च करए चाहलक, मुदा ओ बात आगू नहि बढ़ए दैक। किछु बात तँ रहल होएतैक जे ओकर माए ओकर पिताक चर्चो नहि करए चाहैत अछि? ओकर मोनमे ई बात रहि-रहि कए उठैत रहैत छलैक।

चंपाक घर हम पहिल बेर गेल रही। फटकिएसँ ओकर घरक हाल देखि कए हमरा आगाँ बढ़बाक साहस नहि भेल आ हम चोट्टे घुरि गेलहुँ। आब बुझाएल जे ओ सदरिकाल गुम किएक रहैत छलि। तथापि ओ सौंसे किलासक आकर्षणक केन्द्र छलि। जेहने वुद्धिक विलक्षण तेहने देखबामे पवित्र। जे केओ ओकरा दिस तकैत से तकिते रहि जाइत। ओना कैकगोटे ओकरा संग संपर्क बढ़ाबए चाहलक मुदा ओ ककरो घास नहि दैक। सभकेँ होइक जे ओ बड़ घमंडी स्वभावक अछि। मुदा से सत नहि छल।

आश्चर्यक बात छल जे ओकरा दुनूक गुजर कोना भए रहल

छल। ककरोसँ कतहु किछु मंगैत केओ ओकरासभकेँ नहि देखलक। जाबे चंपा नेना रहए ओकरा कोनो बातक ने जानकारी रहैक ने फिकिर। आब ओ छेटगर भए गेल छलि। कालेजमे पढ़ैत छलि। तेँ समाजक प्रभाव ओकरापर होएब स्वभाविक छल।

एकदिन दूपहर राति कए ओ सुतल रहए कि फट्टक खुजबाक अबाज भेलैक। ओकरा बहुत दिनसँ किछु-किछु बात मोनमे घुमि रहल छलैक। समाधान किछु फुराइक नहि। अबाज सुनि ओ अन्ठा कए पड़ल रहलि। ताबतेमे फट्टक खुजल। ऐकटा बेस नमगर-पोड़गर व्यक्ति ओहिठाम आएल। ओकर माए तैयार बैसल छलि जेना ओकरा पहिनेसँ सभबातक आहट होइक। ओकर माए ओहि आदमी संगे बाहर निकललि आ कतहुँ चंपत भए गेलि। आइ पहिल बेर चंपा एहि दृश्यकेँ अपने देखलक। राति भरि ओ असगरे ओहि घरमे पड़ल रहलि। ओकर मोनमे कतेको प्रश्न घुमैत रहलैक। भोर होमएसँ पहिने ओकर माए फेर ओहिठाम आबि गेलि आ दबल पैरे अपन ओछाओन पर पड़ि रहल जेना किछु भेले नहि होइक।

चंपा भरि राति जगले रहि गेलि। भोर भए रहल छलैक। चारूकात लोकसभ अपन-अपन दिनचर्यामे लागि गेल छल। जाड़क मासमे भोरक रौदक आनंद लेबाक हेतु लोकसभ अपन-अपन घरक आगाँ पटिआपर बैसल चाहक संगे मुड़ही खा रहल छल मुदा चंपा अपन ओछाओने पर पड़ल छलि। ओकर माएकेँ बहुत आश्चर्य होइक जे ई आइ एना किएक पड़ल अछि। कालेज जेबाक समय भए गेल छलैक। आखिर ओकर माएकेँ नहि रहल गेलैक।

"चंपा! चंपा!" -अबाज लगओलक। मुदा चंपा कोनो सुतल छलि जे उठति? ओ तँ जगले छलि,भरि राति टकटकी लागल रहलैक आ जे देखलक से बुझबामे लागल छलि। ओकर माए

कतबो अबाज देलकैक मुदा ओ टस सँ मस नहि भेलैक। कामिनी अपन बेटीक ई हाल देखि बहुत चिंतित भए गेलि मुदा करितए की?सुतल व्यक्तिकेँ तँ अहाँ जगा सकैत छी मुदा जागल के की जगेबैक?

ओहि दिन चंपा कालेज नहि गेलि। दस बजे ओछाओन परसँ कहुना उठि स्नान केलक आ चुपचाप कतहुँ निकलि गेलि। माए पुछबो केलकैक- "कतए जा रहल छैं?

मुदा ओ किछु नहि बाजलि। ओ दिनभरि एमहर-ओमहर बौआइत रहलि आ साँझ भेने घर आबि गेलि। ओकर माए बहुत चिन्तित रहए। बहुत प्रयास केलक मुदा चंपा किछु बाजल नहि। राति भेल। कनी-मनी भोजन कए ओ सुति रहबाक ढ़ोंग केलक। ओकरा ओहि राति किछु नहि देखैलैक। पड़ले-पड़ल पता नहि ओ करवन सुति रहलि।

एहि प्रकारेँ चंपा कालेज गेनाइ छोड़ि देनि छलि। ककरो कोनो बातक थाह नहि चलि रहल छलैक जे ओ एना किएक कए रहल अछि ने ओ अपने किछु ककरो कहैत छलैक। मुदा ओ बहुत परेसान छलि। माएकेँ किछु कहबाक साहस नहि भए रहल छलैक। एक राति एहिना ओ भगल कए पड़ल जकाँ रहए कि माए केँ उठैत देखलक। केओ बेस नमगर-पोरगर व्यक्ति ओकरा उठा लेलक आ ओतएसँ बिदा भए गेल। चंपाकेँ नहि रहल गेलैक। ओ पाछू-पाछू बिदा भेल। कनिक कालक बाद एकटा सुरंग देखएमे आएल। कामिनी ओहि आदमीक संगे सुरंगमे पैसि गेलि। चंपा सेहो ओकर पछोड़ धेने-धेने चलैत रहलि। किछुकाल चललाक बाद एकटा

तहखाना देखएमे आएल। ओकर गेटपर एकटा द्वारपाल ठाढ़ छल। कामिनी केँ देखिते ओ फाटक खोलि देलक। ओ दुनू व्यक्ति आगू बढ़ि गेल। चंपा ई दृश्य देखितहि चोट्टे घुरि गेलि। चंपा कहुना कए गुमती लग पहुँचलि। ओतएसँ सटले चंपाक घर छलैक। अपन घर देखि चंपाकेँ जान-मे-जान आएल।

भोर भए रहल छल। चिड़इ-चुनमुन अपन खोंतासँ उड़ि कए एमहर-ओमहर करए लागल छल। जाड़क समय छलैक। महराजी भगता आ कालू भगता मंत्र-तंत्र कए लौटि रहल छलाह। चाहक दोकान पर भफाइत चाह देखि कए चाह पीबाक इच्छा भेलनि। चाह पीबैत-पीबैत कालूक ध्यान निशापर पड़लैक। ओ ओहि समय गुमती पारकए अपन घर दिस बढ़ि रहल छलि। ओ चंपाक सुन्दरतासँ अत्यंत मोहित भए बड़ीकाल धरि एकटक ओकरा देखिते रहि गेल।

कालू लंपट छलहे। ओकर इच्छा भेलैक जे चंपासँ किछु गप्प-सप्प करी। ताहि हेतु महराजी भगता तैयार नहि भेलाह। कहलखिन-

“बेटी ककरो होइक, हमरा लोकनिक कर्तव्य अछि जे ओकर रक्षा करी।"

एतबा इसारा पर्याप्त छल। कालू चुप-चाप महराजी भगताक पाछू-पाछू बिदा भेल।❑

१९

कालू घर पहुँचल तँ पता लगलैक जे आइ महराजक ओतए बैसारमे हुनका कालू संग जेबाक हेतु आदेश भेल अछि। महराजक बैसारक नामेसँ महराजी भगताक पेटमे हर बहए लागल।

"की बात छैक? हमरा किएक बजाओल गेल?" -से सभ सोचए लगलाह। ताबतेमे महराजक सचिवक फोन सेहो आबि गेल- “अजुका बैसारमे अहाँ आबि रहल छी ने? -महराजक सचिव बजलाह।

" अवश्य आएब।"

महराजी भगता धराधर स्नान-ध्यान कए बिदा भेलाह। ताधरि कालू नहि आएल छल। गप्प भेल रहैक जे कालू महराजी भगताकेँ संग करैत बैसारमे जएताह। मुदा ओ समयपर तैयार नहि भए सकलाह। महराजक नामेसँ हुनकर पेट खराब भए गेलनि। कैकटा दस्त भेलनि। जहाँ बिदा हेबाक प्रयास करथि कि पेट गुड़गुड़ाए लागनि। आब की होएत? कहुना बिदा भेलाह। विलंब तँ भइए गेल रहनि। ताबते महराजी भगताक फोन आबि गेल।

"अहाँ आगू बढ़ू, हम सोझे ओतहि पहुँचि रहल छी।" -कालू फोनपर बाजल।

महराजी भगता तँ बिदा भइए गेल रहथि। महराजक महल लगमे पहुँचलाह तँ देखैत छथि जे कालू दौड़ कए केम्हरो जा रहल अछि। इसारासँ किछु कहबाक चेष्टा कए रहल छथि। महराजी भगता छगुन्तामे रहथि जे एकरा की भए गेलैक, कतए जा रहल

अछि आ की कहए चाहि रहल अछि?खैर! ओ एसगरे महराजक महलमे पहुँचलाह।

महराजक महल सजल धजल छल। सिपहसलारसँ अपन-अपन स्थानमे बैसि गेल रहथि। राजमंत्री सेहो पहुँचि गेल रहथि। दूटा कुरसी खाली छल। एकटापर महराजी भगता बैसि गेलाह आ कालूक बाट ताकए लगलाह। मोनमे चिंता रहनि जे यदि कालूकेँ आओर देरी भेलैक तँ आइ ओकर जान बचनाइ मोसकिल छैक।

महराजक आगमनक सूचना देल जा रहल छल। समस्त सभासद लोकनि सावधानक मुद्रामे आबि गेल रहथि कि एकटा व्यक्ति धरिआ सरिअबैत धरफराएल सभास्थलमे प्रवेश कए रहल छलाह। महराजी भगता ओमहरे ताकि रहल छलाह। देखितहिँ इसारा देलखिन आ ओ व्यक्ति महराजी भगताक बगलमे खाली कुरसीपर बैसि गेलाह। महराजी भगता तामसे भेर छलाह। मुँह लाल भए गेल रहनि। होनि जे ओकरा कंठ पकड़ि कए ओतएसँ फेकि दी मुदा किछु नहि कए सकलाह। महराज प्रवेश कए रहल छलाह। तैओ ओ बड़बड़ेलाह- “कालू... ।"

महराजक सिपहसलार सभ चिचिआ उठल-

“सावधान! महराजाधिराज! प्रवेश कए रहल छथि।”

सभ केओ ठाढ़ भए गेलाह। पंडित लोकनि महराजक सम्मानमे श्लोकक पाठ करए लगलाह। महराज नहूँ-नहूँ आगू बढ़ि रहल छलाह। पाछूसँ एकटा सिपहसलार बड़का पंखा हौंकि रहल छल। महराजक शोभा तँ देखैत बनैत छल। ओ अपन आसन ग्रहण केलाह। चारूकातसँ लोकसभ बाजि उठल- “महराजाधिराजक जय हो" तकर बाद राजक गबैआसभ मंगलस्तुति गओलथि।

महराज मंद-मंद मुस्कान दए रहल छलाह। रतुका भांगक असरि गेल नहि छल तथापि अपनाकेँ सम्हारने छलाह। सभसँ पहिने राजमंत्री बजलाह-

"महानुभाव लोकनि! महराजक आज्ञा हो तँ आजुक कार्यवाही प्रारंभ हो।"

महराज बजलाह- "एवमस्तु।"

राजमंत्री उठि कए आजुक सभाक कार्यवाही प्रारंभ केलाह। ऐतबहिमे ठनका जकाँ गरजैत आकाश मार्गसँ कथुक प्रवेश भेल। महराज सकदम छलाह। मंत्रीगण एक-दोसर दिस देखए लगलाह। राजपंडित महराजी भगतासँ पुछलाह- “ई की भए रहल अछि?

" बहुत अशुभ संकेत अछि। केओ यमपाश फेकलक अछि। "

-महराजी भगता बजलाह। कालूकेँ तँ जेना बुद्धिए हेरा गेल रहनि। पहिल बेर महराजक ताम-झाम देखि रहल छलाह। महराजक दिस तकैत राजपंडित बजलाह- “श्रीमान! लगैत अछि यमलोकसँ यमदूतसभ सभास्थलकेँ घेरि लेलनि अछि।"

"कारण?" -महराज बजलाह।

से तँ महराजी भगते कहताह ।" -राजपंडित बजलाह।

ताबतमे तीन-चारिटा यमदूत उपस्थित भेल। महराजकेँ किछु देखा नहि रहल छलनि। मुदा महराजी भगता सभ देखि रहल छलाह। ओ यमदूतसभसँ प्रश्न केलखिन- “अहाँसभक की समस्या अछि आ एहि सभामे किएक अएलहुँ अछि से स्पष्ट करू?"

"हमसभ यमराजक जासूस छी। यमलोकमे मरखनाकेँ गिरफ्तार करबाक आदेश भेटल अछि मुदा ई तरह-तरहक फरेब कए बचबाक प्रयास कए रहल छल। बहुत मोसकिलसँ एकरा पकड़ल गेल अछि। आब ई कहि रहल अछि जे ई जे किछु केलक से एकरा बिसरा गेल अछि। एकरा पासमे एखनो यमपाश अछि जे ई महराजक महलमे कतहुँ नुका देने अछि। एही बातक जाँच करबाक हेतु हमसभ एतए आएल छी। "

"मामिला तँ बहुत गंभीर थिक। सभकाज छोड़ि पहिने एकरे समाधान कएल जाए" -महराज बजलाह।

"समाधान हमरा लोकनिक हाथमे नहि रहि गेल अछि महाराज!"

"से किएक?'

"ई ने आब जीबैत अछि ने मृत। एकर आत्मा बीचेमे लटकि गेल अछि?"

"से केना भेलैक?"

"ई मरलाक बाद यमलोकक रस्तामे हेराफेरी केलक जाहिसँ एकर संचिकामे सभटा उल्टा-पुल्टा भए गेलैक। आब ई देखार भए गेल अछि। यमलोकमे एकरा दंड देबाक एलान भए गेल अछि मुदा समस्या अछि जे एकरा पकड़ल कोना जाए? यमपाशसँ ई कबजामे नहि आबि रहल अछि।"

"तखन की होएत?"

"कालू ओकर भाए छैक। इएह ओकरा पकड़ा सकैत अछि।"

"कालू कहाँ अछि?"

"जी सरकार !" -कालू बाजल।

तूँ तुरन्त एहि समस्याक समाधान करह नहि तँ तोरा फाँसी दए देल जाएत।"

महराजी भगता कालूकेँ चुप रहबाक इसारा केलक। कालू डरे थर-थर काँपि रहल छल। राजमहलक एक कोनमे नुकाएल मखना सभटा देखि रहल छल। ओ गरजैत-फरजैत यमदूतसभ पर आक्रमण कए देलक। महराज किछु बुझितथि ताहिसँ पूर्वे हुनकर सिपहसलार लोकनि हुनका लेने चलि गेल। एहि तरहेँ राजसभा अनायासे विसर्जित भए गेल।❑

२०

महराज भांगक निशामे बुत्त छलाह। ताहि हालतिमे हुनका राजसभामे किएक आओर के अनलक? एहि विषयपर बहुत घमरथन भेल। सभ एक-दोसरकेँ नाम लए रहल छल। अन्तमे राजमंत्री आगू बढ़लाह आ कहलखिन- “आब एहि बातपर घमरथन करबाक कोनो औचित्य नहि अछि। जे काजक गप्प अछि से करू।"

'एकदम उचित बात कहि रहल छथि। सभ केओ मखनाकेँ पकड़ेबाक जोगार करू नहि तँ कालूकेँ जान नहि बाँचत।" -राजपंडित बजलाह।

"मुदा ई ककरो वशमे नहि अछि। ओकर एँड़ी उनटा छैक ने, से नहि देखाइत अछि? ओकरा कोना आ केँ पकड़त?" -महराजी

भगता बजलाह। बहुत कालधरि एहि विषयपर चर्च होइत रहल। ओतए मखना छद्मरुपसँ हबामे विद्यमान छल आ मोने-मोन हँसि रहल छल। समस्या बढ़ले जा रहल छल, कारण यमदूतसभ चारूकातसँ महलसभकैँ घेरि लेने छल। सभक हाथमे यमपाश छल। ओ सभ रहि-रहि कए महराजी भगताकेँ धमकबैत छल-

"तोहर महराजक प्राण लेने बिना वापस नहि जाएब। जौँ हुनकर नीक चाहैत छह तँ मखनाकेँ वापस करह।"

"मखनाकेँ पकड़ब हमरासभक वशमे नहि अछि।" -महराजी भगता बाजल।

"से तूँ जानह आ तोहर काज जानह। हमसभ तँ यमराजक आज्ञाक अधीन छी। जे ओ कहताह से करब। आखिर मखना अछि तँ महराजेक प्रजा। तखन ओकर जिम्मा ककर होएत? तूँही बाजह?"

-यमदूत कहलक। एतबा कहि ओ यमपाश जोरसँ घुमा देलक। चारूकात हाहाकार मचि गेल। जकरे-तकरे मोन खराब होमए लगलैक। महराज सेहो बेहोस भए गेलाह। महराजकेँ इलाज हेतु राजवैद्य बजाओल गेलाह। ओ कतबो किछु करथि महराजक हालति खराबे भेल गेलनि।

"आब की होएत?" -राजपंण्डित बजलाह।

सूर्यास्त लगीच छल। यमदूतसभक धैर्य उत्तर दए रहल छल। ओ सभ यमराजकेँ फोन लगओलक-

"सरकार! मखनाकेँ पकड़ब मोसकिल लागि रहल अछि?"

"किएक?"-यमराज बजलाह।

मखना बहुत पिच्छड़ भए गेल अछि।" -यमदूतसभ बजलाह। ताबे महराजी भगता कालूक मूल संचिका लेने अएलाह। संचिका देखि यमदूत बहुत प्रसन्न भेलाह आ तुरन्त ओकरा अपना कबजामे लए लेलथि। यमदूतसभ यमराजकेँ फोन केलक।

"सरकार! कालूक मूल संचिका भेटि गेल मुदा यमपाश अखनो नहि भेटल अछि, ने मखना काबूमे आएल अछि।'

"चिंता नहि करह। संचिका लए चलि आबह मुदा महराजकेँ सख्त चेतौनी दए दहक जे मास दिनमे मखनाकेँ हमर दरबारमे हाजिर करथि अन्यथा हुनकर भगवाने मालिक।" -यमराज बजलाह।

यमराजक आज्ञा पाबि यमदूतसभ ओहि संचिकाकेँ अपन कबजामे लेलक आ यमलोक बिदा भए गेल।❑

२१

महराजक दरबारमे हाहाकार मचि गेल। यमदूतसभ जाइत-जाइत जे चेतौनी देने गेल ताहिसँ महराजक निन्न उड़ि गेलनि। राजपंडित, महराजी भगता आ राजमंत्रीक समिति बनाओल गेल जे एहि विषयमे तीन दिनक भितरमे अपन विचार देत जे एहि संकटसँ कोना पार पाओल जाएत। कालू भगताकेँ बजाओल गेल आ ओकरा सख्त निदेष देल गेल जे कोनो हालतिमे यमपाश आ मखनाकेँ हाजिर करए। ताहि हेतु ओकरा चौबीस घंटा समय देल गेल। कालूक प्राणपर संकट छल से ओ नीकसँ बूझि रहल छल मुदा

करए की?

समस्या बहुत गहींर भए गेल छल। महराजी भगता यमपाशकेँ ताकएमे लागि गेलाह। समस्त मंत्र-तंत्रक दिन-राति प्रयोग करए लगलाह। एकदिन एहिना महराजी श्मशानमे मंत्र फूकि रहल छलाह कि ध्यानमे लोटना अएलनि।

"ई के अछि?वारंबार किएक ध्यानमे आबि रहल अछि।"

-महराजी भगता सोचथि। जहन कोनो समाधान नहि फुरेलनि तँ ओ हमर मामा लग गेलाह। मामा आ हम आपसमे पढ़ाइ-लिखाइक बारेमे गप्प कए रहल छलहुँ। ओही क्रममे चंपाक गप्प सेहो उठि गेल। मामा कहलाह- “तूँ चंपाक चिंता नहि करह। हम महराजसँ एहि विषयमे गप्प करब जाहिसँ ओकरा मदति भेटि जाइ" -हुनकर बातसँ बहुत प्रसन्नता भेल। चाह खतम नहि भेल छल। गप्पो चलिए रहल छल कि महराजी भगता पहुँचलाह। ओ बहुत चिंतित लगैत छलाह। मामा बजलाह- “आउ, आउ। नीके छी ने?"

की नीके रहब?दिन-राति चिंतामे समय बीति रहल अछि।"

"से की?"

"मखना काबूमे नहि आबि रहल अछि। आइ पूजामे लागल रही कि एकटा युवक ध्यानमे देखाएल। ओकरा हम चिन्हि नहि सकलहुँ। पता नहि के अछि? किएक ध्यानमे आएल?" -महराजी भगता बजलाह। फेर अपन हाथसँ कागजपर ओहि व्यक्तिक फोटो बना देलथि। फोटो देखिते मामा बजलाह-

“ई तँ लोटना अछि।"

"के लोटना?" -महराजी भगता बजलाह।

राजमंत्रीसँ लोटनाक हुलिआ भेटलाक बाद महराजी पुलिस ओकरा ताकएमे लागि गेल। ओ टीसनक प्लेटफार्मपर चाह-पानक दोकान करैत छल। एकदिन भोरे टहलैत रहए कि ओकरा दू हाथक एकटा बेस भरिगर ठेङा आकाशसँ खसैत देखेलैक। ओ तँ भागक तेज छल नहि तँ ओ ठेङा ओकर मुड़िएपर खसि पड़ितैक। ओ ठेङाकेँ अपन आलमीरामे राखि देलक, कारण ओहिमे किछु विचित्रता छलैक। राति कए चमकए लगैत छलैक। असगर भेलापर ओहिमेसँ विचित्र ध्वनि निकलैत छलैक। लोटनकेँ किछु नहि बुझेलैक जे आखिर ई की अछि?तेँ ओ ओकरा बंद कए राखि देलक।

महराजी पुलिस संगे सदल-वल महराजी भगता लोटनाक राजपुरा डेरापर रातिमे पहुँचल। ओ तँ सकपका गेल। महराजी भगता कहलखिन- “तोरा लगमे यमपाश छौ, ओकरा लेने आबै नहि तँ तोहर मृत्यु निश्चित अछि।

“हमरा एकटा ठेङा किछु दिन पहिने भेटल छल। ओ की अछि से हमरो नहि बूझल अछि। अहाँ कही तँ लेने आबी।"

"लेने आबह।"

ओ आलमारीमे राखल ठेङा लेने आएल। ठेङा देखिते महराजी भगता हँसए लगलाह। इएह यमपाश थिक। एकरा घरमे राखब अशुभ थिक। तेँ हम एकरा लेने जाइत छी।"

"ठीक छैक।" -से कहि ओ यमपाश महराजी भगताक हाथमे थम्हा देलथि। मुदा ओकर मोनेमे गुन-धुन करैत रहलैक जे आखिर महराजी भगता एहि ठेङा लए की करताह? महराजी भगता ई बात

तारि गेलाह आ ओकरा अपना संगे-संगे चलबाक हेतु कहलखिन।

यमदूतसँ कनिके दूर पर छल कि महराजी भगता हाक देलकैक आ अपन दहिना हाथमे यमपाश हिला-हिला कए देखाबैक मुदा यमदूतसभ घुरल नहि। ओ सभ गेल से गेल। “आब की करी?" -महराजी भगता मोने-मोन सोचलाह। प्रश्न ई रहैक जे यमदूतकेँ केओ किएक बजाओत? भने फटकी चलि गेल।

प्रात भेने समितिक बैसारमे महराजी भगता यमपाश आ लोटनाक संगे उपस्थित भेलाह। यमपाश देखिते राजपंडितक हुलिआ खराब होमए लागल। डर भेलनि जे कहुँ ई यमपाश सक्रिय भए गेल तखन की होएत? हुनकर हाल देखि राजमंत्री पुछलखिन-

“की बात छैक पंडितजी?"

पंडितजी गुम भेलाह से किछु बजबे नहि करथि। महराजी भगता लोटनाकेँ ठेङाक भेटबाक विज़यमे पुछलखिन। लोटनाकेँ राजमंत्री नीकसँ चिन्हि गेल रहथि मुदा ओ हुनका नहि चिन्हि सकलनि। खैर! जे भेल-से-भेल। समिति ई निर्णय केलक जे कालू भगता यमपाशकेँ यमलोक पहुँचेबाक जिम्मा लेथि तखने हुनकर जान बँचि सकैत अछि अन्यथा ओ जानथि आ हुनकर काज जानए।" आब कालू लग विकल्पे की छल? ओ यमपाश लए लेलक आ एहि प्रयासमे लागि गेल जे कहुना ओकरा यमलोक पहुँचा दिऐक।

प्रातः काल महराजी पोखरिक मोहारपर ओ बैसल छल। मोने-मोन मखनाकेँ आवाहन केलक। देखिते, देखिते मखना हाजिर

भए गेल।

"की बात छैक कालू भाइ? किएक गोहरेलह?"

"ई यमपाश तोरे छह। एकरा लएह आ कोनो उपायसँ एकरा यमराजकेँ वापस कए दहक नहि तँ हमर जान गेले बूझह।"

“से की?"

"जे कहैत छिअह से सुनह, खाली बहस केलासँ किछु नहि होएत। समय बहुत कम अछि।"

“ठीक अछि। लाबह यमपाश।"मरखना यमपाश लेलक आ ओकरा आगू-पाछू करए लागल। किछु-किछु कोडवर्ड दए ओकरा सक्रिय करबाक प्रयासमे लागि गेल। किछु, किछु करैत छल कि ओ एकहि बेर चिचिआ उठल-

"मोन पड़ि गेल। कोडवर्ड मोन पड़ि गेल।"मरखनाक यमपाश सक्रिय भए गेल छल। आब की होएत? ई समाचार तुरंत यमराज केँ भेटलनि।

"मरखनाक हाथमे यमपाश सक्रिय भए गेल। आब की करब?"-सभ सभासद गुम पड़ि गेलाह।❑

२२

मरखना सोचलक जे सभ झञ्झटिक जड़ि यमराजे थिक। किएक नहि, सभसँ पहिने एकरे साफ करी आ तकर बाद निश्चिन्तसँ यमलोकपर राज करी। बात तँ लाख टकाक रहैक। बहुत आगूक योजना बनओलक। दोसर बिचार मोनमे अएलैक जे राजपुरामे

महराजक सभचीज बनले छनि, ओकरे कबजा कए लेल जाए। महराजक ऊपर यमपाश फेकि हुनके सुडाह कए देल जाए। बाह रे मरवना! केहन अद्भुत माथा पओने अछि। मरिओक सभकेँ नचा रहल अछि।

मरवना संगे समस्या रहैक जे ओ बेसी पढ़ल-लिखल नहि रहए। बेसी उठा-पठक कएल नहि होइक। रहल यमलोक से तँ ओतए यमराजक अधिपत्य छनि। हुनकर अपन सेना छनि,पुलिस छनि, अस्त्र-शस्त्र छनि। ओहिठाम जबरदस्त झञ्झटि भए सकैत अछि। इएह बात सभ ओ सोचैत रहलाह।

महराज तँ बेसी काल बेहोसे रहैत छलाह। छप्पन प्रकारक भोग लगैत छल। जे खेला से खेला नहि तँ हुनकर सिपहसलारसभ ओकरा राजप्रसाद बूझि बहुत आनन्दसँ पबैत छल। भोजन करितहि अपन महलमे टगि जाइत छलाह। एकटा-दुटा रानी रहनि तहन ने। कैकटा तँ बाटे तकैत रहि जाइत छलीह। महराज भोग-विलास नहि करताह तँ के करत? अहीँ कहू? से ओ कए रहल छलाह।

मुदा जहिआसँ यमदूत धमकी दए गेल हुनकर माथा बेचैन रहैत छलनि। जानक डर तँ सभकेँ होइत अछि। राजपंडितसँ लए कए राजमंत्री धरि सभ परेसान छलाह। आब की होएत?

देखैत-देखैत मासमे सँ पचीस दिन बीति गेल। मरवना पकड़ल नहि जा सकल। महराजक हालति खराब भेल चलि जा रहल छल। मुदा असली संकट तँ मरवनासँ आबि गेल छल जकरा हाथमे यमपाश फेरसँ सक्रिय भए गेल छल। आओर ओ आदमिओ छल खुराफाती। कहीं महराजेकेँ ने लए बैसए?

मास दिनमे आब एके दिन बाँचल छल। महराजक दरबारमे सभ परेसान छल। मखना काबूमे नहि आएल। यमलोकसँ फोन-पर-फोन आबए लागल। हालति तँ ई भए गेल जे महराजकेँ आब फोनो छुबामे डर होइत छलनि। महरानीक संगे भोरे चाह पीबि रहल छलाह कि आकाशवाणी भेल- “मास दिनक अवधि आइ साँझमे समाप्त भए रहल अछि। मखनाकेँ यमलोक यदि नहि पठा सकब तखन अपनेकेँ ओतए जाए पड़त।"

एतबा कहि आकाशवाणी बंद भए गेल। महराज थर-थर काँपि रहल छलाह। महरानीकेँ किछु बूझेबे नहि करनि जे आखिर की बात भेलैक जे महराजक ई हाल भए गेलनि। महरानी चाह छोड़ि बाहर दौड़लीह। ओसारामे राजपंडित मंत्र पढ़ैत मंदिर दिस जा रहल छलाह। हुनका अपसिआँत देखि पुछलखिन- “की बात?"

"महराजकेँ यमलोकसँ आकाशवाणी भेलनि अछि।"

"की कहलकनि?"

"अपने अन्दर आबि कए देखि लिअ। महराज बहुत परेसान छथि।"ताबतेमे चारूकात आपत्तिकालीन घंटी घना-घन बाजए लागल। यमलोकक दूतसभ अपन-अपन स्थान ग्रहण कए चुकल छल। महराजकेँ छातीमे भयानक दर्द उठलनि आ ओ बाप-बाप चिचिआए लगलाह। चारूकातसँ जे जतहि छल से पहुँचि गेल। महराजकेँ घेरि लेलक। महराजी भगता राजपंडितक संग किछु मंत्रणा करैत छलाह, ताबतेमे राजमंत्री सेहो ओतए पहुँचि गेल।

यमपाश भेटि गेलाक बाद मखनामे अद्भुत शक्तिक जागरण भए गेल। आब तँ यमदूतोसभ ओकरा लगीचमे अएबासँ डरा रहल

छल आ महराजी भगताक तँ कथे कोन? ओ तँ अपन जान लेल प्रार्थना कए रहल छल। जोर-जोरसँ मृत्युंजय जप करए लागल।

मखनाक हाथमे यमपाश देखि कए यमराज बहुत परेसान भए गेलाह। सोचलाह जे किएक नहि एकरासँ सोझे हिसाब-किताब कए ली। पुछलखिन- “मखना तूँ की चाहैत छह?"

"पहिने अपन नेत शुद्ध करबह तखने किछु गप्प करबाक फएदा छैक।"

""हम जे बाजब ओहि पर स्थिर रहब।"

"तकर की विश्वास?"

"तोरा जेना विश्वास हो सएह कएल जाए।"

"रेखाकेँ बजाउ। ओ कहतीह तखने हम मानब। अहाँक कोन ठेकान?"

यमराज रेखाकेँ मोबाइल फोनपर फोन केलाह।

"की बात छैक? जखन-तखन फोन कए दैत छी?" रेखा कहलखिन।

“परिस्थिति तेहने भए गेल जे फोन करए पड़ल।”

"की बात छैक?"

"मखना बजा रहल अछि।"

“ओ कतए अछि?"

“यमलोक आ मृत्युलोकक बीचमे। "

"ऐँ! से कोना भेल?"

ओ सभ छोड़ू। काजक गप्प करू" -से कहि यमराज मखनाकेँ रेखासँ सोझे गप्प करा देलथि। मखनाक प्रसन्नताक अंते नहि छल। ओ बाजल- “यमराज अपने महान छी। यदि अपने हमर एकटा बात मानि ली तँ हम अहाँक जान बकसि देब।"

"खोलि कए बाजह जे की चाहैत छह?"

"रेखाकेँ हमरा सुंझा दिअ आ चैनक बंसी बजाउ।"

महराज तंग रहबे करथि। सोचलाह जे जान बाँचत तँ फेर कोनो ओरिआन भए जए जाएत। कहलखिन- “एवमस्तु।"

“एकटा बात आओर।"

“कहह।"

"यमदूतसभ हमर यमपाशसँ फराके रहथि।"

"तकर माने की?"

"माने साफ अछि जे हम जकरापर यमपाश चलाबी तकरासँ अहाँ लोकनि फराके रही।"

“एहि तरहेँ तँ ब्रह्माक विधाने असफल भए जाएत। तूँ एना तँ नहि कए सकैत छह।"

"एकटा समाधान भए सकैत अछि।"

"की?"

"महराजक क्षेत्र हमरा सुंझा दिअ। एहि क्षेत्रक ब्रह्माक कागज-पत्तरसभ हमरे लग रहत। सारांश जे हिनका लोकनिक मृत्युक हिसाब-किताब सोझे राजपुरा मुख्यालयसँ नियंत्रित होएत।"

"की बात करैत छह? एकहुटा कागज सोझ रहत? एहिठाम तँ तोरा सन-सन कतेको विद्वान घूमि रहल छथि।"

"देखू, बातकेँ बतंगर नहि करू। यदि अहाँकेँ जान बचेबाक अछि तँ हमर बात मानहि पड़त, नहि तँ हम नहि जानी...।"

यमराज फेर बजलाह- “एवमस्तु।"

मखना मोंछ पिजओलक आ यमपाश लहरबैत आगू बढ़ि गेल। यमराजोकेँ जान-मे-जान अएलनि।" केहन-केहन फेरल लोक होइत अछि औ बाबू! यमराज मोने- मोन सोचैत अपन महलमे विश्राम हेतु चलि गेलाह।❑

२३

ओहि दिन हम मामा संगे गप्प करैत रही। ओ कहलाह जे चंपाक संबंधमे महराजसँ गप्प भेल रहनि। ओ ओकरा मदति करबाक हेतु तैयार छथि। पढ़ाइ-लिखाइक सभटा खर्चा महराजक तरफसँ होएत। ताहि हेतु जरूरी आदेश सेहो कए देल गेल अछि। हम तुरंत फोनसँ चंपाकेँ एकर जानकारी देबए चाहलहुँ। मुदा ओकर फोन लगबे नहि करैक। लगातार “फोन बंद अछि ।" -बजैत रहैक। आब की भेल?

हमरा चिंता जोड़ पकड़लक। तुरंते ओकर घर दिस बिदा भेलहुँ। कोनो एक्का भेटबे नहि करए। पैरे चलैत-चलैत चौक धरि पहुँचि गेलहुँ। संयोगसँ एकटा तिपहिआमे एकटा जगह खाली रहैक। तुरंत ओहिमे बैसि गेलहुँ। रस्ते-रस्ते ओकर फोन लगेबाक सेहो प्रयास करैत रहलहुँ। कथी लेल फोन लागत। देखिते-देखिते

गुमती लग पहुँचि गेलहुँ। तिपहिआ वला टाहि देलक- “गुमति, गुमति" तँ हमर ध्यान ओमहर गेल। तिपहिआ वलाकेँ किराया दए झपटि कए चंपाक घर दिस बिदा भेलहुँ। ओतए गेलहुँ तँ चंपाक कोनो अता-पता नहि छल। केओ-केओ कहलक जे महराजी भगता आएल छल आ ओकर खोपड़ीकेँ तोड़ि देलक। हम पुछलिऐक- “आ चंपा कहाँ गेल?" केओ कोनो निजगुति बात नहि कहलक। तामसे मोन भेर भए गेल। मोन होइत छल जे महराजी भगताकेँ ओतहि नरेठी दावि दी। तुरंत मामाकेँ फोन लगेलहुँ। मामा हमर तामसकेँ तारि गेलाह। कहए लगलाह-

"एतेक परेसान किएक छह?"

'"महराजी भगता केहन जुलुम केलक अछि से नहि बुझा रहल अछि?"

"से तँ बूझि रहल छी मुदा तमसेलासँ तँ किछु नहि होएत। बनितो काज बिगड़ि जाएत। पहिने पता तँ कए ली जे बात की छैक? तूँ परेसान नहि होअ। एहिठाम आबि जाह। ताबे हम पता लगबैत छी जे बात की छैक।"

“ठीक छैक। हम आबि रहल छी।" -से कहि हम फोन राखि देलहुँ आ तुरंत एकटा एक्कापर एसगरे मामाक घर दिस बिदा भए गेलहुँ।

महराजी भगता होउक,की महराजी पंडित-सभ तँ महराजेक इसारापर काज करैत अछि। ई सभ एहन व्यक्ति नहि छथि जे अपने मोने किछु करथि। तेँ राजमंत्रीकेँ अंदाज रहनि जे एहू मामिलामे कतहुँ-ने-कतहुँ महराजक घालमेल जरुर होएत आ यदि से बात

अछि तँ ओहि लफड़ामे के पड़त? अड़रीक खेतमे प्राण के देत?बात खाली चंपेक नेने छलैक, ओकर माए लए कए सेहो हम बहुत परेसान रही। आखिर ओ कतए गेलीह,जीवितो छथि कि नहि? एतबा तँ अनुमान भए रहल छल जे चंपाक परेसानीक मूल कारण ओकर माए छथि। मामा एहि मामिलामे बेसी रुचि नहि लेबए चाहैत छलाह कारण यदि महराज तमसा गेलाह तँ भगवाने मालिक।

हम एक्का वलाकेँ पाइ देलिऐक आ दौरले मामा लग पहुँचि गेलहुँ। मामा जलखै कए रहल छलाह। हमरो आग्रह केलाह मुदा हमरा तँ भूख-पिआस सभ खतम छल। जाबे चंपाक हाल नहि बुझाइत अछि ताबे हमरा चैन कतएसँ होइत। ई बात मामा सेहो बूझि रहल छलाह। तेँ हमरा ओतए पहुँचितहि महराजी भगताकेँ फोन केलाह। महराजी भगता उत्तर देलकनि- "हम अहीँ ओतए आबि रहल छी। सामना-सामनी बात होएत तँ बेसी नीकसँ बुझबैक। मामाकेँ अनुमान लागि गेलनि जे किछु गहींर बात छैक जे ओ सभ लग नहि बाजए चाहैत छथि।

महराजी भगता कनीके कालमे आबि गेलाह। ओ बेस चिंतित लागि रहल छलाह। अपने बाजए लगलाह- "ई कालू भगताकेँ अपने एतए आनि नीक नहि केलहुँ। ओ तँ महाचौपट आदमी अछि। रनिबासक महिलासभकेँ डिठिऔने रहैत अछि। जासूससभ महराजकेँ सूचना दए देलकनि अछि। कखनो ओकर जान जा सकैत छैक। हम ओकरा बुझेबाक बहुत प्रयास केलहुँ मुदा ओ अपन चालिसँ लाचार अछि। आब अहीं कहु जे की कएल जाए? आइ-ने-काल्हि ई मामिला अहाँ लग अएबे करत? किएक ने पहिने अहाँक जानकारीमे दए दी। सएह सोचि कए हम अहाँकेँ सभ

बात कहब उचित बुझलहुँ।"

"मुदा बात की छैक?"

"अरे एकटा-आधटा बात रहए तहन ने ओ कहि दी आ मामिला सलटि जाए। ई आदमी तँ महाघनचक्कर लागि रहल अछि, जतहि कोनो सुन्दर महिला देखैत अछि, एकर सुधि-बुधि खतम भए जाइत अछि।"

"ऐँ! एहन बात छैक?"

"आओर की, नहि तँ हमरा कुकुर कटने छल जे भोरे-भोर अहाँकेँ तंग करितहुँ।"

"ओ बात तँ बहुत गहींर बुझा रहल अछि। मुदा समाधान की होएत?"

"हम तँ एकरासँ तंग भए गेल छी। ऊपरसँ एकर भाए-मखना से बहुत शक्तिमान भए गेल अछि। ओ यमराजकेँ ततेक डरा देलक जे राजपुराक मृत्यक हिसाब-किताब सभटा ओकरे हाथमे सुन्झा देलखिन।"

"महराजकेँ एकर छिज्जाक जानकारी छनि कि नहि?"

"एहन कोन बात छैक जकर जानकारी हुनका नहि होनि। डेग-डेगपर तँ जासूस लागल अछि। ओहो रनिबासमे। ओहिठाम तँ महराजक खास जासूससभ दिन-राति लागल रहैत अछि।"

"तखन महराज एकरा बकसने कोना छथि?"

"महराजकेँ भांग पीबासँ होस होनि तखनने किछु आओर सोचताह? जहिए भक टुटलनि ई गेल घर अछि। अपने तँ जेबे

करत, हमरो लए जाएत?"

"से कतहुँ भेलैक अछि?"

"देखैत रहबैक। एहिठाम कोनो हिसाब-किताब नहि रहैत छैक जे महराज ककरा पर बिगड़ि जेताह। तामस हेबाक काज।'

“बड़ संकट बुझा रहल अछि।"

"तें ने हम दौड़ले अहाँ लग अएलहुँ जे अहाँ बुझनिक लोक छी, किछु समाधान निकालब। `'

"हम की समाधान निकालब? ओकरा अपन भगतैक बहुत दाबी छैक। ऊपरसँ मखना से सशक्त भए गेल अछि।"

से सभ सुनि मामा बहुत चिंतित भए गेलाह। फेर कहलखिन-

“अखन टटका समस्या ई अछि जे श्रीकांतक कालेजक संगी चंपा कैक दिनसँ नहि भेटि रहल छनि। ओकर माए से निपत्ता छैक।"

मामा बाजिए रहल छलाह कि महराजी भगता लपकि लेलाह- “चंपाक माए महराजक खास छैक। एमहर किछु दिनसँ ओ किछु चक्करमे पड़ि गेल छथि जे जानकारी महराजकेँ जासूस सभ देलक, तकरबादेसँ ओ निपत्ता अछि।"

“आ चंपा कतए अछि?"

"कालू भगता चंपाकेँ तंग करैत छलैक। से जानकारी केना-ने-केना महराजकेँ भेलनि। ओ ओकरा महिला छात्रावासमे रखबा देलखिन अछि।"

हमरा नहि रहल गेल।

"एकर माने जे महराजकेँ सभबातक जानकारी छनि?" -ओ पुछलक।

“तोरा की बुझाइत छह। राज-पाट ओहिना नहि चलैत छैक?”

"मुदा चंपा कोन छात्रावासमे छथि?"

"से महराजसँ के पुछत?"

"ककरो तँ बूझल हेतैक?"

"तोरा एतेक परेसानी कथीक छह?"

"ईहो कोनो बात भेलैक? हमर कालेजक संगी अछि। एकहि किलासमे पढ़ैत अछि। तरवन चिंता कोना ने होएत?"

बाता-बाती बढ़ैत देखि मामा बीचमे पड़ि गेलाह।

"कतहुँ छैक, ठीक छैक ने। एतबे बहुत नीक बात।"

मामा बजलाह। हमहु चुप भए गेलहुँ।

ताबतेमे कालू भगता कतहुँ सँ घुमैत-फिरैत आबि गेल। महराजी भगता ओ राजमंत्रीजीकेँ प्रणाम केलक। आ पुछि बैसल-

"की हाल छैक श्री कान्त?"

हम किछु नहि बाजि सकलहुँ।❑

२४

सभहक समय उदयास्त होइत अछि, सएह कालू भगताक

संग सेहो भए रहल छल। एक समय महराज ततेक तमसा गेल रहथिन जे लागैक जे ओ गेल। मुदा आब? आब तँ ओकर भाए सर्वशक्तिमान भए गेल छैक। जानक भए ककरा ने होइत अछि? आ तकर कमान आबि गेल रहैक मखनाक हाथमे।

महराजी भगता होथि चाहे महराजी पंडित सभ चिंतित छलाह। महराजकेँ तँ बकोर लागल छल। बिना दंडक भयकेँ राज-काज चलत कोना? ककरो जे ओ फाँसीक दंड देथिन से चलत कोना। यमपाश तँ मखनाक हाथमे छल। एहि विषयपर मंत्रणा हेतु राजसभा बजाओल गेल। भोरे एगारह बजे महराजकेँ तैयार कराओल गेल। नहा-सोना कए राजकीय वस्त्र पहिर महराज सभामंडप बिदा छलाह कि तरमरा कए खसलाह। चारूकात हरकंप मचि गेल। सभ जहाँ-तहाँ दौड़ रहल छल।"की भेल,की भेल? सभ एक-दोसरकेँ पुछि रहल छल मुदा ककरो एतेक पलखति नहि रहैक जे दोसरकेँ उत्तर देत। चारूकात लगैत छल जेना बिड़रो मचि गेल।

मखना तँ राजक हातेमे अपन मुख्यालय बना लेलक। छोटसँ पैघ सभबातक ओकरा जानकारी भेटए लागल। जएह यमपाश देखए सएह डरा जाइत छल। हालति तँ ई भए गेल जे बिना कोन प्रयासकेँ मखना राजपुराकेँ हथिअओने जा रहल छल।

सिपहसलारसभ महराजकेँ उठा-पुठा कए अस्पताल लए गेल। ओहिठाम पहुँचितहि महराज चिकरए-भोकरए लगलाह। बैद अएलाह। उन्टा-पुन्टा कए देखलखिन, फेर कहैत छथि- “महराजक तँ दहिना जांघक हड्डी टुटि गेल अछि। हिनकर हालति नाजुक अछि।'औ बाबू!ओ एतबे बाजल छलाह कि दूटा मुस्टंड ओहि बैदकेँ नरेठी पकड़लक आ लेने-लेने हातासँ बाहर लए गेल। आब

बाजह- “महराज ठीक हेताह कि तूँ अपन जान एतहि देबह?"

ताबतेमे मखना भभा कए हँसि देलक। ओ बाजल्-

"आब तोहरसभक खेल खतम अछि। आब चाबुक मखनाक हाथमे अछि। बिसरि जाह ओ जमाना। महराजक जुलुम आब नहि चलत।"

से ओ बजले छल कि सिपहसलारसभ बैदकेँ ओतहि छोड़ि इएह-ले ओएह-ले भागल।

महराजक ओहिठाम नीति निर्धारक समितिक बैसार भेल। महराज अपने तँ रहथि नहि, तथापि राजमंत्रीजीक अध्यक्षतामे कार्यवाही प्रारंभ भेल। सभसँ पहिने सुरक्षासँ जुड़ल मामिलापर विचार भेल। ई कोन बात भेल जे महराजक हड्डी चूर-चूर भए गेलनि आ सभगोटे असहाय भए देखैत रहि गेल। महराजी भगता आ राज पंडित एक-दोसर दिस तकैत रहलाह। सुरक्षा अधिकारी बजलाह-

"ई कोनो तरहेँ सुरक्षाक चूक नहि अछि। सभठाम चाक-चौबंद व्यवस्था अछि, रस्तोमे कोनो एहन पिच्छड़ वस्तु नहि अछि जे महराज एना भए कए खसि पड़ितथि। जरूर कोनो दैवी प्रकोप अछि।"

"यदि से अछि तँ महराजी भगता कए की रहल छथि? -राजमंत्री बजलाह।

"ई बड़का संकटक समय अछि। एखन आपसी वाद-विवाद उचित नहि।" -राजपंडित बजलाह।

मुदा समाधान तँ हमहीसभ करबैक। महराजक प्राण संकटमे देखितो हमसभ चुप तँ नहि रहि सकैत छी?-राजमंत्री बजलाह।❑

२५

महराज दर्दसँ परेसान छलाह। बैदक औषधिक किछु असरि नहि भए रहल छल। अंग्रजी दबाइ देल जाए कि नहि से निर्णय राजपंडितसँ पुछि कए हेबाक रहैक। ताहि हेतु हुनकासँ राजमंत्री विचार-विमर्ष करबाक हेतु बजओलखिन। दुनूगोटे घंटो मंत्रणा करैत रहलाह मुदा किछु निकलि कए नहि आएल। पंडितजीकेँ सक रहनि जे महराजपर कोनो अदृश्य शक्तिक प्रकोप अछि। मुदा तकर निवारणक कोनो उपाय नहि बुझाइन।

एमहर गाम-गाम ई समाचार पसरि गेल। चारूकातसँ लोकसभ महराजक जिज्ञासामे आबए लगलाह। पुबारि गाम तँ राजपुरासँ सटले छल। एहि गामक वच्चा, युवक, बूढ़सभ बिदा भेल। ओकरसभक देखसीमे पछबारि गामक लोक बिदा भेल। रस्तामे जे जतए भेटैत गेल से संग लागि गेल। महराजक बिमारी नहि भेल,एकटा तमासा भए गेल।

लोकसभ रस्तामे गप्प करैक" महराज अपन पापक फल भोगि रहल अछि?"

“से की?'-दोसर बाजल।

"गरीबसभक जमीन-जायदाद कौड़ीक भाव नीलाम करबा दैत छैक। कतेको घर उजड़ि गेल। कतेको लोक जिला-जबार छोड़ि परदेश चलि गेल। आखिर तकर पाप तँ लगबे करतैक।"

"बात तँ तूँ लाख टकाक कए रहल छह? महराजकेँ एतेक संपत्ति अएलैक कतएसँ? लोकेकेँ लुटलकैक ने?"

"हे बेसी फर-फर नहि करह। चारूकात जासूससभ पसरल अछि। व्यर्थमे मारल जेबह।"

"तेँ की? लोक उचित-अनुचित बजबो नहि करतैक। ई जे बड़का-बड़का महलसभ ठाढ़ छैक से कतए सँ बनलैक। हमरे-तोरे पसिनाक कमाइसँ ने?"

लोकक हुजुम आगू बढ़िते जा रहल छल। ताबतेमे कनीक हटि कए किछु हल्ला भेलैक।

ई कोनो उत्सव नहि छलैक जे गामक-गाम लोक उलटि जाए। मुदा लोककेँ की कहल जाए?सभकेँ महराजमे ततेक जिज्ञासा छलैक जे रोकने नहि रोकाएल। सुरक्षा अधिकारीसभ बैसार केलक आ राजक हातासँ पहिने सभकेँ रोकि देल गेल। ओहिमेसँ किछु गोटे सही मानेमे महराजक शुभचिंतक छलाह। ओ सभ काली!काली! सुमरए लगलाह। महराजपर संकट गहींर भेल जा रहल छल। कोनो इलाजसँ फएदा नहि भए रहल छल। ओमहर मरखना निचैन छल। ओकर तँ दुनू हाथमे लड्डू छलैक। यदि महराज हारि मानि लेलाह तँ ओकर राजपुरा राजपर प्रच्छन्न अधिपत्य भए जाएत,यदि से नहि भेल तँ महराज ओहिना बेकार भए जाएत किंबा अकालमृत्युक सिकार भए जेताह।ऽ

मरखनाक बढ़ैत प्रभुत्वसँ महराजे नहि यमराजो चिन्तित रहथि मुदा ओ तँ बाजी हारि गेल छलाह। ततेक तेजीसँ मरखना अपन जाल-पोल बढ़ओलक जे यमराजकेँ कोनो उपाय नहि

फुरेलनि। हुनका तँ अपने प्राण संकटमे छल। वाहरे बहादुर! तेहन-तेहन दिमाग अपना ओहिठाम भेल अछि जे राजपुरा के कहए,एहि लोककेँ के कहए, यमलोक धरि अपन लोहा मना कए रहल।

आब जखन राजपुराक सभगोटेक जीवन-मृत्यु मखनाक हाथमे आबि गेल छल तँ ओकरा एकटा अपन सचिवालयक आवश्यकता बुझेलैक। ताहि उपयुक्त समयक प्रतीक्षा कए रहल छल। ओहुना मखना काबिल लोक छल। ओकर उद्देश्य महराजकेँ मारब नहि रहैक, ओ तँ मात्र अपन प्रभुत्वसँ महराजकेँ अवगत करा देबए चाहए छल। ई तँ महराजक सिपहसलारसभक मूर्खता छल जाहि कारणसँ महराजकेँ एतेक जोर धक्का पड़ल। मुदा आबो केओ हुनका सही सलाह नहि दए रहल छलनि। महराजक सही इलाज तँ मखना लगमे छल।

मुदा मखना निश्चिन्त छल। ओ सोचलक- "आखिर कतए जेताह? सभसँ गड़बड़ी ई भेल रहैक जे मखना राजेक हातामे अपन बासा बना लेने छल। यद्यपि मखनाकेँ कखनो कए महराजपर दया अबैक मुदा फेर सोचए लगैत छल जे ई आदमी लोककेँ बहुत परेसान केने अछि। गरीबसभक माल-जाल कनी-मनी बकिऔताक चक्करमे नीलाम करा कए कतेको लोकक घर उजारि देने अछि। से सभ सोचैत-सोचैत मखना ततेक जोरसँ भभा कए हँसल जे ओकर प्रतिध्वनि सौंसे राजक हातामे सुनाएल।

एतेक भयानक हँसी के हँसल?ई मनुक्खक अबाज तँ नहि लागि रहल अछि। मामा बजलाह।

"छलैक तँ ठीके भयानक।" -हम कहलिअनि।

महराजक ओहिठाम पता ने की-की भए रहल अछि?"

"कारण?"

की कहल जाए?सभ अपन-अपन चक्करमे लागल अछि। महराज तँ नाम मात्रक छथि। ऊपरसँ दिन-राति पीने बुत्त रहैत छथि।"

"तखन राज-काज केना चलैत अछि?"

"एकरा कहबहक राज-काज चलब? कहुनाकँ घिचा रहल अछि। जकरा जम्हरे देखू अपन सुतारमे लागल अछि। हमरा तँ करवनहुँ कए मोन उबिआइत अछि जे एहिसभसँ निकलि जाइ, मुदा महराजकेँ मनाओत के?"

मामा संगे चाहपर गप्प-सप्प भए रहल छल। ओहीक्रममे कहलाह जे चंपाक कालेज जेबाक सभटा बंदोवस्त ओ स्वयं कए देलाह अछि। आब ओ काल्हिसँ कालेज जाएत। एहि शुभ समाचारसँ हमर मोन गद-गद भए गेल। मामा छलाह पारखी लोक। ओ हमर मोनक बात बूझि गेलाह आ कहए लगलाह- "सभ काज बिसरि अपन पढ़ाइ-लिखाइमे लागल रहह। एमहर-ओमहरमे समय नहि बिताबी।"

मामाक कहबाक तात्पर्य हम बुझलहुँ। मामासंग गप्प-सप्प चलिए रहल छल कि महराजी भगता राजपंडितक संग मामा लग पहुँचलाह। महराजक स्वास्थ्यक विषयमे चर्चा प्रारंभ भेल।

"महराजक स्वास्थ्यमे किछु सुधार नहि अछि। महरानी लोकनि बहुत चिंतित छथि। यदि हुनका किछु भए गेल तँ हमरा लोकनिक भगवाने मालिक।" -राजपंडित बजलाह।

"बात एकदम सही अछि। सभ अपन-अपन चक्करमे लागल अछि आ ओमहर महराज दिन-राति अपन कक्षमे दहाड़ि पारि रहल छथि।"

-महराजी भगता बजलाह।

"बात जे होइक मुदा एतबा तँ बुझा रहल अछि जे एखन धरि कएल गेल प्रयास कारगर नहि भेल।" -राजमंत्री बजलाह।

"मुदा कएल की जाए? एनामे तँ हमसभगोटे नपा जाएब।"

-राजपंडित बजलाह। सभगोटे अपने जान हेतु झखि रहल छलाह। महराजसँ बेसी चिंता हुनकासभकेँ अपन रहनि। राजपंडित बजलाह- “राजबैदकेँ बजाओल जाए।"

राजबैदकेँ समाद गेल। ओ धरफराएल ओतए पहुँचलाह।

"महराजक की हाल छनि?" -राजमंत्री बजलाह।

"किछु सुधार नहि अछि।"

"तखन?” -राजपंडित बजलाह।

"हमरा हिसाबे तँ हिनका इलाजक हेतु लंदने लए गेल जाए। ओहिठामक डाक्टर हिनकर कैक बेर पहिनहुँ इलाज केने अछि। की पता ओ एहू बेर सफल होथि?" -राजबैद बजलाह।

"सही राय दए रहल छथि। एकरा शीघ्र लागू कएल जाए"- राजमंत्री बजलाह।❑

२६

आपसी विचार-विमर्षक वाद महराज अपन सिपहसलारसभक संगे इलाज करबाक हेतु लंदन जेबाक हेतु बिदा भेलाह। ताहि हेतु एकटा विशेष वायुयानक व्यवस्था कएल गेल। संगमे के के जेताह? एहि विषयमे कतेको दिन घमरथन होइत रहल। महराजक अनुपस्थितिमे केओ तँ चाही जे राज-काज चलैत रहए। ताहि हेतु रानी साहिबा एतहिं रहि गेलीह। हुनकर सहयाता हेतु राजमंत्रीकेँ रहब जरूरी छल, से ओहो रहि गेलाह।

महराजी भगताक ओहिठाम कोन काज?तखन जेताह के सभ? असलमे जेबाक मोन तँ सभके रहैक। इलाजक नामपर मोफतमे लंदन भ्रमण भए जाइत। राजवैद्य, राजपंडितक अतिरिक्त बीस गोटे आओर महराजक सहायताक हेतु बिदा भेलाह। हुनकासभकेँ लंदनमे रहबाक हेतु होटलमे व्यवस्था कएल गेल। महराज अपने खास-खास लोकक संगे अस्पतालेमे रहताह। राजपंडितसँ दिन तका कए सभगोटे शुभ-शुभ कए लंदन बिदा भेलाह। कनीके कालमे विशेष विमान राजपुरा हबाइअड्डासँ उड़ि गेल। सभगोटे बजलाह- “जय गणेश!”

जहाजपर बैसि अपन राज-पाटपर सँ उड़ैत काल महराजक मोनमे कतेको तरहक प्रश्न उठि रहल छल। पानिमे दहाइत फूसक घरसभ की हमरे लोकक अछि? बाढ़िसँ दहाएल कोशीकातक लोक बान्हपर बैसल चिड़ै सन लगैत छल। महराजक मोनमे कैक बेर आत्मग्लानि होइत छलनि। महराजी हातासँ बाहरक भयाओन दृश्य देखि ओ चिंतामग्न रहथि। हुनकर आत्मा कैक बेर पुछलक-

“हे प्रजापालक! की देखि रहल छी? ई अहींक लोकवेद छथि, विपन्न, अशिक्षित,..। 'मोने-मोन कहलथि- “हमर दुर्भाग्य, आओर की भए सकैत अछि?ताबतेमे कोनो गामसँ विद्यापतिक गीतक मधुर संगीतपर नचैत-गबैत लोकसभ देखेलनि। एहनो हालतिमे ई लोकनि अपन संस्कार-संस्कृतिसँ कतेक सिनेह करैत छथि? मोनमे बहुत बातसभ अएलनि। हमर लोकसभक जीवन यात्रा ठमकि गेल ताहि हेतु हमही जिम्मेवार छी। एहि तरहें महराजक आत्मा ओ देहमे जबरदस्त संघर्ष बजड़ि गेल। इएह सभ सोचैत-सोचैत आँखि लागि गेलनि। जहाज तेजीसँ मिथिलांचलसँ आगू वढ़ि गेल।

हबाइ जहाज राजपुराक सीमासँ वाहर भेले छल कि चमत्कार भेल। महराज अपनेसँ उठि कए जहाजमे लघुशङ्का करए गेलाह। ओतएसँ आवि कए अपनेसँ बैसिओ गेलाह। ई तँ कमाल भए गेल?" -महराजी बैद बजलाह।"

जे भेल से भेल बेसी हल्ला नहि करू। महराजक मोनक कोन ठेकान? कहीं उल्टे ने पड़ि जाए" -राजपंडित बजलाह। महराज तँ एकदम स्वस्थ लगैत छलाह। सभसँ गप्प-सप्प करए लगलाह। ईहो पुछलखिन-

"हमसभ कतए जा रहल छी?"

"लंदन जा रहल छी श्री मान !" -राजबैद बजलाह।

“किएक?" -महराज पुछलखिन। आब के उत्तर देत? राजमंत्री छलाह नहि । आओर लोकसभ महराजसँ धखाइत छलाह।

ताबतेमे महराज ठहाका पाड़लाह। हुनका संग दैत तमाम

सिपहसलारसभ सेहो हँसल।

"हमसभ कतए जा रहल छी?" -महराज फेर पुछलखिन।

"लंदन सरकार!" राजबैद बजलाह।

"किएक? ओतए कोनो बैसार अछि की?" -महराज पुछलखिन।

आब की होएत?सभ परेसान छलाह। ताबे रानीक फोन अएलनि। ओना जहाजपर फोन करब उचित नहि तथापि चालकदल एकर ओरिआन केलथि जाहिसँ मामिला सम्हरि जाए।

"कोना छी?-रानी पुछलखिन।

"किएक? हमरा की भेल अछि? हम तँ केहन बढ़िआ छी?"

"अच्छा, एहिसँ नीक की भए सकैत अछि?"

"तखन लंदन किएक जा रहल छी? घुरि आउ।"

"नहि, नहि किछु दिन रहिए कए लौटनाइ ठीक होएत। जहाज लंदन पहुँचए वला अछि।"

"बादमे गप्प करब।"- फोन कटि गेल।❑

२७

ओमहर महराज इलाजक हेतु लंदन गेलाह आ एमहर रानी मौज-मस्तीमे लागि गेलीह। जहिआसँ हरि राजमंत्री बनलाह तहिआसँ हुनकर बेसी समय रनिबासेमे बितैत छल। करितथि की?रानीकेँ अवहेलना करक परिणाम जनैत छलाह। फेर ओहो

कोनो लोहाक बनल तँ नहि छलाह। रानी देखबामे अद्भुत सुन्दरि रहथि। गोर-नार बेस नमहर।

तहिना राजमंत्री सेहो बेजोड़ छलाह। नमगर-पोरगर,गोर-नार, ककरो देखि कए मोन होइतैक जे देखितहि रही। तेँ पहिने दिनसँ रानीक ध्यान हुनकापर अटकि गेलनि। कोनो-ने-कोनो काजक बहन्ना बना हुनका अपन बासामे बजा लितथि। बहुत मोसकिलसँ राजमंत्री ओहिठामसँ निकलबाक जोगार करथि। मोनमे हरदम अदंक रहैत छलनि जे यदि महराजक जासूस उल्टा-पुल्टा हुनका कहि देलक तँ गेल महिस पानिमे पड़रू समेत। मुदा रानीकेँ कथुक डर-भर नहि रहनि। ओ निधोख राजमंत्रीक संग रंग-रभसमे लागल रहैत छलीह। ई समस्या क्रमशः बढ़िते गेल।

ओना एहन घटनासभ घटित होएत से ओ कहिओ नहि सोचने रहथि। मुदा से भए रहल छनि। रानीक राजमंत्रीक प्रति आकर्षण बढ़िते जा रहल छलनि। राजमंत्री कैक बेर गोहार लगओलथि जे हुनका बकसि देल जाए, मुदा रानी आओर जोर-सोरसँ हुनका धेने चलि गेलीह। राजमंत्री सोचथि जे हुनकर तँ भगवाने मालिक। जहिए महराजकेँ पता लगलनि तहिए हुनकर प्राणहन्त कए देताह। एक राति रानीसँ कहलखिन- “आब हमरा एहिठामसँ छुट्टी देल जाए।"

रानी बिगड़ि गेलखिन। कैक दिन गप्प नहि केलखिन। राजमंत्री बेस मोसकिलमे पड़ि गेलाह। एहि कात खधिआ तँ ओहि कात खत्ता। केमहर जाथि। सोचलाह- “जखन जान जेबेक अछि तँ एहिना भोग-विलासकरिते चलि जाइ, सएह नीक। फेर अपन हाथमे अछिए की?" जहिआसँ महराज लंदन गेलाह तहिआसँ रानी

आओर बिरदावन भाजए लगलीह। राजमंत्रीक चौबीस घंटा रनिबासेमे रहए पड़नि। कनिको काल यदि एमहर-ओमहर भेलाह कि तुरंत बजाहटि भए जानि। कहबी छैक –खैर खून खासी खसी, बैर प्रिति मधुपान

रहिमन ये सब ना छुपे जाने सकल जहान।।

गाहे-बगाहे ई बात गल-गलाए लागल। चौकीदारसभ साकंक्ष भए गेल। जासूससभमे सहो एहि बातक चर्च होमए लागल जे किछु-ने-किछु गड़बड़ अछि। मुदा रानीक बात छल। बिलाड़िक गलामे घंटी बान्हत के?फेर महराजो तँ छलाह सएह। अपने कतेको रानी-पटरानी आ की-की ने रखने छलाह। ऊपरसँ दिन-राति पीने बुत्त रहैत छलाह। होस रहितनि तखनने किछु केओ कानोमे दितनि। आ कानमे देने की होइतैक? भए सकैए उल्टे कहीं फाँसी ने चढ़ि जाए। तेँ जतहि जे देखलक, सुनलक तकरा ततहि झपने रहल।

रानीक प्रेम प्रसंग करमान चढ़ैत गेल। राजमंत्रीक रनिबासमे आवागमन बढ़िते गेल। एकराति राजमंत्री रानीकेँ कहलखिन- “हमरा अपन भातिजसभक उपनयनमे गाम जेबाक अछि।"

"जेबाक कोन काज छैक, जे चीज-वस्तु पठेबाक मोन हो से पठा दिऔक।"

"एहनो कहीं भेलैक अछि? हमरासभ बारि देत। जेबै कोना नहि?"

"कहिआ छैक उपनयन?"

"एखन दस दिन बाँकी छैक। मुदा आर-आर विधसभ होइत

रहैत छैक। तेँ हम सोचैत छी जे जतेक जल्दी होइक ओतए पहुँचि जाइ।"

रानी हँसए लगलखिन आ कहलखिन-लगैए अहाँकेँ हम पसिंद नहि छी।"

"एहनो कतहुँ भेलैक अछि। मुदा..."

"मुदा की? फरिछा कए बाजु।"

"यदि महराजकेँ पता लगलनि तँ हम गेल घर छी?"

एतेक नहि डराउ। गाम जाउ मुदा जल्दीए चलि आएब।"

"जे अहाँक आज्ञा।"

रानी राजमंत्रीकेँ नानाप्रकारक गहना, चीज वस्तुसँ भरि देलखिन। गाममे जखन ओ उपहार अपन भौजीकेँ देलखिन तँ ओ देखितहि रहि गेलीह।

२८

महाजक जहाज लंदन पहुँचए वला छल। जकर इलाज करेबाक हेतु एतेक लोकसभ चलल छल सएह दन-दन कए रहल छलाह। से देखि सिपहसलारसभ उदास रहथि। मुदा राजबैद सम्हारलनि-

"महराजक हालतिमे सुधार अवश्य छनि मुदा ई जानब जरूरी अछि जे आखिर एना भेलैक किएक? आ की पता फेरो ने एहन भए जाए। कहीं हमसभ वापस राजपुरा चलि जाइ आ ओहिठाम फेर ओएह हाल ने भए जाइक। राजबैदक बातसभकेँ

पसिंद पड़लनि। महराज स्वयं झट दए किछु निर्णय लेबाक अभ्यस्त नहि रहथि। हुनका तँ चाही राजमंत्रीक सलाह। से राजमंत्री लगमे रहथिन नहि। राजमंत्रीकेँ वारंबार फोन जाए लगलनि। ताबे ओ अपन गाम भातिजक उपनयनमे सामिल हेबाक हेतु चलि गेल छलाह। कैक बेर फोन लगबो नहि करैक मुदा महराजकेँ शङ्का होमए लगलनि जे राजमंत्री हुनकर फोनकेँ जानि कए टरका रहल छथि। किछु-किछु आओर शङ्का तँ पहिने सँ रहबे करनि।

महराजकेँ नीक अस्पतालमे भर्ती कराओल गेल। डाक्टरसभकेँ कतहु कोनो गड़बड़ी नहि भेटि रहल छलैक तथापि राजबैद कहलखिन जे किछु दिन हिनका जाँच-पड़तालमे राखल जाए जाहिसँ पता तँ लागैक जे एना भेलैक किएक?" सएह भेल। महराज अस्पतालमे भर्ती भए गेलाह। हुनकर सिपहसलारसभ होटलमे ठहरलथि। महराज रहितथि तँ कनी-मनी संकोचो रहितैक। सभ निश्चिन्त भए दिन-राति जे-जे मोन होइत छल करैत छल। महराज बेचारे छटपट करथि जे करवन अस्पतालसँ हटि कए होटलमे जाइ आ आनंद मनाबी।

भोरे जरवन डाक्टरसभ हुनका देखए आएल तँ कहलखिन- "हमरा एहिठाम मोन नहि लागि रहल अछि।

“की हम होटलेसँ इलाज करा सकैत छी?”

ओसभ तँ चाहिते रहए सएह। कहलक- “किएक ने?" महराज ओहिठामसँ फारकती भेटितहि होटलक विशिष्ट कक्षमे पहुँचि गेलाह।❑

२९

महराजक लंदन बिदा होइत काल हुनका संगे के जाएत आ के नहि जाएत तकर निर्णय महराज स्वयं केलथि। एहि कारणसँ ओ आब ककरो किछु कहिओ नहि सकैत छलाह। आब हुनका चिंता होनि रानीक। राजमंत्रीक सलाहक से प्रयोजन होनि। महराजकेँ तँ कोनो रोग रहनि तखन ने ओ जाँचमे पकड़ाइत। सभ ठीके रहैक। तखन सभगोटे मीलि कए रमन-चमनमे लागि गेलाह। महराजक हेतु तँ कैकटा सूट आरक्षित छल। करवनो एमहर करवनो ओमहर। एहि तरहेँ पन्द्रह दिन बीति गेल। होटलक खर्चा करोड़मे पहुँचि गेल। महराजक खजांचीकेँ फोन भेल जे ओ होटलकेँ भूगतान करथि। खर्चाक हिसाब सुनि हुनका अदंक लागि गेलनि। ओ भागल-भागल रानी लग पहुँचलाह। रानी की करितथि? खर्चा देखि कए गुम पड़ि गेलि। महराजकेँ फोन लगेलीह-

"अहाँ सभटा ओतहि नष्ट कए लेब की?"

"की भेलैक?"

"होटलक बिल देखलिऐक अछि?"

"ई हमर काज अछि की?"

से सुनितहि रानी तमसा कए फोन राखि देलीह।

महराजक संगे हुनकर सिपहसलारसभ खूब भोग-विलास केलक। आब बिल तँ देबैक रहैक, से महराज देलखिन। करोड़ोमे बिल भेलैक। आ सभटा महराजक इलाजक नामपर। प्रात भेने सभ गोटे वापस स्वदेश बिदा भेल। ताहि हेतु एकटा हबाइ जहाजमे

एकहिठाम जगह आरक्षित कएल गेल जाहिसँ महराजक सेवामे कोनो त्रुटि नहि रहि जाए। सभगोटे अपना भरि सतर्क रहथि जे एतेक खर्चा केलाक बाद हुनका माथमे कतहुसँ चिंता नहि होनि।

जहाज उड़ि गेल। सभगोटे बहुत संतुष्ट रहथि। गप्प-सप्प होइत रहलैक। महराज करवन की मांगि देताह,ताहि हेतु सभगोटे बेरा-बेरी महराजेक लग-पास रहथि। जौं-जौं जहाज राजपुरा दिस भेल महराज किदनि-किदनि बकए लगलाह। आहि रे बा! ई की भेल?महराजक हालति क्रमशः गड़बड़ाइते चलि गेल।

राजपंडित आ राजबैद आपसमे मंत्रणा केलाह।

“आब की उत्तर देबनि रानीकेँ?” -राजपंडित बजलाह।

"जे छैक, से छैक? एहिमे हम अहाँ की कए सकैत छी?जाहि बिमारीक इलाज हेतु गेल रहथि से तँ ठीक भए गेलनि ने?" राजबैद बजलाह।

राजपंडित गुम रहथि।

"जे भावी।" -राजपंडित बजलाह।

जेना-जेना जहाज मरवनाक प्रभाव क्षेत्रमे आबि रहल छल, त्यों-त्यों महराजक नव उकबासभ भेल जा रहल छलनि। हुनकर सोचबाक,बुझबाक क्रम गड़बड़ा रहल छल। खने किछु बाजए लगितथि,खने किछु। बेसीकाल अपनेसँ प्रलाप करितथि। ओ अपनेसँ प्रश्न करथि आ अपने उत्तरो देथि । सिपहसलार सभ तँ छगुन्तामे छलाह जे ई कोन नव उकबा भेल। महराजकेँ कोनो ग्रहक फेरी लागि रहल अछि" -राजपंडित बजलाह।

"फेरी तँ अपनासभकेँ लागल अछि। -राजबैद बजलाह।

"हड़बड़ेबाक काज नहि छैक। जे हमरा अहाँक हाथमे अछि सएह ने करबैक। हम अहाँ कोनो भगवान छी जे सभटा हमरे अहाँक हिसाबे चलतैक।"

"से तँ बुझलहुँ। कहुना कए महराज अपन घर पहुँचि जाथि।"

महराज बड़बड़ाइते जा रहल छलाह-

“कहल करिअह जे अपन लोकक संग अन्याय नहि करह मुदा तूँ सुनलह? नहि सुनलह। तँ आब कथी लेल परेसान छह? अपन कर्मक फल भोगए लेल तैयार रहह।"

"हम महराज छी। हमरा ऊपर ककरो अनुशासन नहि चलि सकैत अछि। फेर जनताकेँ अंकुश देब आ नियंत्रणमे राखब हमर कर्तव्य अछि।"

"कर्तव्य अछि तँ करैत रहू। अहाँक कारण कतेको लोक बरबाद भए गेल... ।"

सभगोटे चिन्तित छलाह जे ई कोन नव समस्या भए गेल?

जहाज राजपुरा हबाइ अड्डा पर उतड़ि रहल छल। ओहीठाम लगेमे मखनाक मुख्यालय रहैक। महराजक उनुपस्थितिमे ओ अपना-आपकेँ सुव्यवस्थित कए लेने छल। यमराज तँ पहिने हाथ बारि देने छलाह। रेखा सेहो मनोयोगपूर्वक मखनाक मदति कए रहल छलीह। एमहर मखना आ कालू भगतामे मेल-जोल बढ़ि गेल। आखिर दुनू छल तँ सहोदरे। से बात मोनमे कतहुँ-ने-कतहुँ कचोटैक। फेर एक हिसाबे मखना तँ एहि संसारसँ जा चुकल छल।

ई तँ मखनेक हूनर कहू जे ओ फेरसँ अपनाकेँ तेहन मजगूत कए लेलक जे महराजक कोन कथा यमराज धरि ओकरासँ पस्त छलाह।

हबाइ जहाज अपन गंतव्यपर उतरल। मुदा महराज चलबा-फिरबा जोग नहि रहथि। कहुना कए उठा-पुठा कए हुनका महल आनल गेल।❑

३०

राजपुरा टीसनपर लोटना चाहक दोकान खूब चलैत चलैक। लग-पासक गामक जे केओ लोक ओकरा देखेतैक तकरा घेरि कए ओ चाह जरूर पिअबैत आ संगहि संगे गप्पो-सप्पो करैत। अपन बितल दिनक स्मरण कए-कए कैक बेर सोचमे पड़ि जाइत। ओना आब ओकरा गाम जेबाक पलखति नहि भेटैत छलैक। दिन-राति टीसनपर पाइ झहरैत रहैत छलैक। तकरा समेटैत की झुठे गाम जा-जा समय बरबाद करैत?

ओहि दिन हम चंपाक संगे कालेजसँ वापस होइतकाल ओकरा रेलपर चढ़ेबाक हेतु टीसन गेल रही। रेल बहुत देरीसँ अएतैक से वारंबार घोषणा भए रहल छल। हारि कए हमरा लोकनि प्लेटफार्मपर राखल बेंचपर बैसि गेलहुँ। पाछूएमे लोटनाक चाहक दोकान छल। लोटना हमरा धर दए चिन्हि गेल।

"श्री कान्त एतए की कए रहल छह?"

"एहीठाम पढ़ि रहल छी। एखन एकटा संगीकेँ रेलपर चढ़ेबाक हेतु आएल रही मुदा गाड़ी देरिसँ अएतैक।"

"ओ! एतेक दिनसँ भेटो नहि भेल। डेरा कतए रखने छह?"

"राज छात्रावासमे।"

से सुनितहि ओकर कान ठाढ़ भए गेल। कारण ओ जनैत छल जे राज छात्रावासमे जगह भेटब सभक वशक बात नहि छैक। जरुर कोनो खास जोगारसँ ई काज भेल होएत। फेर ओ बाजल- “राज छात्रावास तँ लगीचे अछि। आब भेंट-घाँट होइत रहत।"

"अवश्य।" से कहि हम आगू बढ़ले छलहुँ की रेल अएबाक सूचना प्रसारित होमए लागल। धर-धर करैत रेल प्लेटफार्म संख्या एकपर आबि गेल। हम चंपाकेँ ट्रेनमे बैसा कए अपन डेरा दिस संगे बिदा भेलहुँ।

चंपाकेँ जाइत काल हम गंतव्यक बारेमे पुछलिऐक। ओ कहलक जे अपन गाम जा रहल अछि आ जल्दीए लौटत। ओ ट्रेनमे बैसि गेलि। ट्रेन खुजि गेल। नहूँ-नहूँ ओ प्लेटफार्म छोड़ि देलक,तखनहु हम ओतहि ठाढ़े रही। कनीके हटि कए लोटन अपन चाहक दोकानपर बैसल हमरा टुकुर-टुकुर देखि रहल छल, मुदा किछु कहलक नहि। संयोगसँ पाछूसँ एकटा यात्री धड़फड़एल आबि रहल छल आ हमरासँ टकरा गेल। एहि अप्रत्याशित आवेगसँ हम मुँहे भरे खसलहुँ। लोटन चिकरि उठल- “खसि पड़ल..खसि पड़ल.। आ हमरा दिस दौड़ल। हम दहिना हाथ आगू बढ़ा देलिऐक। तकर बाद की भेलैक से नहि कहि?जखन होस आएल तँ अस्पतालक बेडपर पड़ल रही, हाथ आ पैरमे सौंसे प्लास्टर लागल छल। डाक्टर कहलक जे दहिना हाथ आ बामाँ पैरक हड्डी टुटि गेल अछि। मनुक्ख सोचैत अछि किछु आ होइत छैक किछु। किछुए दिनमे बीऐक परीक्षा हेबाक रहैक। आब की होएत, कहि नहि।

हमरा खसैत चंपा देखने रहए। ताबे ट्रेन खुजि गेल रहैक। ओ चिकड़बाक प्रयासो केलक मुदा ट्रेनक सीटीक आगू ओकर अबाज दबि गेल। ई बात हमरा लोटन कहैत रहए जे घटना कालसँ अखनधरि हमरे लगमे बैसल छल। ओएहटा हमर एहि संकटक समयमे संग रहए। मामा गाममे भातिजक उपनयनमे नोत पुरए गाम गेल रहथि। समाद गेलनि। ओहि दिन रातिम छलैक। ओ सभ काज छोड़ि तुरंत राजपुरा बिदा भए गेलाह।❑

३१

राजपुराक अस्पतालक चर्चे बेकार। रोग किछु आ इलाज कथुक। एहन कतेको लोक गलत-सलत इलाजसँ परेसान भेल अस्पतालक चक्कर लगबैत रहैत छलाह। ककरो गलत-सलत दबाइक कारण किडनी खराब भए गेल छल। केओ दहिना आँखिक इलाज करबए आएल आ बामाँ आँखि सेहो खराब करा कए गेल। एकटा मरीजकेँ पेटमे गैस बनैत रहैक, इलाज हृदयक चलैत छलैक। सुइआपर सुइआ। हालति खराबे भेल जा रहल छल। ओ तँ रच्छ भेल जे ओकर कोनो डाक्टर संबंधी रहैक। संयोगसँ ओकरा पता लगलैल। ओ हाल-चाल लेबाक हेतु आएल। कागज-पत्तर पढ़ि-पढ़ि छगुन्तामे पड़ि गेल। ओकर कानमे कहलकैक- “जान लए भागि जाउ। गलत इलाज भए रहल अछि।" औ बाबू! ओ बेचारा इएह-ले ओएह-ले भागल। ओ आगू-आगू भागि रहल छल आ एकटा जवान डाक्टर पछोड़ केने छल। ओकर हाथ-पैर जोड़ि रहल छल- “हमर नौकरी चलि जाएत,एना नहि भागू।" मुदा ओ रोगी

घुमि कए नहि तकलक।

ओहने अस्पतालमे हमर इलाज चलि रहल छल। जहिआसँ प्लास्टर भेल कोनो डाक्टर घुरिओ कए नहि आएल। कंपोटर करवनो कए अबैत आ इसारासँ कहैत –

“फलना डाक्टरक नर्सिंगहोममे भर्ती भए जाउ। बहुत जल्दीए ठीक भए जाएब। एहिठाम कोनो डाक्टर नहि अबैत छैक।"

हम बकर-बकर तकैत रहैत छलहुँ। मोने-मोन हनुमानजीकेँ गोहरबैत रहैत छलहुँ। आओर कोनो समाधानो नहि छल। डर होइत छल जे यदि हाथ-पैर बेकार भए गेल तँ जिनगी कोना चलत? के देखत?

जखन भोरे-भोर अस्पतालमे मामाकेँ देखलिअनि तँ जान-मे-जान आएल। ओ कि एलाह, हमरा कोठरीमे डाक्टरक पाँति लागि गेल। केओ आला लगा रहल अछि तँ केओ एक्सरेक विवरण पढ़ि रहल अछि। ताबतेमे एकटा बूढ़ डाक्टर ओकर हाथसँ एक्सरेक विवरण लए पढ़ए लगलैक। एक्सरे देखितहि ओ चिकरए लागल- “ककरो एक्सरे ककरो फाइलमे लगा देने छहक। तोरासभकेँ तँ फाँसी हेबाक चाही।"ओकर बात सुनि कए तँ हमर मोन ततेक घबड़ाएल जे भेल जे तुरंते ओतएसँ भागी। मामा कतेक काल हमरा लग रहताह? हुनका जाइतहि ई डाक्टरसभ निपत्ता भए जाएत। हमर टांग-हाथकेँ भगवाने मालिक।

कनी कालमे डाक्टरक हुजुम आगू बढ़ि गेल। मामाकेँ देखितहि हमरा कना गेल। कहलिअनि-

"कोनो उपायसँ हमरा एहिठामसँ निकालू,नहि तँ हमर जान नहि बाँचत।"

मामा बहुत बुझेबाक प्रयास केलाह। हुनका होनि जे हम भगल कए रहल छी। मुदा जखन अगल-बगलकेँ मरीजसभ अपन-अपन खिस्सा कहए लगलनि तखन तँ ओ बहुत परेसान भए गेलाह। तुरंत हमरा ओहिठामसँ निकालबाक हेतु आवेदन देलखिन आ लेने-लेने निजी नर्सीगहोममे चलि गेलाह। ओहिठाम हमर फेरसँ एक्सरे भेल। एक्सरे देखि कए डाक्टर कहलकनि-

"हिनकर तँ कोनो हड्डी टूटल नहि छनि। कनी-मनी मोच जरुर छैक, ताहि लेल पट्टी बन्हलासँ काज चलि जइतैक। पलास्टरक तँ कोनो प्रयोजन नहि छलैक।"

“आब की कएल जाए?" -हमर मामा पुछलखिन।

"प्लास्टर हटबा दिऔक। कच्चापट्टीसँ दस दिनमे ठीक भए जेताह।"

सएह भेल। ओहि डाक्टरकेँ धन्यवाद दी जे हमर हाथ-पैर बाँचि गेल। जखन ककरो आनक एक्सरे देखि कए इलाज भेल रहैक तँ परिणाम सोचल जा सकैत छल। ओहि दिन हमर प्लास्टर काटल गेल आ कच्चापट्टी लगा देल गेल। दस दिनक बाद ओहो हटि गेल। हम एकदम पहिने जकाँ दुरुस्त भए गेलहुँ। लगबे नहि करए जे हमरे चोट लागि गेल छल।❑

३२

अस्पतालसँ अएलाक बाद कालेजक चिंता धेलक। दस दिनक बाद बीए अन्तिम परीक्षा होबक रहैक। तैयारी किछु नहि भेल रहए। चंपा लगमे नोटसभ छलैक मुदा ओकर किछु थाहे-पता नहि लागि रहल छल। कालेज गेलहुँ तँ केओ संगतुरिआ नहि भेटल। सभ परीक्षाक तैयारीमे लागल छल। कालेजसँ वापस अबैत काल टीसन चलि गेलहुँ। इच्छा भेल जे लोटनकेँ भेंट कए धन्यवाद दए दिऐक। संकटक समयमे ओएह ठाढ़ भेल छल। टीसनपर गेलहुँ तँ लोटन नहि देखाएल। ओकर दोकान बंद छलैक। अगल-बगलक दोकान वलासँ पुछलिऐक तँ कहलक जे ओ गाम गेलाह अछि। गाममे किछु जरूरी काज छनि। एहिसँ बेसी ओकरासभकेँ किछु नहि बुझल रहैक।

अछता-पछताक अपन डेरा दिस बिदा भेलहुँ कि पाछूसँ केओ सोर पाड़लक। "ई तँ चंपा बुझा रहल अछि।" -मोने-मोन सोचाएल। जाबे किछु करी-करी ताबे चंपा डेगारि कए हमरा आगूमे ठाढ़ि भए गेलि।

"कोना छैं?" -चंपा बाजलि।

"हम तँ एकदम ठीक छी।" -हम बजलहुँ।

"हम तँ किछु तैयारी नहि कए सकलहुँ।"

"हमर नोटसँ काज चला ले।"

"तोरो तँ परीक्षा देबाक छौक?"

"सभटा भए जेतैक। तोरा व्यर्थक चिंता करबाक हिस्सक

छौक।"

“सांझमे हमर डेरापर आबि कए नोटसभ लए अबिहैं।"

चंपाक डेरा वालिकासभक छात्रावास रहैक। ओकर लग-पास सदरिकाल चौकीदारक पहरा रहैत छलैक। तखन ओ हमरा ओतए कोना बजओलक आ सेहो रातिमे, से हमरा नहि बुझाए। हमरा तँ परीक्षाक भय ततेक जोर केने छल जे आओर किछु सोचबाक समय नहि रहए। साँझ पड़ल आ हम ओमहर बिदा भए गेलहुँ। ओहि छात्रावासक लगीचमे पहुँचहि वला रहीके पेटमे बड़ी जोरसँ दर्द उठल। रातुक समय आ एकदम निर्जन स्थान छल। ककरा कहितिऐक? आगू बढ़बाक साहस नहि भेल। सड़कक कातमे चुक्कीमाली बैसि गेलहुँ। नहूँ-नहूँ पेटकेँ ससारैत रही कि चंपाक अबाज सुनाएल।

"श्रीकांत! श्रीकांत! मुदा हमर बाजल होअए तखन ने उत्तर दितिऐक। सड़कक ओहिपार छात्रावास छलैक। जखन हम किछु उत्तर नहि दए सकलिऐक तँ ओकरो चिंता भेलैक। सड़क दिस आगू बढ़लि। ताबे हमर पेटक दर्द आओर जोर भए गेल। हम ठामहि सड़कपर पड़ि गेलहुँ। हमरा सड़क पर देखि कए चंपा दौड़ि कए हमरा लग आएलि। ताबत एकटा रिक्सा वला जाइत रहैक। ओकरा रोकलक। ओहिपर कहुना कए रिक्सा वलाक मदतिसँ चढ़ओलक। ओहनो हालतिमे हमरा ओकरा संग बहुत नीक लागि रहल छल। हम बाजि नहि पाबी मुदा हमर मुखाकृतिसँ एहिबातक अनुमान ओकरो होइत रहैक। ओ हमरा छोड़िओ तँ नहि सकैत छलि। कनीके हटि कए एकटा डाक्टर रहैक। ओतए हमरा रिक्सासँ उतारलक।

डाक्टर बहुत ध्यानसँ देखलक। आला लगा-लगा कैक बेर एमहर-ओमहर केलक। मुदा कोनो खास गड़बड़ी नहि भेटलैक। तखन ओसभ बात पुछलक। फेर चंपा दिस तकैत बाजल- “हिनका कोनो बिमारी नहि छनि। परीक्षाक कारण मानसिक तनाव भए गेल छनि। ई बेसी चिंता करैत छथि, से छोड़ब जरूरी थिक।"

डाक्टर बुझा-सुझा आ किछु दबाइ दए हमरा सभकेँ बिदा कए देलक। आश्चर्यक बात ई जे ओ किछु फीस नहि लेलक। फीसक चर्च होइतहि बाजए लागल्-"अहाँसभ विद्यार्थी छी। जखन पैघ भए जाइ तँ एहिना ककरो मदति कए देबैक।"

ओहि रातिक पढ़ाइ ओहिना रहि गेल। चंपा कहलक जे काल्हि हम कालेज आएब, ओतहि तोरा लेल किछु नोट लेने आएब।"

"ठीक छैक" -से कहि हम अपन डेरा चलि अएलहुँ। रातिभरि मोनमे गुदगुदी उठैत रहल।❑

३३

परीक्षाक समय लगीच छल। अस्तु, हम दुनू गोटे चाहिओक कखनो एमहर-ओमहरक गप्प नहि करी। दिन-राति एक कए पढ़ैत रहलहुँ। कोनो दिन एहन नहि बितल जहिआ हमसभ आठ-दस घंटा एकट्ठे नहि रही, मुदा पढ़ाइक भूत सबार छल। तकर फएदो भेल। तीन मासक बाद जखन परीक्षाक परिणाम आएल तँ सौंसे कालेज हमरेसभक चर्च रहए। कालेजक सूचनापट्टपर मोट-मोट आखरमे

हमर दुनू गोटेक नामक आगू लिखल छल-प्रथम श्रेणीमे सभ विषयमे विशिष्टताक संग उत्तीर्ण। हम कैक बेर ओकरा पढ़लहुँ। जे देखि रहल छलहुँ ताहि पर विश्वासे नहि होअए।

मुदा सत्य सएह छल। कहाँ पास करए हेतु झखैत रही, कहाँ एहन नीक परीक्षाफल भेल। ई एकटा चमत्कार छल। मोन भेल जे चंपाकेँ फोन कए ई सुखद समाचार दी,फेर इच्छा भेल जे जाइए कए कहिऐक। तुरंत एकटा रिक्सा केलहुँ। भाड़ा के पुछैए? थोड़बे कालमे चंपाक डेरापर हम पँहुचि गेल रही। चंपा बाहरे द्वारपर भेटि गेलि। ओ दुध लए जाइत छलि। हमरा देखि ओकर मोन धुक-धुक करए लगलैक। कारण ओकरा बुझल रहैक जे आइ परीक्षाफल आएत। तेँ हमरा देखितहि पुछलक- “की भेलैक?"

"हम दुनू गोटे प्रथम श्रेणीमे सभ विषयमे विशिष्टताक संग सफल भेलहुँ।” -ई सुनितहि ओ प्रसन्नतासँ आप्लावित भए हमरा भरिपाँज पकड़ि लेलीह। प्रसन्नतासँ ओकर आनन लाल भए गेल छल। देखनाहर देखिते रहि गेल, जे ई की भए रहल अछि? ओहिठामसँ सोझे हमसभ मिष्ठान्न भंडार गेलहुँ आ भरिपेट रसगुल्ला अपनो खेलहुँ आ चंपा सेहो खेलथि। मिठाइ खेलाक बाद हमसभ फेर रिक्सापर चढ़लहुँ। कालेज जाइत रही कि कालू जोरसँ अबाज देलक।

"केमहर जाइत छह?"

"कालेज जा रहल छी।"

"हमहुँ ओमहरे जाएब।"

मुदा चंपा इसारा केलक जे बढ़ि चलू। रिक्सा वला आगू बढ़ि

गेल। कालूकेँ ई बात बड़ खराब लगलैक। ओ सोझे हमर मामाक डेरापर चलि गेल आ नून-मिरचाइ मिला कए हमरा लोकनिक विरुद्ध हुनकर कान भरि देलक। कालेजसँ लौटलाक बाद हम जखन माम लग गेलहुँ तँ हुनकर मुँह फुलल छल। प्रणाम केलिअनि तैओ उत्तर नहि देलाह। बूझि गेलिऐक जे कालू अपन काज कए गेल। हम अपन समाचार दैत हुनका कहलिअनि –“रस्तामे कालू भेटल छल आ अपना संगे चलए कहने रहए मुदा हमरा लोकनिकेँ ओकरापर विश्वास नहि भेल। निश्चय ओएह अहाँक कान भरलक अछि।"

ई बात सुनितहि मामा भभा कए हँसए लगलाह। बाजि उठलाह- “सत्ते कहलह। ओ बहुत दुष्ट अछि। तोहर परीक्षा परिणाम सुनि हम बहुत प्रसन्न छी। भगवती हमरा लोकनिक प्रार्थना सुनि लेलथि। हमरा लोकनि साँझमे महराजसँ भेंट करए चलब। ओहो बहुत मदति केलाह।"

"ठीक छैक। हम ओहि समयमे आबि जाएब।"

"चंपाकेँ सेहो लेने अबिअहक।"

ई बात सुनि बहुत नीक लागल।

हम चंपाकेँ फोन कए साँझक कार्यक्रमक बात ओकरा कहलिऐक मुदा ओ साफे मना कए देलक। ओ महराजक नाम लितहि जेना परेसान भए गेलि। हम आगू किछु नहि कहलिऐक आ बात बदलि कए किछु-किछु गप्प कनीकाल करैत रहलहुँ। हम नहि बूझि सकलिऐक जे महराजसँ ओकरा कथीक तामस छैक जखन कि हुनकासँ ओकरो गाहे-बगाहे मदति तँ भेटबे केलैक।

खैर! साँझमे हम कनी पहिने मामाक ओतए पहुँचि गेलहुँ।

मामा पूछलाह-

"एसगरे अएलह?"

हमरा चुप देखि ओ बात बदलैत कहलाह जे महराज संयोगसँ आइ ठीक छथि। आशा करैत छी जे हमरा लोकनिकेँ भेँट भए सकत।"

"महराजकेँ की होइत छनि? अखने तँ विदेशसँ इलाज करबा कए अएलाह अछि?"

"छोड़ह ई गप्प-सप्प। बहुत तरहक बात छैक। राज-काजमे ई सभ होइते छैक।" -मामा बजलाह।

मामा महराजक राजमंत्री छलाह मुदा जेना-जेना ओ रानीक लगीच अबैत गेलाह, महराज हुनकासँ फटकी होइत गेलाह। मामाकेँ एहि बातक अनुमान रहनि मुदा ओ किछु नहि कए सकैत छलाह। महराजकेँ आपसेमे टनामनी रहनि। ओकर समाधान ओएह कए सकैत छलाह।

हमसभ महराजक मंत्रणाकक्ष लग ठाढ़ रही। मामा हमरा ओतहि ठहरबाक हेतु कहलाह। ओ भितर एसगरे गेलाह। कनीकालमे एकटा सिपहसलार हमरा बजबए आएल। हम पहिल बेर महराजक महलमे भितर धरि गेल रही। ओहि महलक शोभा अनुपम छल। चारूकात नाना प्रकारक नक्कासी कएल गेल छल। एक-सँ-एक तरहक साज-सज्जाक चीज-वस्तुसभ महलक महत्व बढ़ओने छल। महराज बीचमे विराजमान छलाह। दुनूकात प्रमुख लोकसभ कनीक हटि कए बैसल रहथि। ओहिमे राजमंत्री,

राजपंडित, महराजी भगता, राजबैद प्रमुख छलाह। किछु आओर लोक छलाह जिनका हम नहि चिन्हि सकलिअनि।

हम भितर जाइते महराजकेँ विनम्रतापूर्वक प्रणाम केलिअनि। हमरा बारेमे मामा सभबात पहिने कहि देने रहथिन। तेँ हमरा देखितहि महराज बहुत प्रसन्न भेलाह। हमर हाल-चाल पुछलाह आ आगूक पढ़ाइ-लिखाइक हेतु सहायताक आश्वासन सेहो देलाह। हुनकासँ आशीर्वाद लए हम ओतएसँ बहार भइए रहल छलहुँ कि सौंसे महलमे बहुत जोरकेँ अबाज भेल। मामा हमरा जल्दीए निकलि जेबाक संकेत केलाह। हम ओतएसँ निकलले छलहुँ कि देखैत छी जे किछुगोटे महराजकेँ उठओने-पुठओने कारमे राखि रहल अछि।

"एतेक जल्दीमे की भए गेलनि हिनका?" -हम सोचैत रही।❑

३४

जहिआसँ महराज विदेशसँ वापस अएलाह किछु-ने-किछु धमाचौकरी होइते रहल। जखन-तखन ओ अण्ट-सण्ट बाजए लगितथि। बेसीकाल आत्मालाप करैत रहितथि। हुनका ठीक करबाक जतेक प्रयास होइत गेल ततेक हुनकर हालति ओझराइते गेल। तरह-तरहक डाक्टर,बैद सभ अएलाह-गेलाह मुदा मामिला जस-के-तस। एहि विषयपर विचार विमर्ष हेतु राजक प्रमुख लोकनिक गुप्त बैसार भेल। एहिमे राजमंत्री, राजपंडित, राज बैद, राजभगताक अतिरिक्त राजक जासूसप्रमुख सेहो छलाह।

सभगोटे जासूसप्रमुखक बात सुनबाक हेतु उत्सुक भेलाह। महराजक पछिला तीनमासक गतिविधिक वीडियो गुपचुप बनाओल गेल छल जाहि आधारपर ओ कहलाह- “महराज अपना वशमे नहि छथि। ओ बेसीकाल अपने-आपसँ प्रश्नोत्तर करैत रहैत छथि। ओ एना किएक कए रहल छथि से हमरा नहि बुझा रहल अछि।"

महराजी भगता कहलखिन- "वीडियो चलाउ। हमसभ प्रत्यक्ष देखए चाहैत छी।"

"सही कहलाह" -राजमंत्री बजलाह। जासूसप्रमुख वीडियो चला देलाह।

ओहि जासूसी वीडियोक चलिते बैसारमे गुम्मी पसरि गेल। महराज करवनो हँसैत छलाह तँ कखनो अपने-आपपर तमसाइत छलाह। ई आत्मालाप विचित्र लागि रहल छल मुदा छल कटुसत्य।

"तूँ अपने लोकक शोषण करैत रहलह। गरीबसभक जथा-पात कनीमनी लगानक चलते नीलाम करैत रहलह। परिणाम की भेल? सौंसे इलाकामे दरिद्रता पसरि गेल। जाहिठामक माटि-पानि एतेक उर्वरा अछि ताहिठामक लोक अन्न बेगर प्राण दैत रहल आ तूँ व्यर्थक अहंकार प्रदर्शन हेतु बड़का-बड़का देबाल ठाढ़ करैत रहलह।"

"तूँ के हमरा टोकनाहर? हम छी महराज। जे मोन होएत से करब, जे मोन भेल से केलहुँ। तूँ दखल देनिहार कैँ?"

"कथीक महराज? जा कए देखहक केरलमे। ओहो महराजे छल। सौंसे इलाकाकेँ स्वर्ग बना देलक। धीआ-पूतासभक पढ़इ-

लिखाइक हेतु सभ सुविधा कए देलक। लोक ओकर दिन-राति जयगान करैत अछि।"

"की कहलह? हमरासँ बेसी जयगान ककर हेतैक?"

"ई तोहर भ्रम छह। किछु लोभी, लालची लोकसभ तोरा घेरने अछि आ झूट-मूठ चढ़ओने रहैत अछि, तँ तोरा होइत छह जे वाहरे हम!" से कहि महराजक आत्मा ओकरेपर हँसए लगैत अछि।

“खबरदार! हम महराज छी। हमरा संगे मर्यादासँ रहह,नहि तँ.. ।"

"नहि तँ की कए लेबह? हम तँ तोरा कहिआ ने संग छोड़ि देलिअह।"

"की अकर-बकर बाजि रहल छह। आत्मा कहीं जीविते फराक भेलैक अछि?"

"ई बात तँ तोरा स्वयं सोचबाक चाही, जे तोरे संगे से सभ किएक भए रहल अछि जे कतहु नहि होइत अछि।"

“रोकू, रोकू महराजी भगता चिकरलाह। भीडिओ रोकि देल गेल।

“की भेलैक?-राजमंत्री पुछलखिन।

"कोनो अपरिचित वस्तु लगीचमे बुझा रहल अछि।" -महराजी भगता बजलाह।

"के अछि? एकरा पकड़ल जाए। एना राजभवनमे निधोख के घुमि सकैत अछि?” -राजपंडित बजलाह।

"मुदा हमरा तँ किछु नहि देखा रहल अछि?" -जासूस

बजलाह।

“की देखबैक? जखन आँखिमे शक्ति रहत तखन ने देखबैक?"

-महराजी भगता बजलाह। सभ-सभक मुँह ताकए लागल।

“महराजक स्थिति बहुत खराब बुझाइत अछि, ऊपरसँ एहिठाम किछु अदृश्य शक्ति सेहो काज कए रहल अछि। पता नहि ओकर एहिठाम घुरिएबाक की लक्ष्य छैक। जे छैक, मुदा हालति बहुत खराब बुझा रहल अछि।" -राजबैद बजलाह।

“एतेकटा राज महल, अकूत संपदा अछैतो महराजक ई हाल किएक भेल?" एहि विषयमे मंत्रणा चलिऐ रहल छल कि हहाइत-फुहाइत मरखना यमपाश फेकलक। बैसारमे हड़बिड़रोमँचि गेल। सभगोटे ठामहि पड़ि गेलाह। ककरो होस नहि रहैक, मुदा साँस चलि रहल छलैक। सिपहसलारसभकेँ किछु बुझएमे नहि अएलैक। सभ जान लए भागल।

मरखनाक आक्रमणक तोड़ आब ने महराजी भगता लग छल ने महराजक कोनो आओर सिपहसलार लग। जखन यमराजो ओकरा संगे समझौता कए लेलनि तँ अनकर कथे कोन?महराजी भगता होस अबिते इएह सभ सोचि रहल छल कि कालू ओहिठाम पहुँचल।

"किछु बुझलहक?" -महराजी भगता पुछलखिन।

“की बुझबै? मरखना बेर-बेर हमरा समाद दैत अछि जे महराजकेँ कहुन चेत जाथि,नहि तँ..."

"नहि तँ की?"

"आब से तँ अहाँ स्वयं बुझनिक छी। आइ-काल्हि मखनाक तोड़ नहि अछि। महराजक ऊपर तँ तेना कए लागि गेल अछि जे हुनकर तँ माथे सुन्न जकाँ भए गेल अछि। राज-काज की चलओताह कपार?"

“समाधान तँ कालू हमरे-तोरे निकालबाक अछि कारण ई सभ मामिला डाक्टर बैदक वशाक नहि अछि।"

" कएल की जाए?

"देख कालू, किछु छैक, छौक तँ तोहर सहोदरे। कखनो-ने-कखनो दरेग अएबे करतैक तोहर। तूँ ओकरासँ गप्प करह आ पता तँ लगाबह जे आखिर ओ की चाहैत अछि?"

"हमरा तँ बहुत डर लागि रहल अछि। यदि हमरे पर बिगड़ि गेल तखन?"

"एतेक डरेलासँ काज नहि चलतह। आखिर मखनोकेँ किछु तँ मोनमे हेतैक। पता लगबही, गप्प कर। नहि करबह तँ महराज तँ छोड़तौ नहि।"

"आओर ई जासूस जे वीडियो बनओने अछि ताहिसँ किछु पता नहि चललैक?”

"ओ वीडियो बड़ीटा छैक। कनी-मनी देखलासँ जे अनुमान लगाओल जा सकैत छैक, ताही आधारपर ने तोरा चेता रहल छिअह। एखन बहुत देखनाइ बाँकिए छलैक कि मखना आक्रमण कए देलक।"

"मुदा मखनाक लक्ष्य की छैक? से जननाइ तँ बहुत जरूरी थिक।"

“तैं ने तोरा कहि रहल छिअह जे ओकरासँ सीधा-सीधी गप्प करह। मामिला आब हाथसँ बाहर जा रहल अछि।"

दुनू गोटे गप्प कइए रहल छलाह कि राजमंत्री ओहिठामसँ महराजी भगताकेँ बजाहटि आबि गेलैक। आओर ओ ओमहर बिदा भए गेल।❑

३५

मखना आ कालू दू भाइ छल। ओकर पिताकेँ नीक जमीन जायदाद रहैक। मुदा गाम घरमे आपसी झञ्झटि पसरलैक। मोकदमाबाजी भेलैक। मारिपीट भेलैक। ओहिसभमे लागि जेबाक कारण महराजक लगान बाँकी रहि गेलैक। ओकर दुश्मनसभ महराजक जेठरैयतसँ मीलि कए ओकर पचासो बिघा जमीन नीलाम करबा देलकैक। देखिते-देखिते ओ बरबाद कए देल गेलाह। धीआपुता सभ अन्न बेगर प्राण देबएपर तत्पर भए गेल। एकटा सभतरहसँ जुड़ल-अटल घर साफे उजड़ि गेल। एहन स्थितिकेँ ओ बहुत दिन नहि सहि सकलाह आ किछुए दिनमे चलैत बनलाह।

एहि अन्यायके बरदास करब मखनाक वशमे नहि रहैक। मुदा महराजकेँ विरोध करबाक माने ओ जनैत छल। पुबारि टोल,पछबारिटोल आ दछिनबाइटोलमे एहन बहुतरास लोकसभ छल जकरा संगे एहिना अन्याय होइत रहलैक। सभ चुपचाप सहैत रहल। मखना एकर विरोध करबाक निर्णय केलक। कालू ओकरा बुझेबाक प्रयास केलक मुदा ओ सफल नहि भेल। तीनूटोलक

लोकसभ जमा भेल। ओहिमे मखना गरजि कए कहलकैक जे महराजक सिपहसलारसभक जुलुमकेँ विरोध करब जरूरी अछि, ताहि हेतु हमरासभकेँ संगठित होमए पड़त। जौँ हमसभ से नहि करब तँ एहिना फुटा-फुटा कए सभकेँ तबाह कएल जाएत। बैसारमे बहुत लोक आएल छल। माहौल एकदम गरमा गेल। सभ मरए-कटए हेतु तैयार छल। लगलैक जे किछु भए कए रहत। महराजक सिपहसलारसभ घात लगओने सभटा बात सुनि रहल छल। बैसार समाप्त भेल। झलफल भए गेल छल। मखना अपन घर दिस जा रहल छल कि कोनटापर महराजक चारिटा लठैत दे- दनादन दे-दनादन ओकरापर प्रहार केलक आ ओ ओहीठाम ठामहि रहि गेल। मखनाक देहसँ ओकर आत्मा निकलितहि निश्चय केलक जे जाबे एहि महराजक अंत नहि होएत ताबे ओ चैनसँ नहि बैसत।

मखना अपन जान तँ देबे केलक कालूक मोनमे सभदिन लेल अपराधबोध कए गेलैक। ओहि घटनाक बाद कालूक जिनगी कहिओ सोझरा नहि सकलैक। ओझराइते चलि गेलैक। ओकर घरबाली ककरो आन संगे भागि गेलैक। करबो की करितैक? घरमे दिन-राति कलह होइत रहैत छलैक। भोजनोक अभाव छलैक। कतए गेलैक, ककरा संगे गेलैक, किछु पता नहि चललैक। तकर बाद कालू भगतै धेलक। धन के भगतै जे ओकर जान बाँचल अछि। एही धंधासँ पेटो भरैत छैक आ लोकसभ ओकरासँ डराइतो छैक।

मखना ई रूप धए लेत आ एहन विकट भए जाएत जे महराजोकेँ पानि पिआ देत से तँ केओ कहिओ नहि सोचने छल, कालूक कोन कथा? ओ तँ मखनाकेँ बिसरि गेल छल। मुदा आब तँ

सभ कालूक खुसामद कए रहल अछि जे मखनासँ महराजक जान बचाउ। “किएक बचेतैक" -ओ मोने मोन सोचैत रहए। महराज कोन उपकार केने छैक? ओकर पिताकेँ बिल्टा देलक। ओकर सभक सभटा जमीन जायदाद मोफतमे हरपि लेलक। बाह रे महराज!

तहिएसँ मखना महराजसँ बदला लेबाक हेतु भटकि रहल छल आओर आब तकर समय लगीच आबि गेल छल। कालू किएक ओकर हाथ धरतैक? किन्नहु नहि। ओ अपनो तँ महराजेक अन्यायी व्यवस्थाक सिकार अछि। फेर दुनू भाए छल। कालू अखनो मखनाक ताल बूझि नहि रहल छल। चिंता ईहो होइक जे जेहो किछु घराड़ी आ पोखरि बाँचल छैक, ताहूमे ने मखना हिस्सा माँगए लागैक। फेर तुरंते अपने मोनमे होइतैक- “आब ओ जीविते कहाँ अछि जे हिस्सा लेत? भूत-प्रेत भए गेल अछि। भने महराजसँ भिड़ल अछि।

फेर डरो होइक जे यदि मखनाक मोन फिरि गेलैक आ ओकरे पर लागि गेल तखन के बचाओत? कहि नहि ओकरा मखनाक एतेक डर किएक होइक?प्रायः ओकरा मोनमे जे अपराधबोध रहैक, जे ओ मखनाकेँ बँचा नहि सकल, सएह कारण रहल होएत।

कालू एहीसभ बातकेँ सोचि रहल छल। महराजी पोखरिक घाटपर एसगरे बैसल छल कि लगलैक जेना केओ सामनेमे ठाढ़ छैक। कालू धरफरा कए उठि गेल। अनचोकेमे तेना कए उठल जे दहिना टांगमे मोच पड़ि गेलैक। ओकर ई हाल देखि मखना भभा कए हँसि देलक।

"एतेक किएक डराइत छह? तूँ तँ भगता छह। मंत्र-तंत्र सभ

बिसरा गेलह की?"

"पहिने कहह जे तूँ छह के?"

ई सुनि मखना अपन मौलिक रूपमे आबि गेल। कालू दंग रहि गेल। मोन होइक जे मखनाकेँ छातीसँ साटि ली।

"ई की भए रहल अछि? तूँ तँ हबोसँ बेसी पातर लगैत छह।" कालू बाजल।

"भाइ किएक डराइत छी। हम अहाँकेँ किछु नहि बिगाड़ब। हमरा तँ एहि महराजकेँ ठीक करबाक अछि।" -मखना बाजल।

"यदि से बात छैक तँ तोरा लेल जान हाजिर।" -कालू बाजल।

"मुदा बेसी हल्ला नहि करह। चारूकात ओकर जासूससभ वीडियो बनबैत रहैत छैक। मुदा हमर वीडियो कतएसँ बनतैक। तूँ सावधान रहिअह।" -मखना बाजल।

बहुत दिनक बाद दुनू भाएमे भरिमोन गप्प भेलैक। मखनाक उद्देश्य स्वागतयोग्य छल। मुदा कालू भगताकेँ डर होइक जे यदि ओकर बात महराजक सिपहसलार सभ बूझि जाएत तँ ओ गेल घर अछि। ओकर मोनक बात मखना बूझि गेलैक। ओ बाजल- “भैया तूँ हमर बातपर विश्वास करह। महराजक दिन आब गनल छैक।”

"से कोना? महराजक पाछू तँ ओकर एतेक सिपहसलार सभ छैक। तोरा संगके छह? अपन देहो नहि छह?"

कालूक बातसँ मखना सोचमे पड़ि गेल। अपन दहिन हाथक यमपाश हिला देलक। आहि रे बा !कालूक माथा घुमि गेलैक। ओ

बाजल- “तूँ तँ रहि-रहि कए हमरे डरा दैत छह। ताहिसँ की हेतह?"

"हम तोरा डरबैत नहि छिअह तूँ अपने डराएल छह। बस कनिको किछु हेबाक प्रयोजन अछि आ तूँ परेसान भए जाइत छह।"

"से बात तँ सत्ये। मुदा एसगरे तूँ कतेक लड़बह। किछु आओर समर्थक तँ चाही। कारण महराज बड़ मायाबी थिक।"

"चिंता नहि करह। यमराजसँ गप्प भेल अछि। ई महराज बहुत लोककेँ तंग कए-कए अकाल मृत्यु देने अछि। ओ सभ हमरा संगे अछि। बस, एकटा इसाराक काज छैक। महराजसँ बहुत लोक तंग अछि। बहुत निर्दोष लोकक घर ई उजाड़लक अछि। तूँ एहन लोकसभकेँ संगठित करह। "

“जे होइक मरवना भाइ! हम तोहर लोहा मानि गेलहुँ।“

कालू मरवनाक पीठ ठोकि देलक आ मीठा पान खाए फोंफ काटए लागल। जरवन निन्न टुटलैक तँ सामनेमे महराजी भगता ठाढ़ छलाह।❑

३६

महराजी भगता राजमंत्रीसँ भेंट करए जाइत छलाह। रस्तामे कालू भेटि गेलनि। कालू मरवनासँ गप्प भए कुप्प भेल रहए। महराजी भगताकेँ बेसी भाव नहि देलक। एहन सन जेना ओकरा देखनहि नहि होइक। महराजी भगताकेँ अंदाज भए गेलैक जे कालूक मोनमे किछु घुमि रहल अछि। पुछलखिन-

"की बात छैक?"

"किछु नहि।"

"किछु तँ छैक जे आइ तूँ टोकबो नहि केलह।"

"गाम-घरक चिंतामे रही, नहि देखि सकलहुँ।"

से सभ कहि ओ महराजी भगताकेँ टरका देलक। महराजी भगता आगू बढ़ि गेलाह।

राजमंत्री ओकर प्रतीक्षा कए रहल छलाह। ताबे महराजी जासूस सेहो आबि गेल आकि ओकरो बजओने रहथि। क्रमशः नीति निर्धारक समितिक सभ सदस्य आबि गेलाह। ओहि दिनक बात बहुत मोसकिलसँ ओसभ ठीक भेल रहथि। मुदा डराएल तँ छलाहे, तेँ सभगोटे अपन-अपन जेबीमे हनुमान चलीसा रखने रहथि।

राजमंत्री कहलखिन –"जासूसी वीडियोकेँ आगू चलाउ। भए सकैत अछि जे किछु नव बात सामने आबए।"

पछिला बेर जकाँ फेर कोनो दुर्घटना ने नहि भए जाइक ताहि हेतु ओसभ अपना भरि बहुत यत्न केने रहथि। सभटा केबार बंद कए देल गेल छल। महराजी भगता किछु-किछु टोना टापर सेहो केलथि। तकर बाद महराजी जासूस वीडियो चलओलाह। महराजक फेर ओएह रंग-ढंग। कहि रहल छथि- "अहाँ कोनो पुण्य तँ केलहुँ नहि। दिन-राति भोग-विलासमे लागल रहलहुँ।

"की गलत-सलत बकि रहल छी।

"बातक बतंगर नहि करू। बुझलहुँ जे अहाँ सदरिकाल बुत

रहैत छी मुदा अपनो-आपसँ तँ सत्यमे जीबू।"

"की सत्य, की असत्य? राज-काज ओहिना नहि चलैत अछि?

"आम नागरिककेँ एतेक तंग करबाक कोन काज रहैक? गरीबसभक जमीन नीलाम करबाक कोन प्रयोजन छलैक।"

"खाली खराबे बात अहाँकें मोन पड़ि रहल अछि। नित्य हजारो गरीबकेँ चौअन्नी दान देल जाइत अछि से एकहुँ बेर किएक नहि बजैत छी?

"भीख देलासँ की होएत? ओकरासभकेँ काबिल बनबितहुँ। नीकठाम शिक्षा दितिऐक। नीक-नीक कालेज, इसकूल खोलितहुँ तखन ने?"

एहि तरहेँ घंटो ओ अपनेसँ बड़बड़ाइत रहैत छलाह। वीडियो देखैत-देखैत सभ परेसान भए गेलाह। किछु बुझएमे नहि आबनि जे महराजकेँ की भए गेलनि? ओ बचबो करताह कि साफे सनकि जेताह?प्रश्न-प्रतिप्रश्न भए रहल छल। महराजक हालति दयनीय लगैत छल। नीति निर्धारक समितिक लोकसभ चिंतामे पड़ि गेलाह। राजपंडित बजलाह-

"महराजक हालति तँ बहुत गड़बड़ लागि रहल अछि। यदि महराजकेँ किछु भेलनि तँ हमरा लोकनिक की होएत? हमसभ तँ बिलटि जाएब।"

"बात तँ सही कहि रहल छी। छप्पन प्रकारक भोग कतएसँ देखब?" -महराजी भगता बजलाह।

"मुदा समाधान की अछि?" -राजबैद बजलाह।

डाक्टरसभक हिसाबे महराज एकदम ठीक छथि। विदेशी डाक्टरोसभ हुनका किछु नहि कए पाबि रहल अछि।"

"कोनो बिमारि रहनि तखन ने डाक्टर इलाज करतनि" - महराजी भगता बाजल। एहि तरहें बड़ीकाल धरि घमरथन चलैत रहल। विचार-विमर्ष चलिए रहल छल कि एकटा बेस मोट लिफाफा ऊपरसँ खसल। राजमंत्री मूड़ी छिप लेलाह नहि तँ हुनकर माथेपर खसैत।

राजमंत्री ओहि लिफाफाकेँ खोलि कए ओहिमे राखल चिठ्ठी पढ़ए लगलाहः

“महराज आ हुनकर सिपहसलार सभ कान खोलि कए सुनि लेथि। आब ओ समय नहि थिक जे निर्दोष लोकसभ अहाँक अन्याय सहैत रहत। लोक जागि गेल अछि। जकर जे जथा-पात अहाँ हरण केने छी से शीघ्र ओकरा वापस कए दिऔक। लोक कल्याण हेतु जाहि धन संपदाक उपयोग हेबाक चाहैत छल तकरा अहाँ भोग विलासमे निंघटा देलहुँ। राज्यसंपदा नष्ट होइत रहल आ अहाँ देखैत रहलहुँ। अहाँ जहाँ-तहाँ महल बनबैत रहलहुँ आ एहिठामक लोकसभ भूखल-पिआसल परदेशमे भनसिआक काज तकैत रहल। अहाँक सिपहसलारसभ सेहो दिन-राति मौज करएमे लागल रहलाह। लोक परेसान भेल तँ भेल। मुदा आब ई अन्याय नहि चलत। जा धरि एक-एक व्यक्ति अपन अधिकारपर काबिज नहि भए जाएत हमसभ चुप नहि बैसब। अपन अधिकार लए कए रहब।”❑

३७

काल्टू कैं मखनाक प्रति मोह जागि गेलैक। आखिर ओकर सहोदर भाए छलैक। फेर ओकर उद्देश्यसँ ओ प्रभावित छल। मुदा मखनाकैं देह तँ छैक नहि। ओ महराज सन लोकसँ टक्कर लेत कोना?महराज तँ एकसँ-एक लठैतकैं रखने छथि। इएह सभ सोचैत-सोचैत ओ टीसन पहुँचि गेल। गेटेपर लोटन भेट गेलैक। कतबो मना केलकैक ओ नहि मानलकैक,चाह पिएबे केलकै। चाह पीबैत-पीबैत गाम-घरक बात उठि गेल।

"बाबू बहुत दिनसँ दुखित छथि।" -लोटन बाजल।

'की भेलनि? -काल्टू पुछलकैक।

"की कहिअह। हमरे डेरामे स्नान कए बाहर निलैत रहथि कि पिछड़ि कए खसि पड़लाह। बामाँ जांघक हड्डी टूटि गेलनि। बएस बेसी छनि। डाक्टरसभ शल्य चिकित्साँ मना केलक। अपना भरि जे कए सकैत छल से डाक्टरसभ केलक मुदा हुनकर जांघक हड्डी ठीकसँ नहि जुड़लनि। दुनू पैर चोट-पैघ भए गेल अछि। चलबामे बहुत परेसानी भए गेल छनि।"

"छथि कतए?"

"काल्हिए गाम पहुँचा देलिअनि अछि। एहिठाम मोन नहि लगैत छलनि। फेर हमर घरक लोक सेवा करैत-करैत थाकि गेल रहए।"

"गाममे के देखतनि?"

"बात तँ तूँ सही कहि रहल छह। अखन हमर छोटकी बहिन आएल आछि, मुदा ओ कतेक दिन रहत?

सोचैत छि जे अपने किछु दिन गामेमे रहि जाइ।"

“चलह ने हमहु गाम चलब।"

“ठीक छैक। विचार होअ तँ काल्हि भोरुका गाड़ीसँ चली।"

" तूँ तैयार रहिअह, हम एतहि आबि जाएब।"

प्रात भेने कालू आ लोटन ट्रेनसँ गाम बिदा भेल। ओहि डिब्बामे संयोगसँ जेलर सेहो बैसल रहए। कालूकेँ देखितेँ ओ चिकरल- “कालू भगत!

कालू के अबाज परिचित लागि रहल छलैक मुदा ओकरा चिन्हि नहि रहल चलैक। पुछलकैक- “तूँ के छह?"

"हम छी जेलर बाबू"

"तोहर ई हाल कोना भेल?"

"बहुत मोन खराब अछि।"

"की भेल से साफ-साफ कहह।"

लोटना सेहो जेलरकेँ चिन्हि गेल। ओहो तँ ओकरे जेलमे बंद छल। जेलर रोगाक काँट-काँट भए गेल छल। कहलकैक-

"पता नहि कोना ओहि दिन एकटा खोहमे पहुँचि गेलहुँ। तहिआसँ एकसरे ओतहि पड़ल छलहुँ। केओ खोज-खबरि लिनेहार नहि। एक सप्ताह पहिने केओ अस्पतालमे फेकि गेल। अस्पतालो वला सभ उत्तर दए देलक अछि। कहलक जे अहाँकेँ लीवरमे कैंसर फैलि गेल अछि। गाम चलि जाउ। आब किछु इलाज संभव नहि

अछि।”

जेलरक ई हाल देखि कालू बहुत दुखी भेल। लोटन सेहो परेसान रहए। पुछलकैक- “मुदा अहाँ एसगरे कोना कतहु जा सकब?"

जेलर किछु उत्तर देबासँ पहिने ट्रेनेमे बेहोस भए गेल।

बाहर हल्ला भए रहल छल। टीसन आबि गेल छल। हमसभ उतरि गेलहुँ। देखलिऐक जे केओ जेलरक लहासकेँ टीसनपर उतारि देलकैक।

कालू टीसनपर ऊपर दिस देखलक तँ मरखना हँसि रहल छल। ओ कालूकेँ इसारासँ खसकि जेबाक हेतु कहलकैक। कालू लोटनक संगे अपन गाम दिस बिदा भए गेल।

जेलर सरकारी आदमी छल। कतेको दिनसँ निपत्ता छल। तकर विवरण थानामे लिखल छल। रेलवे पुलिस लहासकेँ अपन कबजामे लए पुलिस थानामे सूचना देलक। ओकर जेबीसँ मोबाइल फोन आ पाकिट डायरी भेटलैक जाहि आधारपर ओकर पहिचान भेल। रेलवे पुलिस जेलरक लहासकेँ थानामे वापस कए देलक।

कालू लोटनक संगे पुबारिगाम पहुँचल। गाममे जेलरक मृत्यक समाचार पसरि गेल। ओहिगामक बहुत रास लोक ओकरा जनैत रहैक। गौआँसभ थाना पहुँचल। थानामे लोकक करमान लागि गेल छल। सभ लहासकेँ घेरने ठाढ़ छल, मुदा ककरो किछु फुरा नहि रहल छलैक। सभकेँ उत्सुकता भेलैक जे जेलरक ई हाल कोना भेल? ओकर पत्नी कहाँ अछि? ओ एसगरे किएक अछि? जखन चौबीसो घंटासँ बेसी समय बीति गेल आ केओ ओहि

लहासक दाबेदार आगू नहि आएल तँ गौंआसभ ओकर अंतिम संस्कार कए देलक।❑

३८

कालू,लोटन गाममे बैसार केलक। लग-पासके टोलक लोकसभ सेहो बजाओल गेल। बैसारक कारण ककरो किछु पता नहि रहैक। सभ एक-दोसरासँ पुछिए रहल छल। व्रह्मस्थानमे परोपट्टाक लोक जमा भेल।

बैसार शुरूए भेल छल कि आकाशसँ लाल-लाल फूलसभ खसए लागल। लोकसभ परेसान छल जे ई की भए रहल अछि। ताबतेमे आकाशवाणी भेल-

"अहाँसभ चिंता नहि करू। हम छी मखना-एही माटि-पानिक संतान। हमरासँ डरेबाक काज नहि अछि। हमहीं ई बैसारक हेतु कालू भाइकेँ कहने छलहुँ।

"मुदा तूँ चाहैत की छह?" -लोकसभ एकस्वरमे बाजल।

"हम अहाँसभक जमीन जायदाद महराजसँ वापस कराएब। अहाँकेँ प्रतिष्ठापूर्वक अपन गाममे रहबाक परिस्थितिक फेरसँ निर्माण करब।" -मखना बाजल।

"तूँ हमरासभकेँ चाछपर चढ़ा रहल छह। तोरा लगमे की छह जे महराजकेँ टक्कर देबह। महराजसँ लड़ब कोनो ठठ्ठा नहि छैक। अपनो जेबह आ हमरोसभकेँ बरबाद करबह" -गौंआसभ बाजल।

"कालू भाइ तोरासभक संगे रहतह। ओकरा सभटा बुझल

छैक। हमरा आगू महराजक की?" -मखना कहलक।

आखिर छलैक तँ ओकरे गौआँसभ। किन्नहु मखनाक बात मानए हेतु तैयारे नहि होइक। किछु ललबबुआसभ तँ हल्लुक विरोधे केलक। मखनाकेँ नहि रहल गेलैक। कनीके जोरसँ यमपाशकेँ हिलओलक। देखिते-देखिते आधालोक बेहोस भए गेल। चारू दिस अफरा-तफरीक माहौल भए गेल। सभ कालूकेँ गोहराबए लागल।–

"कालू भाइ! जान बचाबह। हमसभ की जाने गेलिऐक छः-पाँच? भेल जे केओ ठकि रहल अछि। फेर मखनाक मरलो कतेक दिन भए गेल। ओ एतेक दिनक बाद कतएसँ ऊपर भेल? से सभ बात सेहो लोकसभक मोनमे आएब उचिते छैक। तूँ मखनाकेँ मनाबह। लोककेँ किछु समय दैक। अगिला रविकँ फेरसँ बैसार राखल जाए। ओहिमे एहिसभ विषयपर निर्णय कए लेब।"

"एवमस्तु!" -बाजि मखना बिला गेल।

सभकेँ जान-मे-जान अएलैक। बैसार समाप्त भेल। कालू लोटनकसंग आगू बढ़ल कि एकटा छौंड़ा दौड़ल आएल

"देबू काका कोनादनि करैत छथिन। कनी जल्दी चलिऔक।

दुनूगोटे झटकारि कए दरबाजापर पहुँचले छलाह कि आंगनमे कनारोहटि भए रहल छल। देबू नहि रहलाह।❑

३९

हमर आ चंपाक एम.ए.मे नामांकन नंदनगरमे भए गेल।

हमरा दुनूगोटेकेँ सरकारक तरफसँ छात्रवृति सेहो भेटत, से चिट्ठी आबि गेल। आब नंदनगर बिदा होइत रही। मामकेँ प्रणाम करए हुनका डेरा गेलहुँ तँ पता लागल जे ओ तँ बैसारमे छथि। ओहिठाम ककरो आबाजाही मना छैक। ट्रेनक समय भए रहल छल। की करी, किछु बुझा नहि रहल छल। हुनकासँ बिना भेंट केनहि कोना चलि जाउ?तखन की कएल जाए?बैसार करखन टूटत तकर कोनो हिसाब नहि रहैक। भितर जासूसी वीडियो चलि रहल छलैक। हम ओहीठाम दरबान लग बैसि गेलहुँ। संयोगसँ राजबैद बहरेलाह। हमरा बैसल देखि पुछलथि- “की बात छैक?"हम हुनका सभटा बात कहलिअनि आ आग्रह केलिअनि जे हमरा कनीको कालक हेतु मामासँ भेँट करा देथि। हमर ट्रेनक समय भए गेल अछि।" राजबैद भितर गेलाह। मामाकेँ कातमे बजा कए हमर समाचार देलखिन। ओ तुरंते बाहर अएलाह। हम हुनका प्रणाम केलहुँ। सभबात हुनका बुझले रहनि। ट्रेन सिटी मारि रहल छल। चंपाक फोनपर फोन आबि रहल छल। हम लतहिँ-पतहिँ टीसन भगलहुँ।

टीसनपर पहुँचि रहल छलहुँ। ट्रेन घुसकि रहल छल। चंपा बैसि गेल छलि मुदा रहि-रहि कए बाहर दिस उचकि रहल छलि। हमरा देखितहि जोर-जोरसँ हाथ हिलाबए लागलि,साइत ई बतबए लेल जे जल्दी ट्रेनमे पैसि जाइ। हम सएह करैत छी। जे डिब्बा सामने आएल ओहिमे घुसिआ गेलहुँ। देखिते-देखिते ट्रेन गति धए लेलक।

ट्रेनमे डिब्बे-डिब्बे आगू बढ़ैत छी। चारि-पाँच डिब्बा आगू टपलापर चंपा देखाएल। ओ फटकिएसँ इसारा देलक। आनन्दसँ मोन आप्लावित छल। हम ओकरा बगलमे खाली सीटपर बैसि

गेलहुँ।

“कतए रहि गेलहुँ?" -चंपा पुछलक।

“मामासँ भेंट करए गेल रही। ओ बैसारमे व्यस्त छलाह। एही चक्करमे देरी भए गेल।”

ट्रेन भोरे नंदनगर पहुँचते अछि। सहयात्रीसभ सुतबाक ओरिआनमे लागि गेलाह। लाइट मिझा देल गेल। मुदा हम दुनूगोटे अपने दुनिआमे मस्त रही। निन्न हरा गेल छल। कतेक गप्प करी से बुझेबे नहि करैत छल। पहिल बेर राजपुराक चौहद्दीक पार जा रहल छलहुँ ओहो चंपाक संगे।

रातिभरि हमसभ जगले रहि गेलहुँ। भोर भए रहल छल। ट्रेन नंदनगर टीसनक प्लेटफार्म संख्या एकपर लागि गेल छल। आब ओकरा कतहु नहि जेबाक रहैक। यात्रीसभ एक-एक कए उतरि गेलाह। आब हमही दुनूगोटे रहि गेल रही। चंपा इसारा देलक। हम समानसभ पकड़लहुँ आ नंदनगर टीसनपर उतरि गेलहुँ।

चारूकातसँ कुलीसभ दौड़ल। हमरासभ दिस आबि कए कैक बेर पुछैत रहल। हमसभ किछु कहि नहि रहल छलहुँ। चंपा कहलक- “चाह पीवि लैत छी, तखन चलब।"

"ठीके कहलहुँ।" दुनूगोटे टीसनपर चाह पीलहुँ। राति भरिक मधुर स्मृति हमरासभक चाहक स्वादकेँ आओर रमनगर कए रहल छल। मोने नहि होइत छल जे चाह खतम होइ। मुदा खतम भेलैक। हमसभ टेम्पू केलहुँ आ कालेज दिस बिदा भए गेलहुँ।

दिन भरिक धमाचौकरीक बाद सभटा काज भए गेल। नामो लिखा गेल आ छात्रावासमे कोठरीक आवंटन सेहो भए गेल।

चंपाकेँ महिला छात्रावासमे छोड़ि कए हम पहुँचलहुँ न्युलाइट छात्रावास। कागज-पत्तर देलिऐक। थोड़बेकालमे अपन कोठरी संख्या पाँचमे पहुँचि गेलहुँ।

छात्रावासमे समान राखि कए स्वागत कक्षमे समाचारपत्र पढ़ए बैसलहुँ। मुख्यपृष्ठपर मोट-मोट अक्षरमे लिखल छल- “महराज अस्वस्थ।"

“जा! ई की भेल?”

मोनमे चिंता होमए लागल। राजपुरा फोन लगबे नहि करैत छल। बहुत प्रयासक बाद कालूभगताक फोन लागल। ओ गाममे छल।

फोन लगितहि अपने बाजए लागल- “किछु पता लगलह की?

"हम तँ बाहर नंदनगरमे छी।"

"ओ! महराज गेल घर छथि।"

से की?"

“फोनपर की-की कहबह। बहुत बातसभ छैक।”

-से कहि ओ फोन राखि देलक।❑

४०

नीति निर्धारक समितिक बैसारमे गहन विचार-विमर्ष चलि रहल छल। वीडियोक विभिन्न दृश्यसभपर कैक बेर चिंतित होएब स्वभाविक छल कारण ओहिमे महराजक आन्तरिक शून्यताक बोध

होइत छल। असलमे महराजसँ बेसी ओसभ अपन-अपन भविष्य लए चिन्तित छलाह आ राजपंडित बजबो केलाह- “हमरा तँ आब एहि राजक अन्त बहुत समीप बुझा रहल अछि। लगैत अछि जे डोल-डालक समय आबि गेल।

"अहाँ तँ विद्वान छी, मुदा हम कतए जाएब?" -महराजी भगता बजलाह। महराजी जासूस कम चिन्तित नहि रहथि, कारण ओ तँ सभ दिन महराजक आदेश मानि अपने लोकक जासूसी करैत-करबैत रहलाह। मुदा आब की करताह? पोल खुलितहिँ प्राणो बचतनि कि नहि?" सएह सभ सोचैत रहथि। ओ बेर-बेर राजमंत्री दिस देखैत छलाह। राजमंत्री केँ बुझा गेलनि जे जासूस महोदय किछु सोचि रहल छथि। पुछलखिन- “की बात छैक?" ओ मुस्की दैत रहलाह। किछु बजलाह नहि।

गप्प-सप्प चलिए रहल छल कि महराजी जासूस एकटा सीडी राजमंत्रीजीक जेबीमे चुपचाप सरकबैत कनखी मारलाह। राजमंत्री सकपका गेलाह। आखिर ई एना कनखी किएक मारि रहल अछि। सभा विसर्जित भेल। बाहर होइत एकान्त पाबि महराजी जासूस कानमे किछु फदर-फदर केलथि। राजमंत्रीक मुँह पिअर भए गेलनि।

“यदि भेद खुजि गेल तँ महराज जान नहि बकसताह। आब की कएल जाए? कहुना कए महराजी जासूसकेँ मनाओल जाए। मुदा एहिसँ की होएत? ओ तँ महराजकेँ सभबात कहि देने हेतनि। हमरालेल किएक सोचत। ओकर तँ काजे छैक जासूसी करब। मुदा रनिबासोक जासूसी महराजे करबैत रहलाह। हद भए गेल।"

तरह-तरहसँ राजमंत्री सोचैत रहलाह। राजमंत्री डेरा पहुँचि

कए सीडीकेँ देखलाह। हुनकर हालति तँ देखए वला छल। मोने-मोन सोचए लगलाह- “ई जासूस तँ एक-एकटा बातक वीडियो बनओने अछि। जान बचनाइ मोसकिल थिक। की रानीकेँ एकर जानकारी देल जाए?” -ओ मोने-मोन सोचथि। फेर डरो होनि जे यदि ओहो किछु खेल खेला गेलीह तखन?"बहुत अछता-पचता कए महराजी जासूसकेँ फोन लगेलाह- “हम अहींक डेरा दिस चलल छी।"

"से किएक?"

"अहाँ सभकिछु बूझि ओ कए एना अन्ठा रहल छी।"

से सुनि महराजी जासूस ठहाका पाड़लक। राजमंत्रीकेँ फोनमे ओ ठहक्का सुनेलनि। ओ ठामहि पड़ि गेलाह। राजमहलमे हल्ला भए गेल जे राजमंत्रीकेँ हृदयाघात भए गेलनि अछि। अस्पतालसँसँ एम्बुलेन्स आएल। हुनका उठा-पुठा कए अस्पताल पहुँचाओल गेल मुदा डाक्टरसभ कहलक- “ई तँ गुजरि गेल छथि।"ऊपर मखना ठहाका पाड़लक।

ओमहर महराज से लथड़ल छलाह,एमहर हुनकर राजमंत्री गुजरि गेलाह। महराजी भगता बहुत परेसान छलाह। हुनका किछु-किछु आभास होनि जे बात किछु आओर छैक। नहि तँ एकहि संगे मंत्री आ महराज दुनू कोना एहि हालमे पहुँचि गेलाह?

मखनाक दरबार ओहिना सजल जा रहल छल जेना महराजक दरबार उजड़ि रहल छल। जेलरबाबू, देबू, आब महराजक राजमंत्री-सभगोटे मखनाक मुख्यालयमे प्रशासन सम्हारि रहल छलाह। मखना मोंछ पिजओलक। मोने-मोन सोचलक आब दिल्ली दूर नहि।"

महराजसँ हिसाब-किताब सोझ करबाक पक्का निर्णय मरखना केने छल। संग्राम गहींर भेल जा रहल छल। तँ सोचलक जे एकटा नीति निर्धारक समितिक गठन कएल जाए जाहिसँ नित्य-प्रतिक काज संचालनमे ओकरा बेसी ओझर नहि होइक।❑

४१

मामाक आकस्मिक निधनसँ हमरा बहुत कष्ट भेल। हमरे चलते ओ महराजक चक्करमे पड़लाह नहि तँ अपन गाममे चैनसँ जीबैत छलाह। बादमे कैक बेर ओहिठामसँ निकलबाक प्रयासो केलाह मुदा रानी अड़ि जाथि। बादमे तँ महराजक हालति तेहन पातर भए गेल जे हुनकर तमाम सिपहसलारसभ जान छोड़ाबए चाहैत छल।

हम चंपाकेँ फोन कए सूचना देलिऐक आ ईहो कहि देलिऐक जे कालेजमे हमर छुट्टीक दरखास जमा कए देत। हम बस पकड़ि राजपुरा बिदा भेलहुँ। ओहिठाम पहुँचैत-पहुँचैत साँझ भए गेल। ताबे मामाक लहासकेँ पछबारिटोल लए कए चलि गेल छल। आब की करी?थाकल ठेहिआएल पछबारिटोल बिदा भेलहुँ।

राजपुरासँ पछबारिटोल बेसि दूर नहि छल। बससभ चलि गेल छल। संयोगसँ एकटा मोटर साइकल वला ओहीठाम जा रहल छलाह। हुनका हाथ देलिअनि। ओ हमरा अपना पाछू बैसा लेलाह। राति भए गेल छल। पानिसे टिपर-टिपिर पड़ि रहल छल। कनीकाल चललाक बाद मोटर साइकल वला पाछू देखलक।

"बाप रे बाप! ई के अछि? ई मनुक्ख तँ नहि लागि रहल

अछि। जाहि तरहें ओ मोटर साइकल चला रहल छल ताहिसँ हमरा शुरुएमे शङ्का भेल रहए। मुदा ओकर मुँह हेलमेटसँ झाँपल रहैक तेँ सही अनुमान नहि भए सकल। फेर बेगरता छल। मामाक अन्तिम दर्शन करबाक प्रवल इच्छा छल। आ संयोगसँ ई व्योंत भए गेल। मुदा एहन तँ हम सोचनो नहि रही। होइत छल जे मोटर साइकलपरसँ कुदि जाइ। इएहसभ सोचैत रही की ओ बजैत अछि- “कथी लेल परेसान छह? हम तोहार मामे छी?"

"की बाजि रहल छी? अहाँ तँ मरि गेलहुँ। तूँ एहिसभक चर्च छोड़ह। हम तोरा अपन गाम पहुँचा देबह। तोरा ततबेसँ ने मतलब छह। चुपचाप बैसल रहह।"

हमर हालति देखए वला छल। सोचिओ नहि सकल रही जे एहनो होइत छैक। राजपुरामे की-की भए रहल अछि से नहि कहि?

हम चुपचाप मोटर साइकलक पाछू बैसल रहलहुँ। ओ मोटर साइकल तेज कए देलक। देखिते-देखिते हम पछबारिटोल पहुँचि गेलहुँ। मोटर साइकलसँ उतरि माटिपर पैर रखने छलहुँ की मोटर साइकल सहित ओ आदमी निपत्ता भए गेल। ततेक डर भेल जे घी-घी पैसि गेल। बाजले नहि होअए। लोकसभ हमरा देखि छगुन्तामे रहए। ताबते कालू भगता आबि गेल। ओ आइ-काल्हि बेसीकाल गामे रहैत अछि। मामाक समाचार सुनितहि एही टोलपर आबि गेल छल। हमर हालति देखि ओ बातकेँ तारि गेल। ऊपर दिस तकलक। किछु-किछु फदर-फदर केलक आ हम ऐकदम दुरुस्त भए गेलहुँ।

मामाक दलान ओहिठमसँ सटले छल। दरबाजापर लोकक करमान लागल छल। मामाक लहासपर कनीको मरबाक चेन्ह नहि

छल। लगैत छल जेना सुतल छथि। हुनकार लहास देखि हम दहारि पारि कए कानए लगलहुँ। कालू भगताकेँ नहि देखल गेलैक। ओ हमरा बुझबए लागल- "तूँ व्यर्थ परेसान छह। तोहर मामा कतहु नहि गेलह अछि। ओ मरखना लग छथि।"

"से कोना भए सकैत अछि?'-हम पुछलिअनि।

"सभटा आइए बूझि जेबह। अखन तँ अएबे केलह अछि। किछु समय बितए दहक। सभबात पता लागि जेतह।"

कालू भगताक रहस्यात्मक गप्प सुनि ने हँसैत बनैत छल ने कनैत। जे भेल, से भेल मामा तँ नहिए रहलाह। ताहिबातक दुख रहि-रहि कए मोनमे उपकि जाइत छल।

मामाक श्राद्ध संपन्न कए हम वापस नंदनगर चलि अएलहुँ। कालेजक पढ़ाइ जोर पकड़ने छल। नंदनगर पहुँचतहि चंपाकेँ फोन केलिऐक। ओ दौरल हमर डेरापर आएलि आ एकटा झोड़ा राखि देलक।" ई की अछि?-हम पुछलिऐक।"कहि नहि की छैक? एकटा बूढ़ काल्हि साँझमे तोरा तकैत-तकैत आएल छल। तूँ तँ रहह नहि तँ हमरा ताकि कए भेँट केलक आ कहलक जे एहिमे श्रीकान्तक किछु समान छैक। ओ जखन वापस आबए तँ दए दिअहक।"

"आखिर ओ छलैक के? कतएसँ आएल,की अनलक? से बात सभ तँ पुछबाक छल?" -हम कहलिऐक।

"तकर तँ ओ मौके नहि देलक। ओ झोड़ा हमरा हाथमे देलक आ हम किछु पुछबैक ताहिसँ पहिने पता नहि केमहर चलि गेल।"

ईसभ सुनि हम बहुत चिंतामे पड़ि गेलहुँ। मोनमे अखिआस भेल जे जरूर किछु गड़बड़ छैक। खैर! जखन ओ झोड़ा लैए लेने

छलि तँ कइए की सकैत छलहुँ? ओकराहाथसँ झोड़ा लए लेलहुँ। मोन बहुत असोथकित लगैत छल। ई बात चंपा बूझि गेल।

"तूँ बहुत थाकल छह। रातिभरि आराम करह। काल्हि कालेजमे भेंट-घाँट हेतैक।"

"ठीक छैक।-से कहि हम ओकरा अरिआति देलिऐक आ अपन कोठरीमे पड़ि गेलहुँ। एकहि निन्ने भोर भए गेल। भोरे किलास जेबाक छल। धरफरा कए उठलहुँ। कालेज जेबासँ पहिने झोड़ाकेँ खोलि कए देखिऐक आ देखितहि रहि गेलहुँ।❑

४२

राजपंडित सोचलाह जे आखिर ओहि सीडीमे की छलैक जकरा हाथमे पड़ितहि राजमंत्री सन आदमीकेँ हृदयाघात भए गेलनि आ ओ ठामहि रहि गेलाह। ओ ओहि सीडीक बहुत पुछारी केलक मुदा रानी ओकरा तेना निपत्ता केलीह जे ककरो भाप नहि लागि सकल। मुदा ताहिसँ की होइत। महराजी जासूस कोनो मूर्ख थोरे छल। ओ मूल सीडी तँ अपने लग रखने छल आ पता नहि आओर की-की रखने छल। रानीकेँ एहि बातक चिंता जोर पकड़लकनि। ओ महराजी जासूसक पाछू पड़ि गेलीह।

ओमहर महराज अस्पतालमे बेहोस पड़ल छलाह। हुनकर इलाजक प्रवंध के करैत? एहिठाम तँ सभ अपनेमे परेसान छल। तथापि राजबैदसँ जे बनि पड़नि से करथि। मुदा कोनो इलाजक खास असरि हेबे नहि करैक। मरखना तेनाक चारूकात बान्हि देने छल जे महराजक सभ सिपहसलारसभ व्यर्थ भए गेल छल।

महराज अस्पतालमे ठीक की हेताह कपार? हुनका नित्य नव-नव उकबा होमए लागल। राजपंडितक माथा ठनकल। डाक्टरसभ साफे हाथ बारि देलक। कहलक- “औ बाबू! एहन रोग नहि देखलहुँ जे अपने ठीक भए जाइत अछि आ अपने बिगड़िओ जाइत अछि।"

"कएल की जाए? -राजबैद बजलाह।

"हमरा तँ किछु फुरा नहि रहल अछि? की कहू।" -से कहि डाक्टर गुम पड़ि गेलाह।

"कोनो रस्ता तँ निकालक हेतैक। एना महराजकेँ तँ छोड़ल नहि जा सकैत अछि?" -राजबैद बजलाह।

"बात तँ अहाँ उचित कए रहल छी, मुदा हिनका कोनो बिमारी नहि बुझा रहल छनि। मामिला किछु आओर लगैत अछि।"

"तखन की कएल जाए?"

"कोनो नीक मनोवैज्ञानिककेँ देखबिअनु।"

महराजक नीति निर्धारक समितिमे तय भेल जे सभसँ पहिने राजक सभ विद्वान, पंडित, ओझा-गुनी, तांत्रिकक बैसार कएल जाए। सौंसे राजमे डिगडिगिआ पिटाओल गेल। जे जतए छलाह से ओतहिसँ महराजक सभामे भाग लेबए हेतु बिदा भेलाह। लोकक करमान लागि गेल। एतेकभारी बैसारकेँ अध्यक्षता के करताह?राजा तँ अपने अस्वस्थ पड़ल छलाह। फेर करवन की रूप धए लए लेताह तकर कोनो ठेकान नहि रहैत छल। नीति निर्धारक समितिक लोकसभ निर्णय केलाह जे महराजाकेँ सभक सामने लाएब उचित नहि होएत, कारण एहिसँ हुनकर जेहो एकबाल बाँचल अछि से

माँटिमे मिलि जा सकैत अछि। समस्या छल महराजकेँ ठीक करब आ संगहि राजकेँ सुरक्षित राखब। राजमंत्रीक पद बहुत दिन रिक्त नहि राखल जा सकैत छल। ताहूपर विचार होएब जरूरी छल मुदा महराजाक बिना एकर निर्णय के करत?

सभगोटे इएह कहलथि जे रानीकेँ सभाक अध्यक्षता करबाक भार देल जाए। अस्तु, रानीक अध्यक्षतामे सभा प्रारंभ भेल।

केओ किछु बजैत, कोनो तरहक प्रस्ताव चर्चाक हेतु आनल जाइत ओहिसँ पहिने दक्षिनबारी कोनसँ गरजैत-फरजैत एकटा तांत्रिकक प्रवेश भेल। ओ संपूर्ण शक्तिसँ महराजी भगतापर दौड़ल।

"खबरदार तोहर गुन्डागर्दीक अंत आब लगीच अछि।" -तान्त्रिक बजलाह।

अहाँ अपन पहिने परिचय दिअ आ एहिठाम के पठओलक से कहू।" -राजपंडित बजलाह।

"हम थिकहुँ प्रसिद्ध तांत्रिक मंगला। हमरा कालीक स्वप्न भेल अछि तेँ एतए अएलहुँ अछि।'

"अपने की कहए चाहैत छी से बाजू।"

"महराजक संकट हेतु मखना उत्तरदायी अछि।"

"मखनाक काट कहू ने। समस्या तँ बुझलहुँ।"

"चारू कात महराजक सारासभपर काली मंदिर बनाउ। राजक चारू कात बड़का-बड़का देबाल ठाढ़ करू। ई सभ तुरंत हेबाक चाही। यदि विलंब भेल तँ महराजक रक्षा असंभव।" -मंगला तांत्रिक बजलाह।

"एहि बातक कोन गारंटी थिक जे अपने जे सभ कहलिऐक से केलापर महराज निचैन भए जेताह।- “बैसारक बीचमेसँ लोटन बाजल।

"सत्य बचन। की पता? ई तांत्रिक अपने स्वार्थसँ प्रेरित बुझाइत छथि।”-कालू बाजल।

"तोरासभकेँ टपर-टपर करबाक कोन काज छह? यदि एहने लुड़िगर रहितह तँ ई सभ होइते किएक।" -महराजी भगता बजलाह।

“अहाँसभ चाहैत की छी? महराजकेँ मदति करए अएलहुँ अछि की हमरासभक दुबिधा बढ़ा कए सभ किछु चौपट करए चाहैत छी?" -रानी बजलीह। रानीक बाजब सुनि सभ चुप भए गेल मुदा महराजी जासूस रानीकेँ देखि कए मुस्की देबए लागल। ओकर ई अशिष्टता कैकगोटे देखलक। मुदा रानी अन्ठा देलथि।

राहपंडित बजला- “मंगला तांत्रिकक बातपर बिचार करबाक चाही। डाक्टर-बैद तँ किछु कए पाबि नहि रहल अछि। महराजक हालति दिन-प्रतिदिन खराबे भए रहल अछि। तखन यदि किछु समाधान ई कहि रहल छथि तँ ओकर विचार करबामे कोनो नोकसान नहि बुझा रहल अछि। मुदा एहिसभक कार्यान्वयन हेतु बहुत टाका चाही। बहुत समय चाही। तेँ तुरंत तँ एकरा कएल नहि जा सकैत अछि। तात्कालिक जे समस्या अछि तकरो किछु करब जरूरी थिक।"

"सत्य वचन!" -लोकसभ एकस्वरसँ बाजल।

चर्चा चलिए रहल छल कि महाराज मुरेठा बन्हने पहुँचि

गेलाह। समस्त सभासद सभ छगुन्तामे पड़ि गेलाह। महराज तँ अस्पतालमे छलाह,फेर एतए कोना आबि सकलाह। महराजकेँ स्वागतमे सभगोटे ठाढ़ भेलाह। नाना प्रकारक अभिवादनसँ हुनकर स्वागत केलाह। रानी स्वयं महराजकेँ आशनपर बैसओलथि आ कानमे किछु कहलखिन। महराजी जासूस ओहिठामसँ करवन चंपत भए गेल तकर किछु पता नहि चलल। महराज सभगोटेकेँ बैसबाक आदेश देलथि। सभ बैसति छथि। तखन महराज बजलाह- “आजुक सभा बिना हमर आज्ञाकेँ कोना बजाओल गेल? "

ऊपरसँ मखना जोड़सँ ठहाका दैत बाजल- “जौर जड़ि गेल आ ऐंठन बाँकिए अछि।"

"खबरदार! ई के एना बाजि रहल अछि?-महराज बजलाह।

ताबतेमे फेर आकाशवाणी भेल- “हम थिकहुँ मखना, अहाँक नियति।"

महराजक सिपहसलारसभ हुनकर कानमे किछु-किछु कहलक। महराज सहमतिमे मूड़ी हिलओलथि आ राजपंडित सभा विसर्जित करबाक घोषणा कए देलथि। सभ अपन-अपन गाम बिदा भए गेल।❑

४३

नंदनगरमे पढ़ाइ-लिखाइक क्रममे गाम-घरक समाचार अबैत रहैत छल। मुदा मामाक निधनसँ हमर बहुत कष्ट भेल। बच्चेसँ

ओ हमरा पाललथि-पोसलथि। हम जे किछु छी से हुनके बदौलति। हमरा लगैत अछि जेना हम सही मानेमे असगर भए गेलहुँ। करवनो काल चंपासँ भेंट भेलापर आश जगैत अछि। साइत हमरो जीवनमे कहिओ हरिअरी होइक, मुदा ई तँ भविष्यक बात थिक। एम.ए. अंतिम वर्षक परीक्षा अगिला मास शुरु होएत। तकर तैयारीमे लागल छी। चंपासँ कतेको दिनसँ भेंट नहि भेल अछि। प्रायः ओहो परीक्षाक तैयारीमे व्यस्त अछि। साँझमे सोचैत छी जे ओकरासँ भेँट कएल जाए। परीक्षाक तैयारी बहन्ना तँ अहिए, मुदा असली कारण किछु आओर अछि।

सांझमे हम चंपासँ भेंट करबाक हेतु ओकर छात्रावास दिस बिदा भेलहुँ। ओकर छात्रावास लग बड़ीटा पार्क अछि। कैक बेर पहिनो हमसभ ओतए भेंट केने रही। आइओ हम ओही गाछतर बैसल रही। मुदा चंपाक कोनो पता नहि छल। मोबाइल फोनकेँ कैक बेर देखैत छी। कोनो मिसकाल नहि अछि। एना तँ कहिओ नहि भेल छल।जौं किछु समस्या आबि गेल किंबा किछु आओर बात भेल तैओ एकटा फोन तँ कए देबाक छल।"कहि नहि की बात भेल?" -हम तरह-तरहसँ सोचैत रही।

घंटाभरि हम ओतहि बैसल रहैत छी। बीचमे मोबाइलपर कैक बेर प्रयास करैत छी मुदा करवनो किछु, करवनो किछु बाजए लगैत अछि। आब तँ फोन निट्ठाहे बंद भए गेल लगैत अछि।

“कहीं किछु अनिष्ट तँ नहि भए गेलैक? आ कि ओ जानिए कए अन्ठा देने अछि? आ कि कथुक तामस भए गेलैक।”

खैर! हम आओर बैसबाक हेतु तैयार नहि रही। राति भेल

जाइत छल। परीक्षासे माथपर छल। वापस अपन डेरापर पहुँचि गेलहुँ। रातिभरि निन्न नहि भेल। प्रयास कइओ कए सुति नहि सकलहुँ। करोट बदलैत रहब कतेक दुखकर अनुभव होइत अछि से तँ भुक्तभोगिए जानि सकैत छथि। देबाल घड़ी दिस देखैत छी। दू बाजि रहल अछि। सौंसे शहरमे साइते केओ जागल होएत। कखनो किताब लए कए पढ़बाक प्रयास करैत छी। कखनहुँ इअरफोन कानमे लगा कए गीत सुनैत छी जाहिसँ छात्रावासक दोसर विद्यार्थीसभक निन्न नहि टुटैक। एतेक के बादो जखन निन्नक कोनो संभावना नहि बुझाइत अछि तँ नित्यकर्म पहिने कए लेबाक हेतु तत्पर भए जाइत छी। स्नान, पूजा सभ किछु कए लैत छी। आब फरीछ भेल जा रहल छल। प्रातःभ्रमण करए वला लोकसभ एमहर-ओमहर चहलकदमी करैत देखाइत छलाह। रिक्सा-टेम्पू चलए लागल। मुदा हम-ओहिना ओछाओनपर पड़ल किछु सोचि रहल छलहुँ कि बाहरसँ केओ टाहि देलक"श्री कांत..!

एना बीच सड़कपर सँ के टाहि दए रहल छथि? ऊपर आबि सकैत छलाह। केबार खट-खटा सकैत छलाह। हम धरफरा कए बाहर दिस तकैत छी। एकटा अत्यंत सुंदर,गौरवर्णक ओजस्वी युवक हमरे दिस ताकि रहल छलाह। हमरा बाहर तकैत दिस कहलाह- “हम छी दीपांक। किछु जरूरी काजसँ आएल छी।"

ऊपरे आबि जाउ" -हम कहलिऐक। ओ धरफराएल सभटा सीढ़ी चढ़ि गेलाह। हम कोठरी खोलि कए मोस्ताएद रही। हुनका आग्रहपूर्वक चौकीपर बैसेलहुँ। किछु कहितिअनि ताहिसँ पहिने ओएह बाजि उठलाह- “हम एकटा दुखद समाचार देबए पठाओल

गेल छी।"

“की भेलैक?” -हम पुछलिऐक।

"काल्हि दूपहरमे चंपा छात्रावासक सीढ़ीसँ पिछड़ि गेलीह। केओ पानि खसा देने रहल हेतैक। कैकट पलटान लैत नीचाँ पहुँचलीह। दहिना पैरक हड्डी टूटि गेलनि। संयोगसँ छुट्टीक दिन रहैक। छात्रावासक विद्यार्थीसभ हुनका तत्काल अस्पताल लए गेलथि।"

"आब की हाल छनि?"

"आपरेसन भए गेलनि। मुदा ठीक होमएमे समय लगतनि।"

हुनकासँ अस्पतालक जानकारी लेलहुँ। मोन बहुत खिन्न छल। अपनेकेँ समाद देब जरूरी छल। चंपाक डायरीसँ अहाँक अता-पता भेटल। कतबो रोकलिअनि जे चाह-पान कए लिअ मुदा ओ, चलि गेलाह। जाइत-जाइत कहलथि जे ओ ओही अस्पतालमे डाक्टर छथि आ चंपा हुनके वार्डमे दाखिल छथि। अपन मोबाइल नंबर सेहो लिखा देलथि। हमर मोन हुनक प्रति कृतज्ञतासँ भरि गेल। आइओ काल्हि एहन नीक लोक होइत अछि? ❑

४४

राति भरिक जगरनाक कारण मोन असोथकित लागि रहल छल। कतहु जेबाक इच्छा नहि रहए। मुदा समाचारे तेहन भेटल जे

रुकि नहि सकलहुँ। रिक्सा पकड़ि अस्पताल बिदा भेलहुँ। अस्पतालक हड्डी विभाग चारिम मंजिलपर छल। लिफ्ट खराब छल। कहुना कए ओतए पहुँचलहुँ। सामनेक बेड नंबर पाँचपर चंपा छलि। हमरा देखिते कानए लगलीह। हम बड़ीकाल धरि ओकरा लग चुपचाप ठाढ़ रही। किछु फुरेबे नहि करए। ताबते डाक्टरक हुजुम आबि कए ओतए ठाढ़ भए गेल। ओहिमे सँ केओ इसारा केलक जे हम बाहर जाइ। हम बाहर निकलि जाइत छी। दस मिनटक बाद डाक्टरसभ जखन बाहर भए जाइत छथि तखन हम फेर ओतए पहुँचैत छी।

"ई कोना भेलैक?" -हम पुछलिऐक। मुदा चंपा किछु नहि बाजलि। तकर बाद सँ दस दिन हम ओहीठाम अबैत-जाइत रहलहुँ। आओर केओ रहबो नहि करैक। चंपा डाक्टर दीपांकक जिम्मामे छलीह। ओ दिन-राति एक कए चंपाक सेवा करैत रहल। अपने तँ करबे करए संगहि ओकरा लागल आओर कर्मचारीसभ सेहो ओकर बहुत ध्यान रखलकैक। एहि बातसँ चंपा बहुत प्रभावित भेलि। घोर संकटक समयमे डाक्टर दीपांक अपन जकाँ ठाढ़ भेल रहैक। हमहु ओकर सेवाभावसँ प्रभावित रही।

दस दिनका बाद चंपाक टाँका कटल। ओ अपन डेरा पहुँचि गेलि। हम संगे-संगे ओकर छात्रावास धरि गेलहुँ। फेर ओतएसँ वापस अपन डेरामे आबि गेलहुँ। एतए आबि कखन सुति रहलहुँ से नहि कहि। निन्न टुटल तँ भोर भए रहल छल।

ओकर बाद डाक्टर दीपांक बरोबरि चंपाक हालचाल लैत रहल। कैक बेर ओकर डेरो अएलैक। आबागमनक ई क्रम क्रमशः अंतरंगतामे बदलि रहल छल से दुनूगोटे बुझैत रहथि। तकर बाद तँ

चंपा ओकर बाट तकैत रहैत छलि। यदि कहिओ ओ नहि अबैत वा कनिको देरी भए जैतैक तँ चंपा गेटपरसँ बाहर आबि जाइत। समय बिताबक हेतु आगू-पाछू टहलए लगितथि।

डाक्टर दीपांकक अनवरत प्रयाससँ चंपा जल्दीए ठीक भए गेलि। परीक्षाक समय छल। हम अपन नोटसभ ओकरा देबाक हेतु कैक बेर ओकर डेरापर गेलहुँ। एकदिन एहन संयोग भेल जे हम ओकर कोठरीसँ बाहर होइते रही कि डाक्टर दीपांक आबि गेलाह। हम आगू बढ़ि गेलहुँ।

दूमासक बाद परीक्षा संपन्न भए गेल। हमरासभक छात्रावासमे रहबाक काज नहि छल। हम सोचलहुँ जे गाम चली। गाम जएबासँ पूर्ब चंपाक हालचाल लेबए ओकर छात्रावास गेलहुँ। मुदा ओ ओतए नहि रहथि। केओ कहलक जे ओ एक सप्ताह पूर्वे कतहु चलि गेलथि। हम गुम पड़ि गेलहुँ। कम सँ कम फोन तँ कए सकैत छलि। तरह-तरहक बातसभ मोनमे घुमए लागल। खैर! ओतए ठाढ़ रहि कए की होइत? चोट्टे घुरि गेलहुँ।

ओहिठामसँ डेरा अबैत माथा घुमि रहल छल। की चंपा दीपांकक संगे कतहुँ चलि गेलि? आ जौं चलिए गेलि तँ हम एतेक परेसान किएक छी? ओ हमर के अछि? हम कतहुँ आबि-जा सकैत छी, तहिना ओहो किएक नहि आबि-जा सकैत अछि?ठीक छैक, हम ओकरा संगे बहुत दिनसँ संपर्कमे छी मुदा ताहिसँ की होइत अछि?संबंधक अन्तरंगता मात्र ओकर दीर्घतापर निर्भर नहि रहैत अछि। भए सकैत अछि जे एकहि बेरमे दीपांक ओकरा बहुत नीक लागि गेल होइक। भए सकैए दीपांकमे एहन गुण ओ देखने हो जकर ओकरा बहुत दिनसँ इच्छा छल। किछु भए सकैत अछि? हम

इएह सभ सोचैत-सोचैत अपन डेरा लग पहुँचलहुँ। परीक्षा भए गेल छल। अखन नंदनगरमे रहब कोनो अर्थपूर्ण नहि लगैत छल। मामा से गुजरि गेल रहथि। गाममे अपन के छल के नहि से कहब कठिन?तखन जाइ तँ कतए जाइ?ई बिकट प्रश्न हमरा सामने पहाड़ जकाँ ठाढ़ छल। जहिना हमर केओ आप्त नहि छल आ जौँ केओ छल तँ चंपे छलि, तहिना चंपो एकदम एसगरि छलि। भए सकैत अछि जे दीपांक ओहि शून्यताकेँ भरबामे सक्षम भए गेल होथि। किछु संभव थिक।

ओना चंपो अपना-आपमे रहस्य छलि। एतेक दिनसँ हमर संपर्कमे छलि मुदा कहिओ नहि कहलक जे ओकर माता-पिता के छथि? ओ कतक रहनिहार छथि?व्यक्तिगत मामिलामे ओ पूर्णतः अपरिचिता रहि गेल छलि। हमरा कैक बेर मोन होअए जे किछु पुछिऐक मुदा से संभव नहि भेल। एक बेर ओ अपने किछु-किछु बाजए लागलि रहए ताबते केओ अनचिन्हार आबि गेल छल आ बात बदलि गेल।

डेरा पहुँचि तँ गेलहुँ मुदा मोनमे चैन नहि छल। छात्रावास करीब-करीब खाली भए गेल छल। मेस बंद भए गेल छल। आब ओहिठाम रहब ठीक नहि छल, अपितु व्यर्थ लागि रहल छल। रातिभरि कहुना कए समय बितओलहुँ। भोरे उठि कए समानसभ सरिएलहुँ आ बिदा भए गेलहुँ। मुदा जाएब कतए? मामा छलाह ताधरि ई समस्या नहि छल। बस ठहरावपर पहुँचले छलहुँ की राजपुराक बस खुजैत छल। एकहिटा सीट ओहो सभसँ पाछू खाली रहैक। बैसि गेलहुँ। समानसभ पाछू डेकमे राखि देल गेल। समान छलहे कतेक मुदा जएह छल, हमरा लेल तँ बहुत महत्वपूर्ण छल।

अस्तु, बस संचालककेँ कहलिऐक जे कनी ओकर ध्यान राखए।"चिंता नहि करू, नीकसँ राखि देलहुँ अछि" -ओ बाजल। हम आस्वस्त भेलहुँ आ अपन सीटपर बैसि बस खुजबाक प्रतीक्षा करए लगलहुँ।

बस हुर्र- हुर्र करए लागल। भेल जे आब जल्दीए खुजि जाएत। एतबहिमे देखैत छी जे चंपा ओ दीपांक सामने वला बससँ उतरि रहल छथि। हम किछु बजितहुँ वा किछु सुनितहुँ ओहिसँ पहिने हमर बस खुजि गेल। हम एकटक ओमहरे तकैत रहि गेलहुँ।

बस तँ खुजि गेल मुदा हमर मोन ओहीठाम अटकि गेल। मोन होइत रहए जे जोरसँ चिकरी। मुदा ताहिसँ की होएत?जखन भागे बहीर भए गेल हो तखन ककरा सुनेबैक? आ कथी लेल? जे हेबाक छैक से हेबे करतैक मुदा एना हेतैक से उमीद नहि छल। मुदा ई संसार नित्य परिवर्तनशील थिक। भगवान राम केँ राजगद्दी हेबाक रहनि। सभ तैयारी भए गेल छल। देखिते-देखितेमे सभटा परिदृश्य बदलि गेल। ओएह राम आब पत्नी आ भाएक संगे जंगल बिदा छलाह। ई छैक भाग्यक खेल। जखन हुनको संगे एहन भए सकैत छल तँ अनकर कोन कथा?

बस कखन सौंसे रस्ता टपि कए राजपुरा पहुँचि गेल से नहि बुझलिऐक। एक-एकटा यात्री उतरि गेल छल। हम ओहिना बेसुध बैसल रही कि बस संचालक कहलक- “उतरै किएक नहि छी?बस पाछू घुमि जाएत।" भक टुटल। धरफरा कए उतरलहुँ। समानसभ निकालि देने रहए। ओकरा सम्हारि कए रखलहुँ आ सोचमे परि गेलहुँ जे आब केमहर जाएब? ❑

४५

राजपुरा बस स्टापपर उतरि कए समान लए हम ठाढ़ रही। कोमहर जाइ? पुबारिटोलमे केओ चिन्हबो करत कि नहि? मामा गाम बिना मामाकेँ कोनो अर्थे नहि छलैक। राजपुरा मामा बिना व्यर्थ भल गेल छल। ओ सएह सभ सोचैत-सोचैत बस ठहरावसँ आगू बढ़ल कि एकटा महिला ठोहि पारि कए कानि रहल छलि। ओकरा नहि रहल गेलैक। लगीचमे जाए ओकरासँ किछु पुछए चाहलक मुदा ओकरा कनबासँ होस होइक तहन ने किछु बाजैत। बहुत बोल-भरोस देलापर ओ बाजलि- “हम छी कामिनी-राज नर्तकी। हमर बेटी नंदनगरमे पढ़ैत छलि। आइ कैक दिनसँ ओकर कोनो समाचार नहि भेटल तँ हम स्वयं नंदनगर गेलहुँ मुदा ओ तँ अपन छात्रावाससँ कतहु चलि गेल छलि। ओकर किछु खबरि नहि भेटलासँ हम बहुत परेसान छी।" - एके बेरमे ओ एतेक बात बाजि गेलि।

अहाँक बेटीक की नाम अछि" -हम पुछलिऐक।

"चंपा।" -एतबा कहि ओ फेर कानए लागलि। चंपाक नाम हुनकर मुँहे सुनिते जेना करेंट लागि गेल। हम हुनका दिस तकिते रहि गेलहुँ। हमरा बहुत दिनसँ चंपाक बारेमे जानबाक जिज्ञासा छल मुदा अकस्मात जानकारी स्वयं हमरा लग आएत आ सेहो एहि हालमे से हम सपनोमे नहि सोचने छलहुँ। हम ओकरा बहुत बोल-भरोस देलिऐक। साफे कहि देलिऐक जे हम चंपा केँ जनैत छी, जे ओ हमरा संगे नंदनगरमे पढ़ि रहल छलि, जे ओकर परीक्षा भए गेलैक अछि। तकर बाद सँ ओकरासँ हमरा भेंट नहि अछि। मुदा

जखन नंदनगर बस ठहरावपर हम बसमे रही आ बस खुजैत रहैक तँ हमरा ओ एक झलक देखाएल छलि,प्रायः डाक्टर दीपांक ओकरा संगे छलैक।"

हमर बात सुनि कए कामिनीक जान-मे-जान अएलैक। एतबा तँ बुझेलैक जे ओ स्वस्थ अछि, दुरुस्त अछि। मुदा पूर्ण आश्वस्त ओ अखनहु नहि भए सकलि। भइओ कोना सकैत छलीह? जाधरि ओकरा अपने आँखिए देखि नहि लेत,ताधरि ओकरा चिंतित रहब स्वभाविक छैक।

फेर ओ हमरा बारेमे पुछए लागलि। हम ओकरा अपन परिचय दैत कहलिऐक जे हम महराजक भूतपूर्व राजमंत्री हरिक भागिन छी। हमहु पटनेमे चंपेक संगे ओही कालेजमे पढ़ैत छी। हम चंपाकेँ नीकसँ जनैत छी। तेँ ओकरा लए कए अहाँक एतेक चिंतत रहबाक काज नहि अछि।"

"अहाँसँ से सभ सुनि कए हमरा संतोष भेल अछि। मुदा ओ अछि कतए?"

"हमरो एहिबातक जिज्ञासा अछि। कारण नंदनगरसँ बिदा होइतकाल हम ओकरासँ भेंट करबाक हेतु गेल रही, मुदा ओ भेंट नहि भए सकलि।"

"तखन अहाँ कोना कहि सकैत छी जे ओ सुरक्षित अछि आ हमरा चिंता करबाक कोनो प्रयोजन नहि अछि?"

"चिंता केलासँ कोनो फएदो तँ नहि अछि। उल्टे मोनो खराब भए जाएत। ओ बुझनिक अछि। अपने सभटा बात सोचत।"

ओकरा बुझा-सुझा कए हम आगू बढ़बाक प्रयास केलहुँ मुदा

ओ अड़ि गेलीह जे हम हुनका संगे हुनके बासा पर चली। हमरो तँ कोनो ठेकान नहिए छल। हम हुनका संगे जेबाक हेतु तैयार भए गेलहुँ।

हुनका संगे रिक्सापर चलैत-चलैत बहुत रास गप्प होइत रहल। जखन हुनका ई बात बुझेलनि जे चंपासँ हमर अंतरंग संबंध अछि तँ हुनकर हर्षक सीमान नहि रहए। कहए लगलीह जे चंपा हुनक एकमात्र संतान छथि। बहुत दिनसँ ओ कथु लेल तमसाएल छनि आ फोनो नहि कए रहल छनि। जखन हमर मामाक गप्प होइक तँ ओ गुम भए जाथि। फेर कहलीह जे हमरा लगैत अछि हम अहाँकेँ हुनका संगे देखने छी। थोड़बे कालमे रिक्सा एकटा बड़का गेट लग ठाढ़ भेल। हमसभ उतरि गेलहुँ। आगू-आगू कामिनी आ पाछू-पाछू हम आगू बढ़लहुँ। आहि रे बा! हमसभ तँ खोह दिस बढ़ि रहल छी। हमर मोनक भाव पढ़ैत ओ कहलीह- “सही चलि रहल छी। कनीके कालमे हमर घर आबि जाएत। जहिना ओ कहने रहथि किछुए आगू बढ़ैत छी तँ एकटा रमणीक स्थानपर पहुँचि जाइत छी। हमरसभक पैर एकटा अतिसुंदर महल दिस बढ़ैत अछि। हम कनी धुकचुकाइतो छी जे कहीं किछु गलत तँ नहि भए रहल अछि?

भितर होइते हमरा ओ इसारासँ बैसबाक आग्रह केलीह आ अपने चाह लाबए भनसाघरमे चलि गेलीह। ओतेकटा घरमे कतहुँ केओ नहि देखा रहल छल। ओ तुरंते भपाइत चाह लेने आबि गेलीह। “एतेक जल्दी कोना चाह बना लेलिऐक?" -हम पुछलिअनि। हुनकर मंद-मंद मुस्कान देखैत बनैत छल। हमसभ चाहक संग गप्प-सप्पमे लागि जाइत छी। अवसर अनुकूल देखि हम हुनका चंपाक हड्डी टूटि जेबाक चर्च केलहुँ। ओ एकदम परेसान

भए गेलीह। हम कहैत छी- “आब तँ ओ ठीक भए गेलि। हम स्वयं ओतए रही। संयोगसँ डक्टर दीपांक अस्पतालमे बहुत मदति केलखिन जाहिसँ ओ शीघ्र स्वस्थ भए सकलीह।“

"दुर्घटनाक बादे हम नंदनगर गेल रही। बहुत प्रयास केलहुँ मुदा ओ भेंटि नहि सकलीह। पता ने कतए चलि गेलि?

यदि कनीकाल लेल बिसरि जाइ जे ओ चंपाक माए छथि तँ ई अखिआसब कठिन भए जाएत जे के चंपा अछि आ के ओकर माए। केओ हुनका देखि कए बएसक अनुमान नहि लगा सकैत छल।

एतेकटा घरमे एसगरे रहब कनी कोना दनि लगैत छल। तथापि थाकल रही। सुतबाक हेतु ओछाओनपर गेलहुँ। नहि कहि, करवन निन्न पड़ि गेलहुँ। दुपहर रातिमे गीत-नाद सुनि निन्न टुटि गेल। हमर कोठरीसँ किछु देखाइत नहि छल। मुदा मधुर संगीत कानमे पड़ि रहल छल। किछु गोटे रहि-रहि कए बाह! बाह! कहि उठैत छलाह, सेहो सुनि रहल छलहुँ। मोन आश्चर्यसँ भरल छल। भेल जे देखिऐक जे बात की अछि? के गाबि रहल अछि? आगू बढ़ैत छी मुदा घरक छिटकनी बाहरसँ लागल अछि। किछु कए नहि पाबि रहल छी। ठामहि पड़ि जाइत छी।

तकर बाद कथी लेल निन्न होएत। टकटकी लागि गेल। गीतनाद होइत रहल। हम ककरो स्वर चीन्ह नहि रहल छलहुँ। जे केओ छलि मुदा ओ बहुत मधुर स्वरमे गाबि रहल छलि। विद्यापतिक गीत- “माधव तूँ जनि जाह विदेशे..गबैत-गबैत ओ एकाएक गुम पड़ि जाइत छथि। फेर तरह-तरहसँ हुनकर मान-मान-मनौअल होइत अछि से सभटा सुनि रहल छलहुँ मुदा ई नहि बुझा

रहल छल जे ओ कलाकार छथि के? अंतमे "मोर कर मेहदी लगी,निज कर ते ही सुला जा बालम..... गबैत- गबैत गायिकाक स्वर जेना अवरुद्ध भए गेलनि। कनीकाल हेतु सभ शांत बुझाएल। सभ कतए चलि गेल,की करए लागल?

कोठरीमे एहि तरहेँ हमरा के बंद केलक? आओर भइए के सकैत छलि? ओएहटा तँ एहिठाम रहैत छथि। तखन तँ बात स्पष्टे अछि जे ओ केओ आन नहि कामिनीए छथि। ई गप्प सोचिए कए हमरा सौंसे देहक रोआँ ठाढ़ भए गेल। मुदा ई सक कनीके कालमे विश्वासमे बदलि गेल। गित-नाद बंद भेल। हम ओहिना चौकीपर बैसल बाहर दिस देखैत रही कि कामिनीकेँ हुलकैत देखलहुँ। साइत हुनका मोनमे किछु चिंताक भाव सेहो छल।

हम एहन सन भगल केलहुँ जेना गहींर निन्नमे होइ। ओ ओहिठामसँ आश्वस्त भए चलि गेलीह। हम सुति रहलहुँ। भोर भेल। ओहिठाम लगीचमे किछु नहि छल जे कोनो प्रकारक उठापटक होइत। कामिनी सुतले रहथि कि बाहर घंटी बाजल। हम निकलि गेलहुँ। बाहर अबिते छगुन्तामे पड़ि गेलहुँ। हमरा ओहिठाम देखि कए चंपा आ डाक्टर दीपांक दुनूगोटे अचंभित रहथि। एकर माने जे चंपाकेँ दीपांक पहिनेसँ चिन्हैत छैक की?"मोने-मोन सोचाए लागल। हमही आगू बढ़ि कहलिऐक- "आउ, आउ।

तूँ एतए कोना पहुँचलह?" -चंपा पुछलकैक।

"पहिने बैसि ने। ई सभ गप्प तँ होइते रहत।"

चंपा आ डाक्टर दीपांक ओहिठाम राखल कुर्सीपर बैसै छथि। हम ओकरासभसँ गप्प-सप्प करए लगैत छी। फेर चंपा

अपने कहैत अछि जे डाक्टर दीपांक कैं हमहीं अहिठाम आबक आग्रह केने छलिअनि। ओ हमर माएक भातिज छथि आ हुनकासँ भेंट करबाक हेतु बहुत उत्सुक रहथि। हुनकर आपसी संबंधक जानकारी हमरा अस्पतालेमे भेल छल। तहिआसँ आइ-काल्हि करैत- करैत आखिर हमसभ आबिए गेलहुँ।

चंपाक बात सुनि हमरा अपने होमए लागल जे हमर अनुमान कतेक गलत भए रहल छल। तैं कहल जाइत अछि जे- "संशयात्मा विनष्यति।" ई तँ रच्छ भेल जे बात खुजि गेल नहि तँ नंदनगरमे ओकरासभकैं बसक लगमे देखि पता नहि हम की-की सोचए लागल रही?❑

४६

डाक्टर दीपांके कामिनीकैं फोन कए चंपाक बिषयमे कहने रहैक। ओकरे कहलापर चंपा माएसँ भेट करबाक हेतु आएलि छलि। ओकरा अपन माएसँ मतभेद किएक भेलैक आ भेबो केलैक तँ सोझरेलैक किएक नहि, से हम नहि बूझि पाबि रहल छलहुँ, मुदा एहि विषयकैं उठा कए की होएत? बहुतरास व्यक्तिगत बात भए सकैत छैक।

करीब दस बाजि रहल हेतैक। कामिनी स्वयं चंपा आ डाक्टर दीपांकक संग हमर कोठरीमे अएलीह। चाह-पान भेलैक। माहौल हल्लुक रहैक। हम चंपा कैं किछु कहितिऐक ताहिसँ पहिने ओ कहए लागलि जे ओ बाबा वैद्यनाथकैं कबुला केने छलि जे ठीक भेलाक बाद हुनका जल चढ़बए जाएत। ओतहि दीपांकक संगे गेल रहए। हम ओकरा तकैत ओकर डेरापर गेल रही सेहो ओकरा पता लगलैक

मुदा ताबे हम नंदनगरसँ चलि गेल रही।

कामिनी कहलकैक- “दोस्तीमे छोट-मोट बातकेँ नहि धरबाक चाही।"

"से तँ ठीके। ई सभ स्वयं बुधिआर छथि।" -दीपांक बाजल।

गप्प-सप्पक क्रममे कामिनी बाजलि–“बहुत दिनक बाद महराजक स्वास्थ्य ठीक भेलनि अछि। एहि अवसरपर एक सप्ताहसँ उत्सव मनाओल जा रहल अछि। महराज स्वयं एतए आएल रहथि आ भए सकैत अछि आइओ रातिमे एतहि संगीत सभाक आयोजन होइक। तैँ हम व्यस्त छी, मुदा तूँ सभ अपना हिसाबसँ घुमि-फिरि सकैत छह।”

कामिनीक बातमे स्पष्टता छलैक। साइत ओ जानिए कए ई बात केने होथि जाहिसँ हमरा मोनमे किंवा चंपाक मोनमे कोनो दुबिधा नहि रहि जाइ जे ओ की करैत छथि। आ से किएक करैत छथि- तकर उत्तर साइत ओ समयपर छोड़ि देने छथि?

अनका जे भेल होइक मुदा हमर मोन बहुत हल्लुक भए गेल छल। हमरा चंपाक पारिवारिक पृष्टभुमिक सही जानकारी भेटि गेल छल। चंपाकेँ आब किछु कहबाक नहि रहैक। हमरा सोचबाक हेतु किछु रहि नहि गेल छल। कामिनी तँ साइत किछु सोचिते नहि छलि मुदा एकमात्र संतानक मोहसँ विवश तँ छलीहे। साइत हमरा देखि ओकरा एहि समस्याक बहुत सार्थक समाधानक संभावना देखेलैक।

हमसभ बैसले रही कि चंपाकेँ कामिनी बजओलक। बहुत दिनक बाद माए-बेटीमे गप्प होइत रहैक। आखिर ओकरा सभहक

मतभेदक किछु तँ कारण रहल हेतैक? से जानबाक उत्सुकता दीपांकोकेँ रहैक आ हमरो।

जखन कामिनी ओतहि बैसलि रहि गेलि तँ हमरेसभ लग कामिनी कहलकैक- "अहीँसभ एकरा बुझबिऔक। आब ई कोनो बच्चा तँ नहि अछि। हमर बितल जीवनपर शोध कए एकरा की भेटतैक? वारंबार अपन पिताक परिचय पुछैत रहैत अछि। हम कहए जोकर स्थितिमे रहितहुँ तँ एतेक दिन चुप किएक रहितहुँ? ई बात एकरा बुझबामे नहि आबि रहल अछि आ हमरासँ झगड़ा केने अछि।"

कामिनी मुँहे ई सभ सुनि हमसभ गुम पड़ि गेलहुँ। समस्या बहुत गहींर लागि रहल छल। चंपा नीचाँ मूड़ी गारने कुर्सीपर बैसलि रहलि। हमसभ चुपचाप सुनैत रहलहुँ। बाजिए की सकैत छलहुँ। फेर कामिनिए ओहि मौनकेँ भंग करैत आगू बजलीह- "हम एकर बात मानि कए किछु दिन गुमति लग खोपड़ीमे एकरा संगे रहबो केलहुँ। मुदा ओहूसँ समाधान नहि भेल। हमर विवशताकेँ एकरा बुझबाक चाही। "

एहिबात पर चंपा उखड़ि गेलैक। ओ चिकरए लागलि- "कर्तव्य, कर्तव्य बजलासँ की होएत? हम आखिर की चाहैत छी? यदि हम अपन पिताक जानकारी चाहलहुँ तँ कतएसँ गलती केलहुँ। अहींसभ कहू?" -ई बजैत बजैत चंपाक आँखि नोरसँ डबडबा गेल। कामिनी दुलारसँ ओकरा अपनामे साटि लेलकैक। फेर बाजए लागलि- "समयपर सभ बूझि जेबही। अखन अपन काजमे लागल रहै। पढ़ाइ--लिखाइ कर। व्यर्थ बातक चंता केलासँ की फएदा?"

कामिनीक उत्तर स्पष्ट छल। चंपाकेँ हमसभ सेहो बोल-भरोस

देलिऐक। हम बहुत काल ओहिठाम रहब ठीक नहि बुझलहुँ। अस्तु, चलबाक उपक्रम कएल। ओ सभ बहुत आग्रह करैत गेलीह मुदा हम किछु-किछु कहि बिदा भए गेलहुँ। ओतएसँ सोझे टीसन अएलहुँ। संयोग एहन भेल जे लोटन प्लेटफार्मेपर भेटि गेल। ओहो गामे जा रहल छल। हमरा देखि बहुत प्रसन्न भेल। ओकर व्यवहारमे परिवर्तनसँ हम अभिभूत रही। दुनू भाइ एकहिठाम ट्रेनमे बैसि गाम बिदा भेलहुँ।❑

४७

हम सोचने रही जे हमरा गेलासँ ओहिठामक माहौल हल्लुक हेतैक। चंपा अपन माएसँ नीकसँ बतिआ सकति। मुदा भेलैक उनटे। चंपाक उपेक्षासँ अपमानित भए कामिनी ठोहि पारि कए कानए लगलीह। कनिते-कनिते बाजए लागलि-

"एहन अभिसप्त हम कोनो एसगरे नहि छी। एहि राज महलक औढ़मे कहि नहि हमरा सन-सन कतेको गोटेक परिचय अज्ञात रहि गेल। कतेकोगोटे अकाल मृत्युक सिकार भए गेलि। कतेको गोटे अखनो महले-महल घुमि रहलि छथि। महल ओहिना नहि ठाढ़ होइत अछि? एकर पाछू कतेको निर्दोष आत्माक क्रंदन रहैत अछि। कतेको गरीबक बलिदानक गाथा एहिमे समटि देल गेल रहैत अछि? मुदा संतान होइत छैक कथीलेल? केओ तँ भगीरथ बनए?”

-ई सभ बजैत-बजैत कामिनी ओतहि बेहोस भए गेलीह। चारूकात हड़बिड़रो मचि गेलनि । सिपहसलार सभ दौड़ल आ

सशंकित दृष्टिए एकरासभ दिस देखलक। राजबैद बजाओल गेलाह। दाबाइ-दारू भेल। मुदा कामिनीकेँ होस नहि भेलनि।

प्रात होइत-होइत कामिनीक हालति बिगड़िते गेल। राजबैद फेरसँ अएलाह। देखिते बजलाह- “ई तँ गुजरि गेलि।"

चंपा जोर-जोर सँ कानए लगलीह। कामिनी सभटा रहस्य अपनेमे समटने चलि गेलीह। अपना भरि ओ चंपाकेँ बुझेबाक बहुत प्रयास केलक मुदा समय बलवान होइत अछि। चंपाकेँ कहि नहि की भए गेलैक? वारंबार एकहि प्रश्नकेँ दोहरओलासँ ओकरा की भेटलैक? किछु नहि।

चंपाक प्रश्नक उत्तर कामिनी नहि दए सकैत छलि। महराजक महल एहन कतेको प्रश्नचिंहके अपनामे समेटि लेने छल। मुदा मखनाकेँ एहि अन्यायसभक प्रति मोनमे आक्रोश छलैक। ओ चुप नहि रहत। अस्तु,जखन कामिनीक प्राण खिचबाक प्रश्न अएलैक तँ ओ कनिको देरी नहि केलक। सोचलक-“एहन-एहन शोषित लोकक कष्ट निवारणक मार्गमे बाधा ठाढ़ कए अनेरे पापक भागी किएक बनल जाए?"

हम गाम पहुँचले छलहुँ कि हमरा दीपांकक फोन आएल। ओकरासँ कामिनीक दुखद समाचार सुनि अबाक रहि गेलहुँ। काल्हिए तँ हमसभ संगे छलहुँ। देखिते-देखिते ई की भए गेल? हम तुरंत राजपुरा वापस अएलहुँ। हमरा तँ सभसँ बेसी चंपाक चिंता होमए लागल। हम ई बात दिपांककेँ कहबो केलिऐक, मुदा ओ चंपासँ मोने-मोन बहुत तमसाएल छल। के ककरा सम्हारैत? सभ अपनेसँ परेसान छल।

जाइत-जाइत कामिनी एकटा चिठ्ठी दीपांककेँ हमरा लेल दए गेलखिन। ओतए पहुँचलाक बाद दीपांक हमरा ओ चिठ्ठी देलाह। ओहिमे लिखल छल- “अहाँक ओ चंपाक जोड़ी देखि कए हमरा बहुत आशा जागल छल। हम एकरा सफल होइत साइत नहि देखि सकब मुदा हमर इच्छा अछि जे अहाँसभ आपसमे बिआह कए हमर एहि अभिलाषाकेँ साकार करब। हम चाहितो अपना जीबैत ई गप्प अहाँसँ नहि कहि सकलहुँ। आब तँ जाइए रहल छी। ई हमर अंतिम इच्छा थिक।

शुभाकांक्षी,

कामिनी”

पत्र पढ़ि कए गुम पड़ि गेलहुँ। तत्काल किछु नहि बाजि सकलहुँ। मुदा जखन बादमे चंपासँ भेंट भेल तँ ओकरा ई चिठ्ठी पढ़ए देलिऐक। ओ चिठ्ठी पढ़ि बहुत भावुक भए गेल छलि। ओ किछु कहितए,ताहिसँ पहिने हम स्पष्ट कहलिऐक- “जाधरि अपनलोकसभ महराजक चांगुरसँ मुक्त नहि होइत छथि ताधरि बिआहक गप्पो सोचब उचित नहि होएत। अस्तु, हमरासभकेँ किछु दिन प्रतीक्षा करए पड़त।” चंपाकेँ कोनो चिंता नहि भेलैक। ओकरा हमरापर पहिनेसँ पूरा विश्वास रहैक, भरोस रहैक जे हम ओकर आ ओकरे छी।

कामिनीक मृत्युक समाचार सौंसेगाम पसरि गेल। ऊपरसँ मरखना सेहो हबा देलकैक। कालूकेँ एकांतमे बजओलक आ कहलकैक- “इएह मौका छह। गौंवा सभकेँ जगाबह आ महराजपर आक्रमण कए दएह।" कालू ओकर आदेशके मानैत गौंवासभक बैसार केलक आ सभकेँ महराजी महलमे भए रहल नाना प्रकारक

अत्याचारक बारेमे बतओलक। गौंवासभ तँ महराजसँ पहिने सँ तंग छलहे। सभ इएह-ले ओएह-ले बिदा भेल। जकरा जे भेटलैक उठेने गेल। ककरो हाथमे लाठी, ककरो हाथमे भाला तँ केओ अपन लाइसेंसी बंदूक धरि उठा लेलक। लगैत छल जेना एकटा जनक्रांतिक अभिर्भाव भए गेल हो।

ई बात हम बहुत बादमे बुझलिऐक जे कामिनी आ निशाक महराजक महलमे आबि गेलाक बाद ओकर संपर्क बढ़ि गेल रहैक। मुदा ओहिठाम केओ अपना मोनक हिसाबे नहि चलि रहल छल। सभ कोना-ने-कोना फँसि गेल छल। मुदा जखन निशाकेँ कामिनीक मृत्युक समाचार भेटलैक तँ ओ बेचैन भए गेलि। पुबारिटोलक लोकसभ ओकरा जनैत छलैक। कालू भगताकेँ फोन लगेलक। कालू कहलकैक-

“अगुताउ नहि हमसभ आबि रहल छी। भगवानक घरमे देर अछि, अन्हेर नहि अछि। महराजक दिन आब गनल छैक।"

राजपुरा अबैत-अबैत ओ भीड़ बेकाबू भए गेल। महराजक देबालसभ यदि ओतेक ऊँच नहि रहतेक तँ आइ की होइत से नहि कहि? महराजो सतर्क भए गेल रहथि। हजारोक संख्यामे लठैतसभ महराजक महलक चारूकात पहरा दए रहल छल। भितरक सभ गेटसभ बंद कए देल गेल छल। महराज स्वयं तँ पता नहि कतए निपत्ता भए गेल छलाह।

महराजी पुलिस आ लंठ सभ मिलि कए सभकेँ बाहरे रोकि देलक। मुदा अन्दर निशाक नेतृत्वमे महिलासभ उतरिबार कातक गेटकेँ तोड़ि देलक। सभटा महिलासभ ओहिबाटे फरार भए गेलि। ओकरासभक आगू-आगू निशा चलि रहल छलि। मखनाक छाती

तँ छत्तीस इंच चाकर भए गेल। कालू भगता सेहो अचंभित रहए। ग्रामीणसभ एहिबात सँ प्रसन्न रहए जे ओकरासभकेँ अपन जमीन जायदादसँ बेदखल केनिहार महराजक अंत होमहि वला छल। अन्दरसँ निशा फाटक खोलि देलकैक। सैकड़ो महिलाबन्दीसभ रनिबाससँ इएह-ले ओएह-ले भागलि। महराजी पुलिससभ ताबे सतर्क भए गेल। निशाकेँ पाछूसँ पुलिसक गोली लगलैक। ओ ठामहि खसलि। प्रात भेने हुनकर लहास राजक हाताक बाहर देखल गेल। एहि तरहेँ बहुतरास रहस्यकेँ अपना संगे लेने ओ सभदिन हेतु मौन भए गेलीह। मुदा मखना बहुत प्रसन्न छल कारण ओकर नीति निर्धारक समितिमे एक बेर फेर बृद्धि भेलैक।

महराज स्वयं घटनाक्रम पर नजरि रखने छलाह। बीच-बीचमे बिगड़ितहुँ छलाह। महराजी ताव सबार भए जाइत छलनि। महराजी भगताकेँ तँ पेटमे गुदगुदी लागि रहल छल। महराज कहथि-

"कहाँ गेल ओ तांत्रिक जकरा कहलापर हमसभ एतेक मंदिरसभ बनओलहुँ, पोखरि-इनार सभ खुनेलहुँ,देबालसभ ठाढ़ केलहुँ।"

महराजी भगता बाजल़- “सरकार! ओकर तँ किछु अता-पता नहि अछि। कहीं ओ मखनाक आदमी तँ नहि छल?"

"मखना! मखना ! मखना! जकरे देखू सएह मखनाक माला जप कए रहल अछि। ई मखना केँ अछि?"

महराज एते बजने छलाह कि ऊपरसँ केओ ठहाका पाड़लक।

“कतहुँ केओ नहि देखा रहल अछि फेर ई अबाज ककर अछि?" -महराज बजलाह।

"हम छी मखना-अहाँक काल।"

से सुनितहि महराज बैसार छोड़ि भगलाह। हुनकर अंग रक्षकसभ लाख इसारा दैनि जे रुकि जाउ मुदा ओ लुत्ती भए गेल रहथि। एक हाथे धरिआ सरिआबथि आ दोसर हाथे नाक सुरकथि। महराजी गेट धरि पहुँचलाह कि जोर- जोरसँ हल्ला होइत सुनलाह। प्रयास केलाह जे देबाल फानि कए नालामे कूदि जाइ कि धराम दए खसलाह। रच्छ भेल जे एकटा महराजी पुलिस हुनका लोकि लेलक नहि तँ हुनकर खेल तखने खतम छल।

लोकक हुजुम आगूए बढ़ि रहल छल। ओमहर महराजक लठैतसभ सेहो लाठी भाँजि रहल छल। मखना अपन नीति निर्धारक समिति संगे विचार-विमर्श केलक। राजमंत्री तँ राजकाजकेँ नीकसँ बुझथि। ओ कहलखिन जे दुनूकात तँ अपने लोक अछि तेँ खून-खराबासँ बँचक चाही। महराजकेँ शांतिपूर्ण समाधानक ऐकटा मौका देबाक चाही। यदि ओ तइओ नहि किछु कए सकताह तँ सोचल जेतैक। सभगोटे राजमंत्रीक विचारसँ एकमत छलाह। मखना सेहो ओकरा स्वीकृति एहि संसोधनक संग देलक जे महराजक आवासपर दिन-राति हमरसभक नजरि रहत जाहिसँ ओ विदेश नहि भागि सकथि।

मखना एहि निर्णयसँ कालू भगताकेँ अवगत करओलक। लोकसभ बहुत मोसकिलसँ शांत भेल। महराजक लठैतसभकेँ भेलैक जे मखनाक आदमीसभ डरा गेल। ताहि प्रसन्नतामे ओ सभ आओर तेजीसँ लाठी भजैत महराज लग पहुँचल। ओकरासभकेँ

उमीद रहैक जे महराज पीठ ठोकताह। मुदा भेलैक उनटा। ओकरासभकेँ देखितहि महराज चिकरए-भोकरए लगलाह। सभ इएह-ले ओएह-ले ओतएसँ भागल।❑

४८

प्रातभेने चारूकात लोकसभ जतए-ततए ठाढ़ महराजक बारेमे चर्च करैत छल। अपना-आपमे एकटा एतिहासिक घटना घटल छल। जे आदमीसभ कहिओ महराजक देबालो लग ठाढ़ हेबाक नहि सोचि सकैत छल से सभ देबाल फानि गेल छल। महराज स्वयं एहिबातसँ ततेक डरेलाह जे दूपहर रातिए राजपुरा छोड़ि अज्ञात स्थान दिस बिदा भए गेलाह। टमटमसँ महल छोड़ि रानीक संगे महराज भागि रहल छलाह, से दृश्य देखि मखना जोरसँ ठहाका पाड़लक। महराज तँ ओतहि बेहोस भए जैतथि। मुदा पाछू-पाछू महराजी भगता चलि रहल छल। तकरा संगे राज बैद ओ राज पंडित सेहो छलाह आ सभसँ पाछू महराजी जासूस अलग एक्कामे सबार छलाह।

महराजकेँ हालति देखैत बनैत छल। कतबो केओ बुझबनि जे हड़बड़ाउ नहि, ओ किछु सुनबा हेतु तैयारे नहि रहथि। एक हिसाबे ओ बिना युद्धेकेँ हारि चुकल रहथि। मखनाक डर हुनक मोनक कोन-कोनमे तेनाक सन्हिआ चुकल छल जे ओ अपनहि राजमहलमे अपनहिसँ डरि रहल छलाह। फेर कखन हुनकर रोगसभ उपकि जाएत तकर कोन ठेकान? जाहिठाम एहन

प्रजापालक हेताह ताहिठामक प्रजाक तँ भगवाने मालिक।

महराजक काफिलाक संगे बीस-पचीसटा महराजी पुलिस सेहो चलि रहल छल। चलैत-चलैत ओ सभ गंगाकात सिमरिआ लग पहुँचि गेलाह। फरीछ भए रहल छल। सभ कहलकनि जे एहीठाम विश्राम कएल जाए। गंगाकातमे भूत-पिशाचसभ काबूमे रहत। महराजकेँ ई बात सही बुझेलनि। सभगोटे एक्कापरसँ उतरिए रहल छलाह कि मरखना यमपाश फेकलक। ओकर लक्ष्य मात्र महराजे रहैत छलाह। मुदा एहि बेर निशाना चुकि गेलैक आ यमपाश सोझे महराजी भगताक गलामे जा कए अटकि गेल। ओ ठामहि चितंग भए गेल। महराजक मुँह तँ फक्क दए पिअर भए गेल। लगैत छल जेना सौंसे देहमे कतहु खून नहि होनि। ओ सुन्न भए ठामहि बैसि गेलाह।

सभ केओ गंगामे स्नान केलाह। पंडाकेँ महराज दए पता लगलनि तँ दौड़ल अएलाह। आशा रहल हेतनि जे मोट दक्षिणा भेटत मुदा एहिठामक तँ हाले-बेहाल छल। यमपाश लागि गेलासँ महराजी भगता बेहोस भए गेल छलाह। राजबैद सभटा उपचार कए थाकि गेलाह मुदा किछु फएदा नहि भेल। क्रमशः ओकर हालति खराबे भेल जा रहल छल। आब की कएल जाए? -महराज बजलाह। मरखनासँ समझौता करब एकमात्र विकल्प बुझा रहल अछि।" राजपंडित बजलाह

" मुदा ताहू हेतु तँ ओकरा सामने आबक हेतैक। गप्प करक हेतैक। मुदा ओ तँ करवनो सामने अबिते नहि अछि?-महराज बजलाह।

"सरकार! ओ कोनो हमरा अहाँ जकाँ मनुक्ख तँ अहि नहि जे प्रकट होएत। ओकरा तँ देह छैके नहि। ओ मरि चुकल अछि। ओकर आब अहाँ की बिगाड़ करब? किछु नहि। ओ तँ मात्र जनभावनाक प्रतिबिम्ब अछि। ऊपरसँ ओ यमपाश लेने घुमि रहल अछि। ई तँ ओकर महानता अछि जे एखन धरि हम-अहाँ बाँचल छी।" -राजपंडित बजलाह। "से सभ तँ बुझलिऐक मुदा मखनाकेँ मनाओत के?" -महराज बजलाह।

"ओकर भाइ कालू छोड़ि कए केओ ई काज नहि कए सकैत अछि। मखना आइ-काल्हि अपन भाइ कालूकेँ छोड़ि ककरो बात सुनितो नहि अछि।

“तँ चली हमसभ ओकरे सँ गप्प करी।"

"पहिने एखुनका समस्यासँ निपटि ली। फेर आगूक सोचल जेतैक"।

“बात तँ सही कहि रहल छी।"

ई सभ गप्प कइए रहल छलाह कि महराजी भगता आँखि उनटा देलक। राजबैद दौड़लाह। ओकर नारी देखि कए कहैत छथि जे ई तँ गेल।

महराज डरसँ थर-थर काँपि रहल छलाह। देखिते-देखिते महराजी भगताक जान चलि गेल आ हमसभ किछु नहि कए सकलहुँ।" -महराज बजलाह।

"भावी प्रवल।” -राजपंडित कहलखिन।

महराजी भगता मरि गेल। ओकर अंतिम संस्कार ओहीठाम कएल गेल। माघमे मास करए बहुत रास लोकसभ आएल छल।

महराजी भगताक गौंवासभ सेहो मास कए रहल छलाह। ओकर मृत्युक समाचार सुनि जे जतहि रहथि ओतहिसँ दौड़ल अएलाह। दाह संस्कारमे सामिल लोकसभ छगुंतामे छल जे महराजी भगताकेँ की भए गेलैक? सभ एक-दोसरसँ कनफुसकी कए रहल छल। एहिसभसँ निपटि कए महराज रानीक संग माघमेलासँ घसकि जाए चाहै छलाह मुदा रानी अड़ि गेलखिन जे लोकसभ माघ करए निआरि कए अबैत अछि आ हमसभ जखन एतए आबि गेल छी तँ मास बिताइए कए गेनाइ ठीक होएत। मुदा महराजकेँ तँ हर पैसल रहनि। हुनका मखनाक डर ततेक होनि जे ओ कोनो तरहसँ ओहिठाम रहबाक हेतु तैयार नहि भेलाह। रानी सेहो अपन बातपर अड़ि गेलीह। अंतमे रानी किछु सिपहसलारसभक संगे ओतहि रहि गेलीह आ महराज राजपुरा वापस भए गेलाह।

राजपुरा वापस आबि कए महराज अपन भविष्य लए कए बहुत चिंतित रहथि। हुनकर कैकटा खास आदमीसभ गुजरि गेल। जनतामे बहुत आक्रोश छल। हुनकर अपन स्वास्थ्य सेहो ठीक नहि चलि रहल चलनि। ओ कोनो तरहेँ शांति चाहैत छलाह मुदा हालति तदनुकूल नहि छल। मखनाक बढ़ैत प्रभावसँ हुनकर आस्तित्वपर ग्रहण लागि गेल छल।

कालू भगताक नेतृत्वमे लोकसभ अपन-अपन गाम वापस आबि गेल। ओकरासभमे बहुतरास आत्मविश्वास आबि गेल छल। यद्यपि महराजक राज बाँचि गेलनि मुदा एहि बेरक आक्रमणमे हुनकर साखकेँ जबरदस्त बट्टा लागल। गाम-घरमे यत्र-तत्र एहि घटनाक चर्च होइत रहल। सभ आशावान छल जे महराजक अंत

शीघ्रे होएत आ ओकरसभक जथा-पात लौटि जेतैक।

लोटन संगे हम बहुत दिन बाद गाम आएल रही। अबिते ई उकबा भए गेल। महराजपर आक्रमणक हेतु गेल लोकसभमे कैक गोटेकैं बहुत चोट लागि गेल रहैक। लोटनकैं सेहो बामा हाथक हड्डी टुटि गेल रहैक। हम ओकरा लेने गामेक बैद लग गेलहुँ। ओ ओकरा देखि सुनि कहलखिन जे कोनो चिंताक बात नहि अछि। मात्र मोच पड़ल छैक। किछु दिनक इलाजसँ ठीक भए जेतैक। मुदा ठीक हेबाक लक्षण नहि लागि रहल छलैक। क्रमशः ओकरा दर्द बढ़िते गेल। कोनो सुधार नहि देखि हम लोटनकैं राजपुराक अस्पतालमे भर्ती करा देलहुँ। ओहिठाम मासदिनसँ बेसिए ओकर इलाज भेल। मुदा ओकर हाथक हड्डी नहि जुड़ल। डाक्टरसभ हाथ बारि देलक। ओकर बामा हाथ सभदिनलेल टेढ़ भए गेल।❑

४९

किछु दिनक बाद हमरसभक एमएक परीक्षाफल बहराएल। हम सौंसे विश्वविद्यालयमे प्रथम आएल रही। आ चंपाक की भेल? सौंसे अखबार उलटि गेलहुँ, कतहुँ ओकर नामे नहि छल? अपन परीक्षाफलसँ जे प्रसन्नता होइत ताहिसँ बेसी कष्ट चंपा लए कए भए गेल। ओकर फोन आएत तँ की कहबैक? आ भेबो कएल सएह। हम अखबार देखिते रही की चंपाक फोन आएल।

"सुनलिऐक जे रिजल्ट बहरेलैक अछि?"

"सएह देखि रहल छी।"

"तूँ कतए छैं?"

"लोटनक डेरापर छी"

"ओ! हम ओतहि आबि जाउ की?"

हम गुम रहि गेलहुँ। एहिबातसँ ओकरा बहुत परेसानी भेलैक। किछु अनिष्टक आशङ्का भेलैक। ओ बाजि उठलि-

"की बात छैक? फरिछा कए कह ने?"

"तोहर नाम रिजल्टमे नहि देखा रहल अछि।"

ई सुनितहि चंपा धराम दए खसलि। ओएहटा आशा रहैक सेहो गड़बड़ा रहल छलैक। आब की होएत? ओकर संपूर्ण भविष्य अन्हार लगैत छलैक।

“हमही तोरे लग आबि रहल छी। परेसान नहि हो। किछु-ने-किछु समाधान हेतैक।”

हम रिक्सा पकड़ि ओकर डेरापर पहुछ गेलहुँ। डेरा एकदम सुन्न छल। केओ कतहुँ नहि। हमरा देखिते ओ ठोहि पारि कए कानए लागलि। एहन गड़बड़ रिजल्टक आशा नहि छलैक ओकरा। यद्यपि परीक्षासँ ठीक पहिने ओ दुखित भए गेल छलि तथापि अपना भरि तैयारी केनहि रहए। हम ओकरा तरह-तरहसँ बौसबाक प्रयास केलहुँ आ कहलिऐक जे कैक बेर मौद्रिक त्रुटिसँ सेहो नाम छुटि जाइत छैक से किएक ने हमसभ सँझुका ट्रेनसँ नंदनगर चली। ओतए विश्वविद्यालयमे जा कए सही जानकारी भेटत। चंपाकेँ ई गप्प पसिंद भेलैक। हमदुनू गोटे साँझमे ट्रेन पकड़ि नंदनगर हेतु बिदा भए गेलहुँ। भोरे ट्रेन नंदनगर पहुँचल। रातुक यात्राक की कहू? भगवान जे करैत छथि से नीके करैत छथि। नंदनगर पहुँचि टीसनेपर हमसभ नित्यकृयासँ निपटि सोझे कालेज पहुँचलहुँ।

सूचनापट्टपर परीक्षाफल लागल छल। ओहिमे दोसर स्थानपर चंपाक नाम छल। अपन नाम देखितहि चंपा चिचिआ उठलि।

"हम तँ प्रथम श्रेणीमे सफल छी। संगहि विश्वविद्यालयमे दोसर स्थान भेटल अछि।"

"बधाइ हो। हम तँ बुझिते रहिऐक जे तूँ जरूर सफल हेबैं से सही साबित भेल। अखबार वलापर तँ मोकदमा हेबाक चाही। एहनेमे कैक बेर कतेगोटेक जानो चलि जाइत अछि।"

ओहिठामसँ सोझे हमसभ हनुमान मंदिर गेलहुँ। लड्डू चढ़ओलहुँ। तकर बाद ओहीठाम मरवारीबासामे भरिपेट शुद्ध शाकाहारी भोजन केलहुँ। कहबी छैक जे मन हरखित तँ गाबी गीत। से माहौल तेहने भए गेल छल। कालेजमे कहने छल जे काल्हि अंक पत्र सहित आओर कागज सभ भेटतैक। हमसभ रातिमे विश्रामक हेतु जोगारमे लागि गेलहुँ। बहुत दिनक बाद चंपाकेँ एतेक प्रसन्न देखने रहिऐक। ओकर ई प्रसन्नता बनल रहए, कोनो तरहेँ उन्नैस नहि हो सएह हमर अभिलाषा छल। से भगवान पूरा केलथि। ओकर रिजल्ट नीक भेल। हमसभ काल्हि कालेजसँ प्रमाणपत्रसभ लेब आ तकर बाद आगूक प्रयास कएल जाएत। रातिभरि हमसभ टिसने लगक होटलमे बितओलहुँ।

कालेजमे पहुँचतहि बहुत रास दोस्तसभ भेटलाह। सभ अपन-अपन प्रमाणपत्र लेबएमे व्यस्त छलाह। हमहुसभ अपन-अपन अंकपत्र लेलहुँ। ओतहि कहल गेल जे हमरा दुनूगोटेक व्याख्याताक हेतु तदर्थ आधारपर नियुक्ति तात्कालिक प्रभावसँ भए गेल अछि आ ताहि हेतु तुरंत उप-कुलपति महोदयसँ भेंट करबाक

अछि। कहबी छैक जे भगवान जखन दैत छथि तँ चार फाड़ि कए दैत छथि। सएह भए रहल छल। हम दुनूगोटे उप-कुलपतिसँ भेंट करैत छी। ओ तँ हमरेसभक बाट तकैत छलाह। हाथे-हाथ नियुक्ति-पत्र दैत छथि आ ओही दिन विश्वविद्यालयक सहायक प्राध्यापक भए जाइत छी। हमरासभ लेल एहिसँ बढ़ि कए चमत्कार आओर की होइत?

कहि नहि सकैत छि जे ओहि दिन चंपा कतेक प्रसन्न छलि। हमरा तँ लगैत छल जेना एकयुगक तपस्या पूर्ण भेल। हमसभ अपन पैर पर ठाढ़ भए गेल रही। चंपाकेँ एकटा नवजीवन भेटल रहैक। सालोसँ ओ एहिपार ओहिपार करैत रहैत समय बितओने छलीह। आब ओ मझधार टपि गेल छलि। ई समय बनल रहए, एकर कखनो अंत नहि हो सएह हम दुनूगोटे सोचैत रही।

हमरा लोकनिकेँ सरकारी आवास भेटि गेल। हमसभ अपन-अपन घरमे रहए लगलहुँ। पढ़ाइ-लिखाइक काज चलए लागल। एक हिसाबे हमरा लोकनिक जीवन सुव्यवस्थित भए गेल छल। छुट्टी होइतहि हमसभ एक दोसरक ओहिठाम अबैत जाइत रही। लगबे नहि करए जे हमसभ फराक-फराक रहि रहल छी। ओहुना हमरसभक आवास सटले छल। बीचक छोट सन देबाल कखनो खसि सकैत छल।❑

५०

ओहि दिन छुट्टी रहैक। हमरे डेरापर चंपा आ हम बैसल गप्प-

सप्प करैत रही कि लोटनक फोन आएल। जहिआसँ ओकर हाथ अवदाह भए गेलैक तहिआसँ टीसनक दोकानोक हालति खास्ता रहए लागल। ओमहर महराजी जासूससभ लोकसभक पाछू पड़ल छल। गामक लगीचमे सभ जमींदारसभक महराजक ओहिठाम बजाओल गेल आ लखनाक समस्यासँ अवगत कराओल गेल। ओना ओसभ स्वयं परेसान छलाह कारण निलामीक जमीन औने-पौने दाममे ओएहसभ हथिओने रहथि। आब सभपर खतरा छल। लोकसभ अपन अधिकार वापस मांगि रहल अछि। एक बेर एही विषयक कारण महराजपर आक्रमण भेबो कएल जे बहुत कारगर नहि रहल, तकर कारण जे हो। मुदा एकटा रस्ता तँ बनल। महराजक एकबालमे बट्टा तँ लागिए गेल। महराजक हेतु सभसँ अपमानजनक भेल रनिबाससँ महिलासभक पलायन। जेना एकटा उजाहि उठि गेल । अफरा-तफरीक माहौल रहबे करैक। ओकरे फएदा उठबैत निशा फाटक खोलि देलकैक आ जकरा जेम्हरे भेलैक तेम्हरे भागल। कोनो गिनती नहि रहैक जे कतेक भागलि आ कतेक रहि गेलीह मुदा दोसर दिन जखन महराज सिमरिआसँ लौटलाक बाद ओमहर गेलाह तँ ठोहि पारि कए कानए लगलाह। रनिबासमे भम्ह पड़ैत छल।

महराजक ओहिठाम जमींदारसभक बैसारकेँ अत्यंत गोपनीय राखल गेल छल। महराज सभकेँ हालमे भेल विद्रोह आ ताहिसँ उतपन्न संकटक बारेमे जानकरी दैत आग्रह केलाह जे अपन-अपन गाम वापस जाए फनैतसभकेँ काबू कएल जाए जाहिसँ दोबारा एहन हालति नहि उतपन्न होइक। सभ कहलक- “सरकारक हुकुमक पालन होएत। ककर मजाल जे सरकारक विरुद्ध ठाढ़

होएत?" तकर बाद सभगोटे अपन-अपन गाम वापस गेलाह आ जहिना बाजल रहथि गरीब सभकेँ पेँच कसए लगलाह। गरीबकेँ काज देनाइ बंद कए देलक। पैंच-उधार सेहो बंद कए देलक। जमींदारसभ सोचने छल जे एकर बाद ओसभ अपने दौड़ल आएत। मुदा से नहि भेल। आब ओ बात नहि छल, समय बदलि गेल छल। ओहोसभ आर-पारक हेतु तैयार छल। सभसँ भारीबात रहैक जे ऊपरसँ मखना कोनो छीज-वस्तुक कमी नहि होमए दैक। राति होइते ओकरासभक टोलमे समानसभ पहुँचि जाइत छल। अस्तु,जमींदारसभक हाथ-पैर सुन्न पड़ि गेल। ओसभ बूझि नहि पाबि रहल छलाह जे ई सभ कोना भए रहल अछि कारण भोर होइते कतहु किछु नहि देखाइत, सभ किछु यथावत।

महराजक सभदाव असफल भए रहल छल। राजमहलमे एसगर भूतजकाँ बड़बड़ाइत घुमैत रहैत छलाह। नीति निर्धारक समितिक लोकसभ मखना लग पहुँचि गेल छल। आओर तँ छोड़ू, रानिओ संग नहि दए रहल छलखिन। सिमरिआमे ओ जानि बुझि कए रहि गेलीह। ओहिठाम हुनकर अलगसँ टेंट लगओल गेल आ दिन-राति महराजी पुलिससभ पहरा दैत रहैत छल मुदा ताहिसँ की? रानीकेँ जहाँ आँखि लगैत तँ राजमंत्री आबि कए ठाढ़ भए जैतथि। कैक बेर रानी चेहा उठलीह। कैक बेर किछु-किछु प्रेमालाप करैत सुनल जाथि। विचित्र दृश्य छल। हरि हँसैत छलाह आ हँसैत छल मखना।

एकराति तँ हरि ओतहि रहिए गेलाह। भोरे जखन रानी उठलीह तँ बहुत आलस्यमे रहथि। मुदा ई नहि बुझाइन जे ई सभ भेलैक कोना? हरि तँ कहिआ कतए मरि गेलाह। तखन ई सभ की

भए रहल छल?

भए सकैत अछि ई हुनकर मोनक भ्रमे रहल हो मुदा ओ ओहि भावनामे एक बेर फेर रमि गेल रहथि। हरिक स्मरणमात्रसँ ओ आनंन्दित भए जाथि। सोचल जा सकैत अछि जे जखन रानीक ई हाल छल, तँ अनकर कथे कोन? ई महराज सामान्यसँ विशिष्ट ककरो नहि छोड़लाह। सभ हिनकासँ परेसान छल आ मोने-मोन एहिबातसँ प्रसन्न छल जे आब हिनकर अवसान लगीच अछि। एकर कहैत छैक समय। जे सभ काल्हि धरि हुनकर जयगान करैत रहैत छल,दिन-राति छप्पन प्रकारक भोगक ओरिआनमे लागल छल, सएहसभ हुक्कालोली भाँजि रहल छल।

महराज स्वयं बहुत परेसान छलाह मुदा हुनकर आब किछु चलिए नहि रहल छलनि,ने अपना पर ने अनका पर। बाह रे महराज! अपना-आपमे एकटा तमासा भए गेल छलाह। जकरे देखू सएह मखनाक एकबालक प्रशंसा कए रहल छल। जे व्यक्तिकेँ केओ देखि नहि रहल छल। जकर आस्तित्व कहिआ कतए अदृश्य भए गेल छल से सामान्य व्यक्तिक आकांक्षाक प्रतिनिधित्व कए रहल छल आ महराज अपने बनाओल बड़का-बड़का देबाल सभमे अपनाकेँ ताकि रहल छलाह, बड़बड़ाइत रहैत छलाह- “हम के छी, कतए छी?"

महराजक दुर्दशा देखि केओ हुनका संगे किएक रहैत? सभ तँ हुनका संगे सुखक खोजमे गेल रहए। आब जखन मखना यमपाश लए घुमि रहल अछि, सेहो एहि एलानक संगे जे ओ एक-एक लोककेँ न्याय दिआ कए रहत, महराजक संगे के रहत आ किएक रहत?

रानी सोचि-विचारि कए सिमरिएमे रहि गेल रहथि। हुनका महराजक महल कटैत छल। हरिक रहैत कनी-मनी हरिअरी आएल छल, सेहो आब नहि रहल तखन ओ ओहिठाम की करितथि? जीवन जपाल लागि रहल छलनि। सोचलीह जे गंगा माएक शरणमे चलि जाइ, ओतहि एहि शरीरकेँ मुक्त करी। ऊपर मखना सभटा देखि बूझि रहल छल। अपन नीति निर्धारक समितिकेँ मजगूत केने जा रहल छल। समस्त नगरक लोक जेना ओकर अनुयायी भए गेल छल। एकरा कहैत छैक-जनक्रांति,एकटा एहन क्रांतिक ओ नायक छल जाहिमे समस्त त्रस्त,दुखी, ओ अतृप्त लोकसभकेँ उद्धारक रस्ता देखा रहल छल। ककरो कथुक मोह नहि रहि गेल छलैक,जीवनोक नहि। मुदा सभ एहि महराजक संहार चाहैत छल कारण ओ शोषणक प्रतीक भए गेल रहथि। बाह रे मखना!

मखना अपन नीति निर्धारक समितिक बैसारमे जनतासँ प्राप्त समर्थनक हेतु अभिभूत छल। महराजक नीति निर्धारक समिति तँ निष्कृय भए गेल छल। हालति ई भए गेल छल जे राजमंत्रीक पद खाली छल आ केओ राजमंत्री बनए हेतु तैयार नहि छल। सौंसे राजपुरा भम्म परि रहल छल।

रानी सोचि लेने रहति जे आब ओ लौटि कए राजपुरा नहि जेतीह। हुनका हरि चाही चाहे एहि जन्म, चाहे तकर उपरांत। हरि तँ एखन मखनाक नीति निर्धारक समितिमे छलाह। जे केओ राजपुरासँ जीवनमुक्त होइत छल से सभ स्वेक्षासँ मखनाक ओतए चलि जाइत छल, केओ स्वर्ग नहि जाए चाहैत छल। सभहक मोनमे एकहिटा बात छल जे जाबे एहि राजक गरीब, सतओल, शोषित

लोकसभक उद्धार नहि भए जाइत छहि ताबे स्वर्ग गेनाइ बैमानी होएत। से सोचि शरीर छुटलोपर सभ प्राणप्रणसँ मखनाक संग दए रहल छल। यमपाश मखनाक हाथमे छल। ओ चाहैत तँ यमपाशकेँ शिथिल कए लोकक अवसानकेँ रोकि सकैत छल मुदा लोकसभ महराजक राजसँ तंग छल। केओ हुनकर संग देबाक हेतु तैयार नहि छल।

माघमेलाक अंत छल। सिमरिआमे मास केनिहार सभ केओ स्नानक कए अपन-अपन गाम जेबाक तैयारीमे छलाह। रानी सेहो, ओही ठाड़मे गंगामे पैसलीह। मोनकेँ पाथर कए लेने छलीह। पानि हेमाल भेल छल। तथापि ओ आगूए बढ़ैत गेलीह। हाथ-पैर सुन्न भए गेलनि। शरीरक संतुलन बिगड़ि गेल। ओ ठामहि खसलीह आ गंगाक तेज प्रवाहक संगे बहए लगलीह। रानीकेँ गंगामे बहैत बहुत लोक देखलक। लगैत छल जेना ओ निष्कृय भए गेल छथि,प्रायः बचबाक कोनो प्रयास नहि कए रहल छथि। कतेक दूर धरि लोकसभ हुनका डुबैत देखैत रहल। चारूकात हंगामा भए गेल। महराजी पुलिससभ गंगामे फानि गेल मुदा किछु नहि भेलैक। रानी लहास बनि गेल छलीह।

ओमहर मखनाक ओहिठाम उत्सबक माहौल छल। रानीक स्वगत हेतु रेखा स्वयं बाहर अएलीह। आइधरि केओ हुनका घरसँ बाहर नहि देखने छल। मुदा रानीक ओतए अबितहि ओ सभसँ आगू बढ़ि हुनकर स्वागत केलीह। रानी हुनका देखि बहुत प्रसन्न भेलीह। रेखाकेँ देखि कए ओ आश्चर्यचकित रहथि।

ओ चिचिआ उठलीह- “तूँ एहिठाम?"

" हम तँ कहिआसँ छी। अपन हाल-चाल कह?"

दुनू बहिन रानी आ रेखामे बहुत सिनेह रहनि। मुदा रेखा बहुत पहिने यमपाशमे फँसि गेलीह। महराज किछु नहि कए सकलाह। ओझा-गुनी, डाक्टर-बैद सभ असफल भए गेल। रेखा चलि जाइत रहलीह, बहुत दूर जतएसँ केओ वापस नहि आबि सकल। मुदा ई तँ मरवनेक चमत्कार छल जे ओ यमराजोकेँ धकिओलक, यमपाश हथिओलक आ राजपुरासँ चुनि-चुनि कए एक-सँ-एक नीक लोककेँ अपना लगीचमे आनि लेलक।

रेखा आ रानीक खिस्सा हरिकेँ नीकसँ बुझल रहैक। पुबारिटोल आ पछबाइटोलसँ थोड़बे दूरपर छल दछिनबाइटोल। रेखा आ रानी सहोदर बहिन छलीह। दछिनबाइटोलमे हुनकर पिता धरवगर लोक छलाह। तीनूटोलक लोक हुनकर लोहा मानैत छल। हुनका दूटा बेटीए छल। अपना भरि नीकसँ पालन-पोषण केलाह। देरवबामे दुनू बहिन अतिसय सुंदर छलीह। एतबे सुंदर छलीह जे महराजधरि एहिबातक खबरि गेल आ ओ आग्रहपूर्वक रेखाक संगे बिआह केलाह। संयोग एहन भेल जे बिआहक साले भरिक भितर हुनकर देहान्त भए गेलनि। महराज बहुत दुखी रहथि। हुनकर दुखकेँ देखैत किछुए दिनक बाद रानीक बिआह महराजसँ कए देल गेल। लोकसभ गाहे-बगाहे किछु-किछु बाजए मुदा महराजक सोझा आबक ककरो साहस नहि भेलैक।

दछिनबाइए टोलक खबासिनीक बेटी छलि कामिनी। देखबामे ओ ककरोसँ आगू छलि। रानी संगे ओ महराजक ओहिठाम रानीक सेवा हतु पठाओल गेलि से ओतहि रहि गेलि। जखन करवनो ओ महराजक सोझा अबैत तँ महराज ओकरा देखिते

रहि जैतथि। ईहो बिसरि जाथि जे रानीकेँ ई बात केहन लगतनि। क्रमशः महराजक नजरि ओकरापर गरैत गेल।

एकयुगक बाद रानी स्वयं हुनका लग आबि गेल छलीह। हरिक प्रसन्नताक तँ अन्ते नहि छल। मखनाक चेलासभ ढोल-नगारा, गाजा-बाजाक संगे एहि पुनर्मिलनक अवसरपर उत्सव मना रहल छल। मुदा मखना बहुत गंभीर छल। ओ बाजि उठल- “एखन ओ समय नहि आएल अछि। राजपुरापर सामान्य लोकक अधिकार बहालीक बादे सही मानेमे उत्सव मनाबक समय होएत। हमसभ ओही प्रयासमे लागि जाइ। अपन लक्ष्यसँ एमहर-ओमहर नहि होइ, अन्यथा समय हमरासभकेँ माफ नहि करत।"

सभ कहलक- “सत्य वचन।"❑

५१

रानीक एहि तरहेँ गंगामे डुबि जेबाक समाचार लुत्तीजकाँ पसरि गेल। राजपुरामे एहन शोक बहुत दिनक बाद भेल छल। गाम-गाममे एहीबातक चर्चा होइत छल। केओ किछु, केओ किछु कहैत रहल। सभकेँ ई छगुन्ता लगैक जे रानी एसगरे ओतए रहि गेलीह आ महराज किछु नहि कए सकलाह। मामिला तँ एतहि गड़बड़ लागि रहल छल। मुदा आब भइए की सकैत छल? रानीक लहास कतहु नहि भेटल। बहुत प्रयास कएल गेल। मलाहसभ महाजाल फेकि-फेकि कैक दिन धरि गंगामे लहासकेँ तकैत रहल, मुदा व्यर्थ। पता नहि रानी कतए बिला गेलीह। केओ-केओ कहए जे महराजक अन्याय सहब आब हुनको वशमे नहि रहि गेल तेँ ओ गंगामे समाहित भए गेलि।

रानीक श्राद्ध लए कए पंडित लोकनिमे बेस घमरथन भेल। केओ कहथि जे हुनका तँ साक्षात गंगा अपना शरणमे लए लेलखिन तखन हुनका श्राद्धक प्रयोजन की? ओ तँ मुक्त भए गेलीह। मुदा असली बात तँ मखने जनैत छल आ जनैत छल ओकर चेलासभ जे अखन हुनका मुक्त हेबाक तँ सबाले नहि छल। ओहो मखनाक संगे समस्त दुखी,संतप्त लोकक कल्याण बिना किन्नहुँ मुक्त नहि हेतीह। ताहि हेतु सभगोटा मखनाक पाछू संपूर्ण शक्तिसँ ठाढ़ छल चाहे ओ राजमंत्री होथि, जेलर बाबू होथि वा देबू-सभक लक्ष्य एक छल। “हमरासभकेँ स्वर्ग नहि चाही, मुक्ति नहि चाही, दुखी,संतप्त लोकक कल्याण चाही।”

"न त्वं कामये राज्यं न स्वर्गम् न पुनर्भवं। कामये दुखः तप्तानाम् प्राणिनाम् आर्तिनाशनम्।।

मखना तँ प्रतीकमात्र छल। इलाकाक सताओल गेल लोकसभक त्रान दिआबक एकटा मजगूत खुट्टा बनि गेल छल जाहिसँ अनकर कोनकथा, आब तँ स्वयं महराज हतप्रभ छलाह।

आखिर रानी छलीह। महराजक इज्जतिक प्रश्न छलनि। जीबैत जे सम्मान नहि दए सकलाह, जे कर्तव्यक पालन नहि कए सकलाह ताहि अपराधसँ मुक्तिबोध हेतु श्राद्ध जरूरी छल। संपूर्ण विधि-विधानसँ श्राद्ध कएल गेल। मुदा द्वादशाह दिन जे भेल से सभकेँ अचंभित कए देलक। लागल जेना रानी कतहुँसँ अएलीह आ महराजकेँ चिकरि कए कहलथि- “ई ढ़ोंग करबाक कोन काज? "

कैकगोटे ई बात स्वयं सुनलथि। सभ गुम पड़ि गेलाह। किछु गोटे तँ इएह-ले ओएह-ले भगला से घुरि नहि तकलाह। जेना-तेना श्राद्ध संपन्न भेल। महराजक हालति बहुत खराब छल। ओ कोनो हालतिमे ओहिठाम रहए हेतु तैयार नहि छलाह।

एहन राजमहलक कल्पना महराज स्वयं नहि केने छल हेताह। आब ओतए छले कथी? रनिबास भम्ह पड़ि रहल छल। भरि-भरि राति महराज टकटकी लगओने रहैत छलाह। कतबो बोतल ढ़ारथि ओ बेअसरि रहि जाइत छल। करवनो कए आब अपनो शङ्का होनि जे हम कथीक महराज छी? एकटा मरवना अछि जे सौंसे हिला कए राखि देने अछि। हुनकर खास-खास सिपहसलार सभ देह छोड़ि-छोड़ि ओकर नीति निर्धारक समितिमे सामिल भए गेल। महराजक हालति एतेक पातर भए गेल जे केओ राजमंत्री बनए हेतु तैयार नहि छल। कतेक दिनसँ ओ पद खाली छल। "मुदा कएल की जाए। भागि चली की? आ यदि से मरवनाकेँ पता चलि गेल तँ ओ छोड़त। तरवनो घेरबार करत आ बैज्जत होएब से फराके "मोने-मोने महराज सोचथि। रहि-रहि कए यमराजपर तामस होनि। “यदि ओ एना हाथ बारि नहि दितथि तँ मरवना एतेक आगू नहि बढ़ैत। आब तँ सभक प्राण ओकर हाथमे छैक। जरवन चाहए जकर प्राण झिकि लिअए। प्राण भयसँ सभ ओकर पक्षधर भए गेल। अपने राजमे हम एकसर भए गेलहुँ।” तरवने मोनमे होनि- “नहि महराज अहाँ सही नहि सोचि रहल छी। जे भेलैक अछि ताहि हेतु अहाँ स्वयं उत्तरदायी छी। खामखा अहाँ मरवनाक नाम लगा रहल छी। मरवना तँ मात्र एकटा प्रतिबिम्ब अछि। अहींक कएल अन्याय आइ अहाँक गलाक फाँस बनल अछि। "मुदा आब की करी?” -अपने मोनसँ पुछैत छथि? “आब की करब? नियतिकेँ स्वीकार करू। नहिओ करबै तँ की होएत? ओकरा हाथमे यमपाश छैक। जरवन चाहत प्राण झिकि लेत।" -आत्मालापमे लीन महराजक हालति देरवैत बनैत छल।

कहुना कए भोर भेल। महराजक लगमे आब छलहे के?रनिबास खाली भए गेल छल। राजमंत्री कहिआ कतए मरि गेलाह। राजबैद आ राजपंडित सेहो घसकबाक जोगार ताकि रहल छलाह। डुबैत नाओमे सवारी के करत? एहन हतप्रभ महराजकेँ के संग देत आ किएक?

तथापि महराजक बजओलापर राजपंडित आ राजबैद दुनूगोटे हनुमान चलीसा पढ़ैत महराज लग अएलाह। महराजकेँ प्रणाम केलाक बाद पुछलखिन- "अपने कोना छी"

"की रहब कपार? रातिभरि जागल छी। सोचि रहल छी जे किछु दिनक हेतु काशी चली। सुनैत छी जे काशी महादेवक त्रिशूलपर अछि। ओहिठाम मरनाक प्रकोप नहि चलत।"

"तकर कोन ठेकान महराज!" -राजपंडित बजलाह।

"अहाँसभ सठिआ गेल छी। काशी साक्षात महादेवक स्थान अछि। ओतए मरिओ जाएब तँ मुक्त भए जाएब। हमसभ ओतहि चली।"

"जे आज्ञा।" -कहि राजपंडित जान छोड़ओलाह।

साँझ पड़ि रहल छल। महराजक बनाओल देबालसभ जेना हुनकेपर हँसि रहल छल आ कहि रहल छल- “बाह रे महराज! एहिलेल एतेक पैघ-पैघ देबाल बनेबाक कोन काज छल?" महराज चुपचाप राजपंडित आ राजबैदक संगे काशी बिदा भए गेलाह।

महराज काशी जाए वला ट्रेनमे बैसले छलाह कि ऊपरसँ अबाज भेल- “एना भगलासँ काज नहि चलतह। भागि कए जेबह

कतए? पहिने लोकसभक जथा-पातसभ जे हरण केने छहक से वापस करहक। तकरबादे किछु सोचल जेतैक। यदि से नहि करबह तँ कतहु जेबह हम ओतहि भेटि जेबह।"

महराज ई सभ सुनि-सुनि जेना बेहोस होइत गेलाह। काशीक टीसन आबि गेल छल। महराजकेँ राजबैद बेर-बेर जगाबथि मुदा हुनका मुँहे किछु अबाज नहि निकलि रहल छल। ओ अपन सीटपर पड़ल छलाह। हुनका संगे चलनिहार दुनूगोटे खूब जोर-जोरसँ हनुमान चालीसा पढ़ए लगलाह।

"ई महराज अपने तँ जेबे करत हमरोसभकेँ लए जाएत" - राजबैद राजपंडितक कानमे कहलाह।

"कहुना हिनका ट्रेनसँ तँ उतारू। फेर देखल जेतैक।" राजपंडित बजलाह। दुनू गोटे एकटा कुलीकेँ बजओलथि। कहुना कए हुनका ट्रेनसँ उतारल गेल।❑

५२

नंदनगरमे चंपाक संग हमर समय बहुत नीक कटैत छल। दिन-रातिक किछु पता नहि चलए। कालेज करी आ तकर बाद ठोकले दुनूगोटे कतहु एकांत ताकि ली। ई क्रम कतेको दिन चलैत रहल। ओना हमरसभक डेरा फराक-फराक छल मुदा नामेकेँ। कैक राति करवन भोर भेल सेहो पता नहि चलैत छल। बाहर जौं हल्ला नहि होमए लगैत तँ हमसभ ओहिना रहि जैतहुँ। अखबार, दूध,

काजबाली सभक पाँति लागि जाइत छल। ओहोसभ अभ्यस्त भए गेल छल।

कैक बेर हम चंपा के देखैत रहि जाइत छलहुँ। पता नहि एतेक रास सौंदर्य एकहिठाम कोना एकट्ठा भए गेल। जेहने देखैत, तेहने बजैत, ततबे सुयोग्य। लगैत छल जेना भगवान बहुत फुर्सतिसँ ओकर निर्माण केने छलाह। मुदा एहन नीक लोक संगे कतेक तरहक झंझटि भेल। एखनधरि एकरा अपन पिताक जानकारी नहि छैक। ताहि प्रश्नपर ओकर मौन के तोड़त?

एकदिन हम दुनूगोटे ओसारापर बैसल चाह पीबि रहल छलहुँ कि दीपांक पहुँचि गेलाह। बहुत दिन बाद भेंट भए रहल छल। बहुत नीक लागल। कहए लगलाह-

"बहुत दिनसँ सोचैत रही जे अहाँसभसँ भेंट करी मुदा अस्पतालक झंझटि बुझले अछि, ओहो आइ काल्हि आपत्तिकालीन विभागमे दए देने अछि। किछु-ने-किछु झझटि होइते रहैत छैक।"

"हमहुँसभ नहि जा सकलहुँ। असलमे कालेजक समय कालेजमे बीति जाइत अछि आ तकर बाद गाम-घरक लोक केओ-ने-केओ अबिते रहैत छथि। सभकेँ हमरसभक डेराक पता बूझल छैक।"

"नीके छैक, एही बहन्ने अपन लोकसभसँ भेंट होइत रहैत अछि।"

"से तँ ठीके बात छैक मुदा कैक बेर मोन खिन्नो भए जाइत अछि।”

"से की?"

"की कहू? गाम घरक चकल्लस चलिते रहैत छैक। सुनलिऐक जे महराज काशी भागि गेलाह। राजपुरामे आइ-काल्हि भम्ह पड़ि रहल अछि। महराजक संपदासभक लूट भए रहल छैक। केओ देखनाहर नहि। कैक बेर किछुगोटे महराजकेँ वापस अनबाक प्रयास केलाह मुदा महराज अड़ि गेल छथि जे आब ओ ओतहि प्राणत्याग करताह। "

"संगमे के छनि?"

"एहन समयमे तँ मनुक्खक अपन छाँहो संग नहि दैत छैक। तथापि राजबैद आ राजपंडित हुनकर संगे ओतए गेल रहथिन मुदा आबो ओसभ ओतहि छथि कि नहि से नहि बूझल अछि।"

"एकरे कहैत छैक समय। एक समय छल जे लोकसभ महराजक लगीचमे जेबाक हेतु कोन-कोन व्योंत नहि करैत छल। ओएह महराज छथि मुदा केओ सटए नहि चाहैत अछि।"

"सभकेँ मरखनाक डर होइत छैक। यदि केओ एमहर-ओमहर केलाह तँ यमपाश हिलाबए लगैत अछि। ओकरा आगू सभ फेल अछि।"

दीपांकसँ गप्प-सप्प भइए रहल छल कि कालूक फोन आबि गेल। पुछलक- “गाम कहिआ अएबहक?

"किएक? हमरासभक गाममे कोन पुछारी? ओतए तँ एक सँ एक महावली छथि।"

"हुनकर वशक बात नहि छनि। बुधिगर लोक चाही। महराज

तँ भागि गेल मुदा ओकर संपदापर गाम-गाम पसरल जमींदारसभ कबजा केने जा रहल अछि। असली आदमीकेँ ओकर हक नहि भेटि रहल अछि।"

“ई तँ आओर गड़बड़ भेल।"

"तेँ ने कहि रहल छिअह जे गाम आबह।"

“ठीक छै। "फोन कटि गेल। ओकरा गछि तँ लेलिऐक मुदा हम गाम जा कए की कए लेबैक? ककरो नीकसँ चिन्हितो नहि छिऐक। दीपांक आ चंपा दुनूक इच्छा भेलैक जे गाम जाइ नहि जाइ हमरा लोकनि एक बेर राजपुरा तँ चलबे करी। अपने आँखिए देखिऐक जे की हाल छैक। अस्तु, हमसभ सँझुका ट्रेन पकड़ि कए राजपुरा बिदा भेलहुँ। यात्री ट्रेन छलैक। सभटीसनपर रुकैत चलैत छलैक। ऊपरसँ देरीसे भए गेल रहैक। बहुत मोसकिलसँ ओकरा रस्ता भेटैत छलैक।

जे ट्रेनकेँ भोरे पहुँचबाक रहैक से साँझ कए देलक। राजपुरा पहुँचैत-पहुँचैत हम तीनूगोटे थाकि गेल रही। तथापि हमसभ साहस कए आगू बढ़लहुँ। कनिके आगू बढ़ैत छी तँ देखैत छी जे लोकसभ बड़का देबालसभकेँ क्रेन लगा-लगाक ढ़ाहि रहल अछि। महलसभमे गामक लोकसभ घुमि रहल अछि। महराजी कागज-पतरसभकेँ आगिमे झोंकि देल गेल अछि। सभतरि विध्वंश भए रहल छल। एहन हालतिमे हमसभ की कए सकब?” -हम बजलहुँ।

"आब किछु करक नहि छैक। सभटा अपने भए रहल छैक।” -कालू बाजल। गाम-गामक लोकसभ करमान लागि गेल छल। ऊपरसँ मरखना जयकारा दए रहल छलैक। ओकर नीति

निर्धारक समितिक लोकसभ-हरि, रेखा, रानी, देबू सभ हाथ हिला-हिला कए जनता जनार्दनक मनोवल बढ़ा रहल छल। लगैत छल जेना उजाहि उठि गेल अछि।

इलाकाक लोकसभ गोलबंद भए गेलाह। राजचौकपर सभ एकत्र भए एकस्वरमे घोषणा केलनि जे काल्हि भोरे आठ बजे उच्चैठ भगवतीक प्रांगणमे सभ केओ उपस्थित रहताह। ओतहि भविष्यक कार्यक्रमक घोषणा होएत।

भोरे आठ बजैत-बजैत कालीस्थान सजि गेल छल। लाल-लाल अढ़ूलक फूलसँ माताक श्रृङ्गार कएल गेल। मल्हुआ अपन संगीसभक संगे रसनचौकी बजा रहल छल। गाम-गामसँ लोकसभ जुटल जा रहल छल। सभसँ पहिने “जय जय भैरवि असुर भयाविनी”गाओल गेल। तकर बाद कालू माइक पकड़लक आ सभ पुरखासभकेँ गोहरओलक। मखनाक नाम लैत ओकर आँखि नोरसँ भरि गेलैक। लोकसभ सेहो नोर पोछि रहल छलाह। अत्यंत भावुक क्षण छल। कालू बजलाह –

“हमरा लोकनिक संघर्षक सुखद अंत भेल। आइसँ राजपुराक मालिक एहिठामक लोकसभ छथि। जकर जे जथा-पात जहिआ कहिओ नीलाम भेल छल से ओकरा वापस भेल। आब ने केओ महराज ने केओ महरानी। हमसभ अपन भाग्यक स्वयं निर्माता छी। अजुका दिनसँ समस्त राज संपदाक उपयोग जन कल्याण हेतु कएल जाएत।"

सभ सहर्ष समर्थन केलक- चिकरि उठल- “एवमस्तु।"

इलाकाक जमींदार सभ आगू आबि कए स्वयं घोषणा केलाह- “हम सभ जनताक संपत्ति ओकरा वापस करैत छी। आइसँ

जहिना अहाँ तहिना हम।"

कामिनी मरैतकाल कहि गेलैक जे हम चंपाक संग बिआह कए ली। चंपा कैक बेर एहि बातक चर्च करैत रहैत छलि। हम चंपाकेँ आश्वासन देने रहिआनि जे ई सभ होइते हम हुनकासंग बिआह करब। से समय आबि गेल छल। महराजक अंत भए गेल छल। जनताकेँ अपन हक वापस भेटि गेल छल। गाम-घरमे सभ किछु सरिआ गेल छल। हम चंपाकेँ कहलिऐक-

"आब हमरोसभकेँ बिआह कए लेबाक चाही।"

से सुनिते चंपाक प्रसन्नताक अंत नहि छल। ओ बाजलि- “शुभस्य शीघ्रम्।"

मखना अपन दायित्वसँ मुक्त भए गेल छल। सोचलक जे जाइत-जाइत गंगा स्नान कए ली। ओ अपन नीति निर्धारक समितिकसंग गामसँ बिदा भए सिमरिआ पहुँचल। सभकेओ गंगा स्नान केलाह। चारूकात पुष्पवर्षा भए रहल छल। मखना सहित समस्त पूर्वजलोकनि मुक्त भए गेलाह।

मखना अपन यमपाश गंगामे फेकि देलक। “आब एकर कोन काज?" -मखना बाजल। महराजकेँ हाथ-पैर बान्हि कए यमदूतसभ हाजतिमे रखने छल। से देखि यमराज मोंछपर हाथ दैत अपन रनिबास दिस बढ़ि गेलाह। ओहिठाम रेखा हुनक प्रसन्नतापूर्वक स्वागत केलीह।

रसनचौकी बजबैत जखन मल्हुआ भूतहागाछी लगसँ गुजरल तँ ओहिठामक गाछ-पातसभ खिलखिल हँसैत छल। ❑❑

हमर पोथीसभक मुद्रित संस्करण निम्नलिखित वेवलिंकपर क्लिक कए आनलाइन कीनल जा सकैत अछि:

भोरसँ साँझ धरि(आत्मकथा)(पेपरबैक)
https://pothi.com/pothi/node/195476.

भोरसँ साँझ धरि (सजिल्द)

https://pothi.com/pothi/node/209754.

प्रसंगवश(निवंध संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/195527.
स्वर्ग एतहि अछि(यात्रा प्रसंग)
https://pothi.com/pothi/node/195487.
फसाद(कथा संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/195510.
नमस्तस्यै(मैथिली उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/195444.

विविध प्रसंग(निवंध संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/195633.

महराज (मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/195795
लजकोटर (मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/196264.

सीमाक ओहि पार(मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/197004.

समाधान (निवंध संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/197754.

मातृभूमि(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/198699.

स्वप्नलोक(उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/199847.

शंखनाद(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/200903.

इएह थिक जीवन(संस्मरण)

https://pothi.com/pothi/node/202488.

ढहैत देबाल(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/203720.

पाथेय

https://pothi.com/pothi/node/205009.

हम आबि रहल छी(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/206093.

प्रलयक परात(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/207234.

बीति गेल समय(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/208351.

प्रतिबिम्ब(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/208632.

बदलि रहल अछि सभकिछु(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/209281.

राष्ट्र मंदिर(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/210181.

संयोग(कथा संग्रह)

https://rb.gy/edit6k.

नाचि रहल छलि वसुधा(उपन्यास)

https://bit.ly/3The07Y

The Lost House (Collection of short stories)

https://pothi.com/pothi/node/195843.
Life is an Art (Motivational essays)

https://pothi.com/pothi/node/196385

न्याय की गुहार (हिन्दी उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/198163.

www. amazon.com/www.flipkart.com/ पर सेहो ई पोथीसभ आनलाइन कीनल जा सकैत अछि।